श्री सद्गुरुभ्योनमः

॥ रत्नसमुच्चय ॥

॥ रायविलाश ॥

संग्रहकर्त्ता श्रीसाधुजीमहाराज,

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी ऋद्धिसारजीगणिः

छापके प्रगट कर्त्ता.

शिष्य पं। क्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंद

(इसका सर्व हक इन तीनोंका है)

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा

बीकानेर बडा उपासरे पास पं। क्षेमचंद मुनिः

चि। पेमचंद अमरचंद विद्याशाला.

मुंबई विचले भोईवाडे श्रीचिंतामणजीके

मंदिर मेरना पास

संवत् १९६० मिति आसो सुदी ५-सने १९०१

ज्ञान सुधाकर प्रेस-मुंबई.

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकलचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रजवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोजद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंजूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीथूलजद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी जये सो वीरजगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बमे प्रजावीक विद्यासिद्ध जये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतन सूरिः जये सो एक तो निजशिष्य जर दुसरा साधुजके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योको आचार्यपद दिया तबसें ८४ गच्छ जया, यह ८४ गच्छोंके आचार्य बमे प्रजावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः जये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः जये सो अणहलपुरपट्टणमें डुर्लजराजाकी सजामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर बिरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके जलजलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बमे कगेर इस वास्ते खरतर बिरुद पाया,

कोटिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदी क्षित शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बादसाह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ उर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेव सूरिः भये, तत्पट्टे ४३ में अगारे हजार वागडीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोनें चितोड उर उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साध कर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा ढाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनों का दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप सें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण वदि अमावशकों स्वर्गवास भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रगट होय प्रथम दरशण दिया, तिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्ति स्थूंन स्थापन कर दादाजीके नामसें वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात ज्ञया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी ज्ञये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि ज्ञये, जिनोंने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उद्घोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको गंटा गछकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समचानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोंके पट्ट ६३ में श्रीजिनराजसूरिः इनोंके समयमें आचार्य गछ सागरचंद्रसूरिःसें ज्ञया, इनोंके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोंके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गछ ज्ञया, इनोंके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोंके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तरपट्टे ६७ में श्रीजिनज्ञक्तिसूरजी ज्ञये, इनोंके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाज्ञसूरजी ज्ञये, इनोंके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी ज्ञये, इनोंके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी ज्ञये, इनोंके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौज्ञाग्यसूरिजी ज्ञये, इनोंके समयमें महेंद्रसूरिजीसें मंम्मोवरागछ ज्ञया, इनोंके ७२ में पट्ट श्रीजिनहंससूरिःजी ज्ञये, इनोंके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः ज्ञये, इनोंके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्ये ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । ज्ञ । श्रीजिनपद्मसूरिःजीके वखतमें साधुलोक आचार्यमहाराजके पासमें बहोत थोमे रहे उर बमे२ ज्ञानवंत क्रियावंतोको उर२ जगे चतु-

मांस करणे भेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो भी गोचरी थंमिल भूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलभूमीका हाथ धुलाणेकूं उठे, अपणे विद्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बमा अपरबलीपणा हे सो गछमें साधू वहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी केसे२ पंमित विद्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोमे हें, तब उपाध्यायजीने कहा महाराज यह वृहगछ खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी अभी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजांयगें, एसा कह दादासाहिबका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरूके ध्यानमें लीन भये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह करणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें शांतरशका भरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोनें विवाहकी वांछा छोम दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाम नामहीसें प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाम विस्तारभावकूं प्राप्त भई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरसेमें सीवाणची देशमें भई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बमे२ विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ । श्रीक्षेममाणिकजीगणिः तत् शिष्य । पंमित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्मशीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजिगणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुद्धिसारगणिजित्संगृहीतः रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तच्छिष्य पं । क्षमासौभाग्यमुनिः चि । पेमचंद चि । अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया । श्रीबीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.
११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी झावक.
११ रु । श्रीसदारामजी गोलछा.
११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी साम.
११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलछा.
१० रु । श्रीराजरूपजी वेवचंदजी नाहटा.
७ रु । श्रीआसकरणजी वरढिया.
११ रु । श्रीवादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेड़.
२५ रु । श्रीवालचंद कनीराम आजम सुमईवाला.
३ रु । श्रीवगराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंमित तत्वज्ञानी वण जायगें, जैनउपदेशक वधेगें, और जो नहीं ए॰

ढते हैं उनोंकों इसतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोंके वश नरकके पात्र हुए धर्मकूं लजाते हे, क्यों को दशवोकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा कहते हैं हमारे भावे विगमे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगें न अन्नवस्त्र देंगें, देंगेंतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंद्रताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्मसें पूनमचंद्रता करसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भृष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें विगाड़का सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड़ विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा. प्रश्न। हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रक्खे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे. सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हैं, मंदिरोमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वमेरोनें तुमारे वमेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसें वमा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन सुणाणे पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोंकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकको ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रऋषभनाराच संहणन विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणे योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकमीका करतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला वणाणेमें इतना फायदा हे–मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे वाद आपसेंही छोमदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इसभव परभव संबंधी अनेक कार्योका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म वांधता हे, थोमेमें विचारणा ॥ प्रश्न–जिनोंकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरूके कमाये धनसें पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर–जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोंकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

धर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते है संतान वैसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करै करावै अनुमोदै उसकूं पाप लगे ॥

बीकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ०। श्रीरामलालजीगणिः पं। क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणक्य स्वरोदय भाषा	१	७
करुणाबत्तीसी। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ सिद्धमूर्त्ति०	०	८
सर्व पूजामहोदधी खरतरगच्छ तपगच्छकी	४	७
श्रावकव्यवहारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत उर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, बेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्ष्यके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाहही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अवे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोग्य उर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट महा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने उर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं है उहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधूउंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोसें वैयावच्च कराणी नही, व्रती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहीसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा उर निंद्या करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पडते समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयत पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जम इन पुरुषोके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी वठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे ओर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो गंने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें भाव करके पंचम गुणगणी हे केइयक चतुर्थ गुणागणी, इसी तरे साधुउंके मुजवही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणगणा समजणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ वलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी वहुलता आजकल साधूउंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणश्वालोंतें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपेके भी देखणेमें आता हे, जव कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केलें सभेगा बलीहारी उनईंकी हे जिनोंनें कषायकी चोकमी त्यागी हे. किंवहुना ॥ इति ॥

॥ अव जतीलोकोंका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपुत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् वारे वर्ष तकका उपरांत उमरवाला पढता नही ओर वहोत गेटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालगेट करणेकूं तव वहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमेसें वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वभा-

वही होता हे सो गुणमें अगुण निकालते हे, भर्तृहर लिखता हे-सूरवीरकुं निर्दई कहते हे गमखाणेवालेकूं डरोकड केते हे ब्रह्म-चारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हे, खेर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवस्य कर्त्तव्य सुणाना नित्त फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि षट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती उंधा झोला चेहर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके बाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादत्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य हे, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूउंको पादत्राण पहरणेकी आज्ञा हे, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंथणा तिरपणीके डोरे बणाणे माला बणाणी ओकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो भी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, भक्ती शक्ते सचित्त त्यागणा, राजदंड लोकभंड एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोंकें संगतसे लंछन लगता हे, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब वोसराके परभव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलभबोधी श्रावकोंके इकीस गुण सिध्धंतोमें लिखा हे, इस गुणोकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधूउकी प्रतिपाल क-रणेंसें श्रावकोंकुं मातापिता तुल्य भगवंतनें कहा हे, बालक कसूर भी करे तोभी मातापिता अपणे शंतानपर अंतरंगसे कभी द्वेष नही करते हें, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, भेषधारीसाधूउंमें कोइ तरेकी एब दीखपडे तो एकांतमें हितशिक्षा देके हटाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें धम-काणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोकी विचित्र-ता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावे, एसी एब कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल भाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनध-र्मकूं लजावे एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंभाल जरूर करे, विनासंभाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजवीजें बिगड रही हे, भंडार लोक खागये हे, ओती शके इस वातका खयाल दूरतरेसें करें, अ-पणा लडका लडकीयोकूं संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती कर-णेकूं पडिकमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशा-स्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर बडे२ अक-लवंतोकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजा-दसें जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको भी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म लडकों-कूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिखलाणा; क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेंसें पीछे उस-

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता हे, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा ओर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हें इस वजें वेलासक पढे ओर पढावे, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती ओर तारीफ जिसने समझा हे वोही जाणता हे ओर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अन्नी बहोत नवभ्रमण करणा बाकी रहा हे उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ हे मानेन्नी तो कोन सच्चा ओर कोण झूठा? (उत्तर) हे नव्य हमने पेस्तरही लिखा हे न्याय जो जैनका सात नंगरूप हे उसकूं समझा ओर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. (प्रश्न) इतनी बुद्धि ओर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हें सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय? (उत्तर) जो इतना नही समझो तो जो ऋषन्नदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे वीचर में अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये हे, षट्शास्त्री चौदपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार नगवान नद्रबाहुस्वामी उमास्वाती नाष्यकार जिनन्नद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर वडा उपगार रत्नप्रन्नसूरि ओर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केइयक पापारंन्न की वातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई हे, जैसें मद्यका पोणा ओर मांसादि अन्नक्ष खाणा लेकिन् आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुधीयोनें अधोगतीकी सडक बां-

घणे पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरभाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछतावा होगा थोभे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन हगुण हे एसेंह मांसमें देखो जैनतत्वादर्श भाषाग्रंथ, यही चीज अछी होती तो तुमारे वगेरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों छोमते उर मुसलमीनोकों भी धर्मकायदेसें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पंमित तो दुस्मन भी अछा होता है मूर्ख हितकारी भी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाकारण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे— दुहा॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास॥ जणनी जणके क्या किया, भार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपभोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता भोग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य बोलाउरूप हे, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिक साधुउंकों देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पुठा वगेरे जजमणें दान करे, साधर्मी तथा जैनपंमितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र भोजनादिक यथायोग्य दान करे, तीर्थंकर भगवान भी संवत्सरी दान देते हें, दानधर्म मुख्य हे भगवतीजीमें ग्रहस्थका अभंगद्वार कहा हे, भगवतीसूत्रमें तीन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, कलागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभंगी लिखते हें ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्वे-विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्राये जैनमंदिर भोजगही पूजते हें उनोंमें इस वखत प्रायें मिथ्यात्वी वहोत सम्यक्ती वहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हें सो सब जैन हें जिनोंको अन्य देशमें गंधर्व कहते हें. (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंनें जैनधर्म कबसें गेरा हे? (उत्तर) पहले श्रीऋषभदेवजीनें भोगवंश स्थापन करके अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्ययशनें भोगवंशीयोंको पूज्य जाण जिनमं-दिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवंशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते; इनोंको अनेक तरेसें पर्व महोछव पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये; जब २४ से वर्ष पहले उसीयामें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राज-पूतोंके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-मार वगेरोंनें भक्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-पणा साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेंमें रामानुज माधवाचारी वगेरोंनें विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जेमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजीने लाखों उसवाल फेर वणायें, तब राजवीयोंनें गुरूसें अरज की इस दयाधर्मके प्रभावसें निर्द्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नही राज्य तो सदा थिर रेहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरूने कहा जो जिनमंदिरोंकी भक्ती और जंतीगुरुकी सेवा अभक्ष त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा और सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाह भया, राजाउनें अपणें भाइ स्वजनवर्गी उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवाडोंमें उसवालोंका राज्याधिकार वणा तबसें उसवालोंनें महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोका पूजारीपणा भी भोजकोंकों सोंपा वह भोगवंशी फेर पीछे धीरे२ मिथ्यात्वी वणबेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरे की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण भोजकोंकों कर्म कर करके मानणे लगे पूज्यभाव उठगया; जो कभी भोजकलोक एसा समझतें होंगें की हम तो अबलसेंही शैव वैष्णव थे (उत्तर) यह समझकी भूल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहुलायतमें प्रजा जैन रही, बोधोंके अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अमलमें सांख्य, इत्यादि वातें तवारीकोंसें भी पाईजाती है लेकिन् जैनधर्म और मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना भोजकोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पंमारादिक परमजैन तुमारा होंगा और बहुमान पुनवंश पर कभी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोंका जोर उसवाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा उर राजा वगेरोंकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेही बहोतसें उसवंशी भी खुसामदीसे दुसरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन् अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट भी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसकी भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगभक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नहो रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हुक्ममें हरकत नालणा नही, देव उर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सइकर्मों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सइकर्मों रुपे श्रावक देते हें वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें वजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश मेंने लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नहो ॥

इस ग्रंथके छापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते-

हें, उनोंका में सदा आन्नार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिक्रियत ग्रंथ, संतियद्यपिदुर्जना ॥ नहिदस्युन्नयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोन्नी करताहूं यद्यपि दुरजन बहोत हे चोरोके मरसें लोक कंगाल नहीं . बण वेठते तेसे १ मेनें अपने हाथसे लिख२कर मुंबइ न्नेजकर शिष्यवर्गोके कहणेसें इसमें संग्रह मेंने अनेक ग्रंथोसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअबीरचंद्रजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषन्नदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे बणा जो। राम। उनोके मध्यवर्त्ती सब न्नगवंतोके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिन्नव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, न्नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोन्नयं नोमारीनचविग्रहः, प्रन्नृतयः प्रीत्याप्रणत्पुच्चकैः ॥ यस्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसठ योगण पाय लगाई ॥ माइण साइण व्यंतर खेचर, न्नूतप्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तमक कमक्क न्नटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई ॥ कहे अमसीह संघे कुण लीह, दीये जिनदत्तकी एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ राजै थुंन्न गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, जगत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही न्नाव आय, पूजै लख्ख लोक पाय ॥ प्यासनकूं रानमांझि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु दाट,

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कुशल देव देहरे, कुशलें धन राजदुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ भणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घर२ गाईजै ॥ जिन-चंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि प्राय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वसो संसार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लछि घर कुशले आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल घन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोरां थट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सद्गुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके
प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ थुई संग्रह ॥

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ छुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ धन १० ॥

——*——

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥

॥ मंगलाचरण ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर भूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सीस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें१ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥
एसो पसाय कियो गुरु [illegible] भ्रमसो पदपंकज लीनो ॥१॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वतो मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे सोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । ळ । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ पृ नृ वृ मृ शृ सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र घ्र ज्र त्र द्र प्र ब्र भ्र म्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न म्न स्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म घ्म च्म ण्म द्म न्म श्म ष्म स्म

८ । कैं खैं गैं घैं ॥ क्क क्ख ग्ग ग्घ ङ् । च्च छ ज्ज ज्झ ञ्ञ

ट ठ ड्ड ढ ण त्त त्थ त्र द्द द्ध न्न ॥ प्प प्फ ब्ब भ्प म्म य्य र ल्ल व श्श ष्व स्स ॥ ञ्य त्स्न्य ष्ट्र ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १०००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृह्मस्था । ण्विंद्राह्वास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृद्धल्युश्रेष्टात्म । अम्यास्तेह्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंम्हितेच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये वको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताम्रयेत् ॥
प्राप्ते तु षोम्हशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥७ ॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्ववांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोवंधु । नं च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंवलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानम्भुजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्ठवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्ज्जोनामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अःइतिविसर्ज्जनीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपध्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरणसमाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अर्हतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं। कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पंचपरमेष्टिपदहै सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकूं मंगलकरो. केसेकहै पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोंकों हणे सो अरिहंत कहीजे. फेर श्री अरिहंत केसेहै, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहै फेर अरि-
हंत केसेकहै भगवंतहैं भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत भगवंत केसेंकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोसें विराजमानहे सो बारे गुण एसेहें प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग ओर पसीना ओर मैलरहित बरा खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही ओर मांस गऊके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे ओर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । बींट नीचा रहे पांखडी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ भाषामें यथावस्थित समझे एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुसासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोलता रहे ४ ॥ आसनश्च ५ भगवंतके बेठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिस्सें भव्यजीव भगवानके तरफ देखसके भगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे ओर तीन दिसामें भगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसें च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेभये दिखाइदेवे ६ ॥ दुंदुभी ७ आकाशमें देव ते देवदुंदुभीवाजित्र वजावे ७ ॥ छातपत्रं ८ भगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन छत्र रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे एसे अरिहंत देवाधिदेव चोतीस अतिशय विराजमान पेंतीस वचनगुण सोभित एक हजार आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलोक्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें केवलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका भाव देखतेभये पृथ्वीमंडलपर भव्यजीवोंके मनोरथ पूरणार्थके विचरतेहें एसे अनंत गुणसें विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥ (सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप अग्निसें भस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तभये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक भयादिकसें रहित चवदे राजलोकमें सब जीवोके मनोगतभाव एकसमयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेभये एसे श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्याजिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज छत्तीसगुणोंसें विराजमान मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीवप्रतिबोधक क्षमागुणभंडार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिनशासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसिद्धांतसुपाठका) चोथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नमस्कार हुउ केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसें विराजमांन एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्टिपदमें सरव साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्तेगुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थे ॥

॥ अथत्रिकुंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	२ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतीजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी	४ श्रीअभिनंदनजी
५ श्रीसमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभुजी

७	श्रीसुपार्श्वनाथजी	८	श्रीचंद्राप्रभूजी
९	श्रीसुविधनाथजी	१०	श्रीशीतलनाथजी
११	श्रीश्रेयांसजी	१२	श्रीवासुपूज्यजी
१३	श्रीविमलनाथजी	१४	श्रीअनंतनाथजी
१५	श्रीधर्मनाथजी	१६	श्रीशांतिनाथजी
१७	श्रीकुंथुनाथजी	१८	श्रीअरनाथजी
१९	श्रीमल्लिनाथजी	२०	श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१	श्रीनमिनाथजी	२२	श्रीनेमनाथजी
२३	श्रीपार्श्वनाथजी	२४	श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१	श्रीपद्मनाभजी	२	श्रीसूरदेवजी
३	श्रीसुपार्श्वजी	४	श्रीस्वयंप्रभुजी
५	श्रीसर्व्वानुभूतिजी	६	श्रीदेवश्रुतजी
७	श्रीउदयप्रभुजी	८	श्रीपेढालजी
९	श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१०	श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११	श्रीसूव्रतनाथजी	१२	श्रीअममनाथजी
१३	श्रीनिष्कषायदेवजी	१४	श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५	श्रीनिर्ममनाथजी	१६	श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७	श्रीसमाधिनाथजी	१८	श्रीसंवरनाथजी
१९	श्रीयसोधरजी	२०	श्रीविजयनाथजी
२१	श्रीमल्लिप्रभूजी	२२	श्रीदेवप्रभूजी
२३	श्रीअनन्तप्रभूजी	२४	श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१	श्रीसिमंधरजी	२	श्रीयुगमंधरजी
३	श्रीबाहूजी	४	श्रीसुबाहूजी
५	श्रीसुजातजी	६	श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रन्नजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रवाहजी	१४ श्रीज्रुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रन्नजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहान्नद्रजी
१ए श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषन्नाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव न्नवंति ॥

॥ अथ सोले सतोनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुन्नद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रन्नावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐपरमेष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवझायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछैं गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बेठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अभुठि उमि कहे पीछें खमासमण देकें इछाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इछं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं डीलाम्हे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिच्छादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे हाथे परिहरुं ॥

॥ न्नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्ण ॥५॥

॥ पीछें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह न्नगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा० ॥ न्न० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नवकार गणी इच्छाकारेण संदिस्सह न्नगवन् पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि न्नंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ करेमि न्नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि ॥ जाव नयमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स ऋंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण दे कें इछाकारेण संदिस्सह ऋगवन् इरियावहियं पमिक्कमामि॥ गुरु कहे पमिक्कमह. पीछें इछं कही ॥ इछामि पमिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह ऋगवन् ॥ इरियावहियं पमिक्कमामि ॥ इछं इछामि पमिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कम संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अनिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिछामि डुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायछित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्र उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंन्नाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं ऋमलिए पित्तमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अन्नग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं ऋगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं ऊाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछैं णमो अरिहंताणं कहे कैं काउस्सग्ग पारकैं मुखसैं प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अभिथुआ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थय रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सवलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछैं खमासमण देइ इछा० ॥ भगवन् बैसणो संदि स्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछैं इछं कहे कैं वली खमा-समण दे कर ॥ इछा० ॥ भगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इछं कहे कैं खमासमण दे कर इछा० ॥ भ० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछैं इछं कहे के वली खमासमण दे कर इछा० ॥ भग० ॥ सिझाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कैं इछा खडे हो कर आठ नवकार कह कर सझाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कैं इछा० ॥ भ० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछैं इछं कह कर खमासमण दे कर इछा०॥ ० ॥ पांगरणो पडिग्गाउं? गुरु कहे पडिग्गाएह ॥ पीछैं इछं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिखाय करेह, एसें कहे ॥ इति प्राजातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जिंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ जरुअछेह मुणिसुव्वय, महुरिपास कुह दुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तित्थयर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदु जिण सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लप्नई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नय साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स दुई, थुणिज्जइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा वप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउसय गयासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्सा, चउसय अठासिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिः

ञ्जगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अजयदयाणं, चरकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मवाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ जयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुक्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावओ भयवं॥ भवनिव्वेओ मग्गा, णुसारिआ इट्ठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाओ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा, आभव मखंडा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछैं खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पाय छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीछैं इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछैं णमो अरिहंताणं कह कर काउस्सग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणां ठावी गोडालीयें बैठ कें मस्तक नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहके दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ डुचिंतिअ डुप्नासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछैं नमुत्थुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सामाइयं सावद्यं जोगं पच्चक्कामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछैं इच्छामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगमि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ डुच्चाउ ॥ दुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअवो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुबयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछैं तस्सउत्तरी० ॥ अन्नउ उससिएणं कह कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछें अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी० ॥ सुयस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढे, धायइसंडे अ जंबुदीवेअ ॥ भरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सब्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स भ गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उर्जित सेल सिहरे,

दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २१॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नठ० ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बेठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वांदणां निमितें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उन्ना हुआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर नूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्ज्जन कर कें उक्कम बेठ के मावे हाथमें मुहपत्ती ले कें मावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निल्लाम पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य नागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो ने किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछें फेर ॥ जत्ता ने ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खमा होकें पीछें पगसें नूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो ने किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुन्नेण ने, दिवसो

वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पम्क्किमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणडुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोत्राए, सव्वकालिआए, सव मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पम्क्किमामि ॥ निंदामि-गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइअं वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीअं वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवच्छरीयेसंवच्छरीअं वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ ३५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें जलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिच्छा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि दुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिछा मि दुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछैं सव्वस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछैं इछं तस्स मिछामि दुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोडा ऊंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछैं इछं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इछामि पडिक्क मिउं जो मे राइउ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछें खमा दे के अप्पुठि उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इछामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिंछा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयारिअमप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि; थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरइउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसं गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मसल जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे०॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणट्ठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ दुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पओगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुलपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिरिकउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ नरुव नारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि वहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, नयसंन्नरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अप्भुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, नवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥१९॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वांदणां देकर अवग्रहमांहिथकाज कहे ॥ इच्छा-का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिंतर ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडाली बेठ के, बे बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अब्भुट्ठिओ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अभिंतर देव-सिअं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर भासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुहु-मंवा बायरं वा ॥ तुब्भे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि दुक्कडं कहे. पीछें बे वांदणां देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आय-रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मो निहिअ चित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही वे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वखारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे मांद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमथु-रापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशापुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री-मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंडले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-लयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३१ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सद्दियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तभावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलभरलोभालीढलोला-लिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलभविकारागार

विघ्नित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ न्नावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताऩ्निनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूरान्निरामं, जीवाहिंसा-विरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला. ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-न्नूमीनिवासे ॥ गयासंन्नारसारे वरकमलकरे तारहारान्निरामे, वाणीसंदोहदेहे न्नवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा न्नणी, शक्रस्तव कहे. पीछें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नचू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरूपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण जाणणां ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेईआणं वंदण-

त्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखधाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्तें ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्खरवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारें, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षट्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमो-ऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमा-समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा ॥ अठारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछे स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन वखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह नगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, नवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तिच्छं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ उर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुन्यः ॥ तक कहि के सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरु, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, नांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्कीसरु, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ त्ररण शरण मोहि आशरो, नव नव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण हो तुम्हें, दूर हरो नव उःक्ख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुक्ख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछे जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थ० कहि

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कहो ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरूणं पुसासोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिछरायं ॥ १ ॥ इम होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरूण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंरूण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिछं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमो-ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचल-जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विम-लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥

अढारे त्र्यासी मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कुमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषभदेव पुंमरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणें अंग पमिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इछाकार भगवन् पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह ॥ पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पमिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोडालीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ भयवं दसण्णभद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसण्णभद्दो ॥

॥ भयवं दसण्ण भद्दो, सुदंसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो ॥ जं च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पडिलेहण करे, इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें है ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह; इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चख्काण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चख्काण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्ष अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चखे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चख्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चख्काण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नाहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ सिझाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ नन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिझाय करे ॥ पीछैं खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं पमिग्घाउं ? गुरु कहे पमिग्घाएह ॥ पीछैं इच्छं कही शुन्न ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछैं इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्की तथा चनमासी तथा संवच्छरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-घियाण नुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंननणय पुरठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न हिरण्ण पुन्न जण नुंजहि रज्जहिं ॥ पिक्कहि मुक्क असंखसुक्क तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुन्न कसणठुठ सुकुठिण, चक्कुक्कीणखएणखुस

निरसल्लिअसूलिए ॥ तद जिए सरएरसायएोए लहु हुंति पुएसव, जय धएंतरि पास मदवि तुहुं रोगहरो ज्ञव ॥ ३ ॥ विज्ञाजोइस मंततंतसिद्धिन्न अपयत्तिए, ज्जुवएञुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिए ॥ तुह नामिए अपवित्तवि जए होइ पवित्तन, तं तिहुअए कल्लाएकोस तुहं पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद पवत्तइ मंत तंत जंताई विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिनवग्गविगंजइ ॥ डुञ्चियसञ्च अएञ्च यत्न निञ्चारइ दयं करि, डुरिआईं हरन सुपासदेव डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आएायंज्ञेइ ज्ञीमदप्पुद्धर सुरवर, रस्कस जस्क फएिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरनद्दखुद्द पसुजोइएि जोइअ, इयतिहुअएअविलंघिआए जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अञ्च अएञ्चहिञ्चज्ञत्तिप्पर निप्नर, रोमंचं चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पस्कालिअ कलिमलु, सो ज्जुवएत्तयसामि पास महमद्दउ रिनवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमएकमलज्ञसलज्ञय पंजरकुंजर, तिहुअएजए आएंदचंद ज्जुवएत्तयदिएयर ॥ जय मइमेइएि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंज्ञएायठिअ पासनाह नाहत्तएकुएमह ॥ ८ ॥ बहु विहवएुअवएु सुएएु वसिन उपसहिं, मुस्कधम्मुकामञ्चकाम नर नियनियसञ्चहिं ॥ जं ज्ञायइ बहु दरिसएाञ्च वहु नाम पसिद्धन, सो जोइ अमएकमलज्ञसलसुह पास पवद्धन ॥ ९ ॥ ज्ञयविञ्जल रएाऊएिरदसएा थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयएविसएएुसुएएुगग्गिरगिरकरुएाय ॥ तइंसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्ञविसज्झसइ पास ज्ञय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपविसिय, बाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मएएइंमएएसञ्चएए पुसअप्पाएंसुरनर, इय तिहुअए आएंदचंद जय पास जिएोसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाएमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लज्ञत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति ज्ञवएोहिमहूसव, इय तिहुअए

आणंदचंद जय पाससुहकुञ्ज ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयच्छवित्थरिअ पहाञ्चर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमच्छबोह कंदलदलरेणि ॥जायइफलभरभरिय हरिय डुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुलचित्तहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ, जय पच्चरकजिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुसपवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठ्ठिउकिठ्ठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्फल्लललुअह्मेहिंडुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ हउं डुहभरभारिअबराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवही-

रक्खिकेणपास सरणागयवछल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पस्न पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त समचित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गडविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हनं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु, हनं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हनंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विन्नागनाहनहुजोअणतुहसम, नवणुवयारसु हावन्नाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण नएइ नुविहाहुसमंतन, इय दुहवंधव पासनाह मइं पाल शुणंतन ॥ २४ ॥ नयहीणहदीणयमुएवि असविकिविजुग्गय, जं जोइयनवयारुकरइनवयारसमुज्जाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण चत्तन, तो जुग्गनअहमेव पासपालहिमइं चंगन ॥ २५ ॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमसहि दीणह, जं पासविनवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं असुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाणन किं पुण, हनं दुक्खिन निरुसत्तचत्तदुक्कहु नस्सुयमण ॥ तं मन्नन निमिसेण एण एनविज्जइ लप्नइ, सच्चं जं नुक्खियवसेण किं नंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिन, किज्जन जं नियरूवसरिसुनमुणंचहुं जंपिन ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविहक्खिसादयासन, जइअवगिणसि तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासन ॥ २० ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलविन, तनजाणुंजिणपास तुम्ह हनंअंगीकरिअन ॥ इयमहच्छिअ जं न होइ सातुहनहावण, रक्खंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण ॥ २ए ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसन, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धन ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंनणयपुरठिअ, इय मुणिवरसिरि अन्नयदेव विसवइ

आणिंदिअ ॥ १० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समह परमहजाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवत्तु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुझत्ति संझ नमोत्तु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसीतरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिशीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछैं पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोमी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिकें बैठ कें नमोत्थूणं कहे, पीछें एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछैं श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोमालीयें बैठ कें मस्तक नमावी सबस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि डुक्कमं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछें खमे हो कर करेमि जंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजूरा चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. पछैं मुहपत्ती पडिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज उन्नो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीछैं सव्वस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांडीने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछैं इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहि कें संमासा प्रमार्जि प्रमार्जित नूमियें आसन पर बैठ कें नगवन् ! सूत्र नणुं एसा कहे. तब गुरु कहे नणेह. पीछैं इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि नंते नणीने इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछैं खडा हो कर अब्नुट्ठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खडा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ अब्नुट्ठिउमि अप्निंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछैं इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछैं विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उवझाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि नंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछैं दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स नगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछैं पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछैं सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्यं, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछैं खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली. परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछैं खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछैं मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ हुँ वरकनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुष्टदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चक्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

देवसि पायच्छित्त विशुद्ध निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायच्छित्त विशुद्ध निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खुद्दोवद्दव उहावणच्छं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याजयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछें नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंजणयट्ठिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंजणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ तित्थ समुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ जत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नइ निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंत्तणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमा दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बेठ कें मावो गोडो ऊंचो करि कें खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, डुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणा लिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छय वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्खी चउम्मासी अरु संवच्छरीके रोज तो बडी शांति सुणे, परंतु औ

दिनोंमें बोटी शांति गुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ डुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ए ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, डुष्ट ग्रह राज रोगरणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

उँमिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भित: स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १८ ॥ इति॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पड्या होय तो इरियावहिं० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पछैं प्रगट लोगस्स कहो पूर्वलो परें सामायिक पारे, पीछैं एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनाद्वंछितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंडित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोडि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभु-वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-पत्ती, संवच्छरीये संवच्छरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो वइक्कंतो. एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-क्खिक ॥ चउमासिक सांवच्छरिक भणजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो, पीछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें कही ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछें मस्तके अंजलि करतो थको, इछं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ कहो, गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियं पन्नरसह्नं दिवसाणं पन्नरसह्नं राईणं जं किंचि-अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउह्नं मासाणं अ-ठह्नं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवछरीयें डुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं पक्खाणं तिन्निसय-सठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां होय साधु उचरता हुवे तो पा-खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं० ॥ उ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछें इछं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र जणी ॥ संक्षेप अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंम्मि दंसणंम्मिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे. उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-माहि पढिउं गुणिउं नही, अकाले पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिझाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडी अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिझाई अणोझा कालवेलामाहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडी वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसांसे मूक्यो कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्ते सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञानः ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निवितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मलमलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना देखो, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधो, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतु उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधो, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भासासमितो २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमितो ४, उच्चारपासवणखेलजलसंघाणपारिठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २ ... यगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी ओयरण ... तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे
... र विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

अतिचार होय, ते दर्शनाच...

विधि आ ... णें धर्में श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री
जाणतां अ ... —संका कंख विगिच्छा, पसंस तह
मिच्छामि ... अमूढदिठ्ठो अ ॥ ... रिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान
देव गुरु धर्म तणे ... नहीं, ... प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र
॥ काल ... घर्यो ... आकांक्षाः--ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगो दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणो घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकित्सा:—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखो प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे पोड्या, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी मोकली ॥ छट्ठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहुंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सच्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे०सच्चित्त तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काचीं आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पींपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्यालु कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लक्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कम्मं, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई वहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंवद्ध वाक्य वोल्या. खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन वोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर वयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस वेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य वोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख वोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उजाही लागी. कण कपासीया माटी मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ वहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिवाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणा संसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नहीं, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठली मूठसी साढपोरसि पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्काण पारवां वीसार्यां. बेसतां नवकार भण्यो नहीं, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्छितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायश्चित तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही; वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि पडिक्कमणं ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिसह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्थेण पडिक्कमह, चउमासे छट्ठेण पडिक्कमह. संवच्छरीयें अट्ठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरपक्खियं ॥ १ ॥ खामेउं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिच्छामि दुक्कडं देई खमावे, पीछें बे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥३॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इच्छं कही करेमि जंते सामाइयं॥इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ ॥३॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी०अन्नत्थू०॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुथकी जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे, जणेह. एसो वचन मनमें धारी॥इच्छं कही, उज्जो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि जं ते० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, उज्जा थका तीन नवकार गुणी बेसें. पीछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि जं ते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने विकाणें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं संवछरियं सव्वं कहे. पीछें ऊठी, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुठ्ठिओमि अभ्भिंतर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पंक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीछें इच्छाका० ॥ सं०॥भ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसठ्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक भणजो. एम चउमासे ए सर्व डुगुणो कहणो, संवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठ्ठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछें बे वांदणां देई, अब्भुठ्ठिओमि अभ्भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछें बे वांदणा देई. आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि दैवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछें भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांझले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहिथसंसिट्ठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्चख्खे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्खाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चख्खामि, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थ०॥ सहसा०॥ पच्छणकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइओ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चरकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चस्काइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चरकाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० ॥ सह० ॥ पछ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पछ० दिसा० साहु० सव० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मह० सव० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चरकाण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पछसका० दिसा० साहु० सव० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ. डुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठाव० मह० सव० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस० सह० पछ० दिसामो० साहु० सव० आयंबिलं पच्चरकाइ. असछ० सह० लेवालेवेणं गिहछसंसिठेणं उरिकत्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव० एकासणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअभुठाणेणं पारिठा० मह० सव० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अस० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अस० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अस० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमढ अवढं वा पच्चख्खाइ अस० सह० पछ० दिसा० साहु० सव देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साढ़ पोरसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चरकामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं. अ० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाणं ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ. चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चक्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खामि छुविहंपि आहारं असणं खाइमं अस० सह० मह० सव० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम छुविहार पच्चक्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार जपवासरो पच्चक्खाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकान्नी होय ॥ इति नवचरिम पच्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अनिग्रह पच्चक्खाणकेन्नी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अन्निग्रह पच्चक्खाण ॥

॥ अहणं नंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उत्र वा अन्नत्थवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चक्खामि नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि असेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पमिवज्जइ ता अन्निग्गह अन्नत्थणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चक्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्खाण करे. तब देसावगासी नहीं पच्चक्खे. अरु तिविहार जपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ठ आगार पच्चक्खे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाम्रेण वा

अखेवामेण वा अछेण वा वहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ-यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयत्ताडे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुकार सहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घरी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजव हे. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सव अनाज सातू गहूं जवकूं आदि लेकर सव तरेका आटा सव तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सव तरेका पकवांन सूरणादिक सव तरेका कंद दूध दही रोटी राव घाट सव पतली डर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सव असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सव अप्प-काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखरी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आंबा केला काकरी अखरोट खारक बिदाम वगेरह सव जातका मेवा सव जातका फल खादंम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेमा आंवला तुलगी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लौंग वायविमंग अजमा अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंभटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजम बावची बांवल-गाल घवगालि खेजमेकीगालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीगालि जम पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीगालि चंदन-कीराख रोहिणीकीगालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कयर बोरकीजम इत्यादिक अनाहार चीज इछा मुजब गे-मणा यह जो इछाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इछा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नछणाभोगेणं कहिये अना-भोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे माललो होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीग नाख देवे तो पच्चख्खाणमें भंग नही. उर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पछन्नकालेणं कहते कालकी प्रछन्नता. आकाशमें गर्द उमती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहामकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब भ्र-मसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरबकूं पछिम जाणकर पच्चखाणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत भंग नही ॥४॥ साढूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें भ्रघाभ्रा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चरकाणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥५॥ सब समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चरकाणका काल पूरा होणेसें पहली अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओपधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चरकाण भंग नही ६ महत्तरागारेणं कहतां पच्चरकाणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चरकाणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चरकाण कर भोजन करणे वेगाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करेतो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अभ्रुठाणेणं कहतां आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ वमा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करतां एकाशनादिकमें आसन छोम खमा हो जावे तोभी व्रत भंग नही ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं कहतां सब पच्चरकाणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतभी आ-
हार करे तो व्रत भंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां भोजन कर-
णेका थाल प्रमुख भाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका
अंसलगाभया हे उसकूं हाथ वगेरेसें पूछ न्हाखा उस परभी किंचित्‌वे
मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवे
तो व्रत भंग नही ॥१२॥ उरिक्खत्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्च-
क्खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत भंग
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय
सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत भंग
नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां भोजन पुरषे जिससेती एसी कु
ऋछी आदि देकर भाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरडी होय
प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्‌मालम न होय तब जो उसही वासणसें
भोजन पुरसे तोभी व्रत भंग नही १४ पडुच्चमुक्खिएणं कहतां सर्व
था लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्‌मात्र घृतादिकसें वेमा-
लम चोपडणेमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता
हे तो नीवी पच्चक्खाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत भंग
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत भंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरें
पच्चक्खाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केव-
लिपन्नत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो
गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं
पवज्जामि अरिहंतसरणंपवज्जामि सिद्धसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्व
ज्जामि केवलिपन्नत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिझाए निगामसिझाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कइए ककराईए छीए जंनाइए आमोसेससर रकामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-रियासिआए दिठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-नोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिछामि-डुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उ-ग्घाडणाए साणावछादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए वलिपाहु-डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे अणेसणाए पाणेस-णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए वीअभोयणाए हरियभोयणाए पछाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिठहडाए दगसंसठहडाए रयसंसठ हडाए पारिसाडनिआए पारिठावणिआए उहासणभिस्काए जंउ-ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-रिठवणिअं तस्समिछामिडुक्कडं पडिक्कमामि चाउकालं सिझायस्स अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-णाए डुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-सिउ अइआरो कउ तस्स मिछामि डुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणसल्लेणं मिछादं सणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं क-साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं पडिक्कमामि चउहिं सणाहिं आहारसणाए भयसणाए मेहुणसणा

ए परिग्गहसम्राए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त-कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-उमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं म-यठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा-णेहिं चउदसहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए ना-यज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पणवी साए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवज्झायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० देवाणंआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्न-त्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणभूअजी-वसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा रिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं अकालेक-उसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झा-इयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइ-माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-वलियं पडिपुण्णं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं इत्थट्ठियाजीवा सिझंति बुझंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाण-मंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-णुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणु-पालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्छत्तं परिआणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं प-रिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ आवंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्छ

पडिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणचउव्वीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पक्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुयारं ॥ अहमवि उवठ्ठितं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठ्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयलर्लोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंती-पहाणस्स अहिरसोवणियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखाविन्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-गदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरुयाए चउकसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग-रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-ड्डपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खू-णीवा संजयविरय पडिहय पच्चख्काय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुख्कणयाए अ-सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणभावे महापुरिसाणु-चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुख्कख्कयाए कम्मख्कयाए मोहख्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओवेरमणं ॥ १॥ अहावरेदोच्चे भंते महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तओणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालओणं मुसावाए दियावा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमुसंवइ

वा नेवन्नेहिं मुसंवायाविंवा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मखयाए मोहखयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंत्तंवा अचित्तमंत्तंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
व्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ
इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सवं अदिन्नादा
णं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
अदिन्नं गिन्हाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चक्खाय पाव
कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
दुक्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि स
व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
व्वए मेहुणाओवेरमणं सवं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा मा-
णुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुख्खक्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओम्मि सव्वाओ मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं,परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्याए तिगारव-
गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउविहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे-

णाउ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंच- मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारस- मिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा उ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहे- णपडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्छत्तं एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण- वज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वए- पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतो- गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं- धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा- नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि- महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उव- संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं- संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥ पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिम- हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंप- न्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय- भासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छव्विहमब्भिंतरियं वज्झंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामि- महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भंगा परिव- ज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं- सत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयठाणाइं अट्ठकम्माइंतेसिबंधिंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अठयपवयणमाया दिठ्ठाअठविहनिठिअठेहिं उवसं पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसार ठायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न वबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरउ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंववसाउ साहणठेपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो प सत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमठे उत्तमठे एसखलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवएसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न मोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भग वउ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग वंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्च क्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअठे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ गवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स अंतोचउमासीए अंतो संवच्छरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता रणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नप ढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवी रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरि हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद थुउ तंदुलवेयालियं चंदा विज्झयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार कप्पो चरणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्नि ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालंतेणं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुच्छियं अणु पेहयं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहि लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप क्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपा लियं संतेबले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प डिक्कमामो निंदामो गरिहामो वउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठे मो आहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं न मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्तो सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमाणपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नीदसाउ आसीविसभावणाउ दिट्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयंमि अंगबाहिरए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाउ सुदिट्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुख्खरकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसे क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्भुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिव ज्जामो तस्समिछामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्सामिछामिदुक्कडं ॥ सुय देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अव्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घड़ियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पड़िलेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पछें खमासमण देई, ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पड़िलेहुं ? गुरु कहे, पड़िलेहेह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पड़िलेहे. पीछें उभो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इछं कही, खमासमण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

ठाएह, पीछें इछं कही खमासमण देई उन्नो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-च्छकार ज्ञगवन् पसाउ करी, पोसह दंरूक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-च्चरावेमो ॥ पीछें करेमि ज्ञंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वो-सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चख्काण प्रारंभः ॥

॥ करेमि ज्ञं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बंज्ञचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहो-रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स ज्ञं ते पमिकमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊज्ञो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि ज्ञंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-सणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय खमासमणें सि-झाय संदिस्साउं? सिझाय करुं? कही खमासमण देई ऊज्ञो थको, आठ नवकारनो सिझाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं? पांगरणुं पमिग्धाउं? कहे. ए सर्व सामायिक-विधि पूर्वें कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां इरियावही पमिक्कमी ठे, तेमाटें इहां सामायिक दंरुक ऊच्चरयां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमण-वेलासीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुइयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इच्छं कही खमासमण देइ कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ बहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिज्झाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३२ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें,इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार भगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ अ

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ए ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १ए ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके जीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछें इच्छं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवो, एक खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ न० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पमिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिज्झाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, नणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहुर दिन चढ्यां, उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपमिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पमिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० न० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पमिलेही पान नोजन पात्र पमिलेही राखे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, नूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रनुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग करे. मुखें लोगस्स कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उन्नो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछे लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूसरी थुईकी गाथा कहे. पीछे पुक्खरवरदी० सुअस्स जग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछे सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बेठके नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछे स्तवन कहे, पीछे जयवीयराय कही. नमोत्थूणं सव्वे तिविहेणं वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पांचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिझाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चख्काण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्खाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चख्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चख्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चख्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चख्खे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चख्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिल जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडा सा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही बेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिसाउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सिझाय संदिसाउं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चक्खे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चक्खाण करे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिला पडिलेहण संदिसाउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहुं? गुरु वचनें इछं कही, दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदिसाउं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो छे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पडिकमणो करे, संवछरीयें

संवच्छरी पम्किक्कमणो करे. तिहां देवसी पम्किक्कमणो पूर्वे लिख्यो वे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष वे ॥ इछा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " गाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव कानस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न्न० सिद्याय संदिस्सानं ? सिद्याय करुं? कही बेठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्याय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पम्किक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पम्किक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिद्याय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ञ कहेतो थको, न्नूमि प्रमाजें थंमिल स्थानकें जइ, देहशंका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. न्नगवन् ! बहु पम्पिुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पम्किक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाका० सं० ॥ न्न० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पम्िलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पम्िलेहे. एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ राइ संथारो संदिस्सानं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० सं० ॥ न्न० राई संथारो गवुं ? पीछें गुरु वचनें इछं कही, चनक्कसाय पम्िमल्लुन्नूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. न्नूमि प्रमार्जी, संथारो नत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि न्नंते नच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिठिज्जा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाको फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पमिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिज्झाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पमिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पमिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पमिक्कमण वेला सीम सिज्झाय करे. पमिक्कमण वेला हुवां पमिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पमिक्कमणो करी पमिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पमिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊधरी इरियावही पमिक्कमे. दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पार्युं? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उभो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पार्युं? गुरु कहे आ-

थारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें ऊनो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संथारा पमिलेहे. गोमालायें बेसी मस्तक नमावी, " नयवं दसन्नन्नद्दो " इत्यादि नावनारूप गाथा कहे. पीछें पोस हना नपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविन्नागव्रत साचवण निमित्तें साधु नणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चिंत थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व नपगरण पमिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पमिक्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक नच्चरतां जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्ग करी पमिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें पमिक्कमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पमिक्कमणानें अंतें पमिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २, तथा जो गुरुसें जूदो पमिक्कमणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ अब्भुठिओमि अभिंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु साखें पच्चरकाण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वें करी छे, तो पण आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे, नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चक्खाण किया, पीछें दोय खमासमणें उही पडिलेहण संदिस्साउं ? उही पडिलेहण करुं ? कहे, पण थंडिला पद न कहे. अने थंडिला नहीं पडिलेहे.यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहण विधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो उच्चरयो है. पीछैं संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो नाव थयो, तो पच्चरकाण कियां पीछैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वें लिख्यो तिम करे पण सामायिक उच्चरयां पीछैं दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं उही थंडिलां पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो नाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरचो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे. पीछैं चउविहार पच्चरकाण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछैं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते उच्चरे. दोय खमासमण देई सिझाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पीछैं बे खमासमण देई, अंग

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर बे खमासमण देई, इंही थंमिलां पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण था नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सांम सिझाय ध्यान करे, पोछैं उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इसनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सवस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सवस्स विराहिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंमणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सव्व जव्वाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका वली पंकपक्खाल

तीर्थं ॥ मणोवंछियछे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावन्न सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि झाणं, सिरी जारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमलकृतौ स्वारत्न पक्षालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर दीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ जवियणनें तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः,क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः,क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ ईंईंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, अ्रसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दाग्दिदि दाग्दिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिझ्रैंकि झ्रैंझ्रैं, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुरशैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगूदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥गुणगुणण गुणगण, रणकि णेंणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेंकि झेंझें, झणण रणरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महे जनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठ ठेंकि ठ

ह्निंक, गह्निंपट्टा, ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों, त्रेंपि त्रेंपिनि, मेंपिमेंपि
नि, वाद्यते ॥ दँ दँ कि दँ दँ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुन्नवे ॥ ३॥
धुंदांकि धुंदां, धुधुद्दि धुंदां धुधुद्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,
रणकि णेंणें मणण मेंमें, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुन्न समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें
जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से
वक नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गछ ना
यक सद्गुरु, श्रीजिनन्नक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि
पन्नणे, श्रीजिनलान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दारुयां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पडिक्कमण संवछरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें न्नलें न्नावें न्नरियें पुण्य न्नंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लान्न अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परन्नावना धूप अगर उखेव, इम न्नवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवछल करियें वारंवार, केइ न्नावना न्नावे केइ तपसी शीलधार ॥ अरुहीइ पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोन्नितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोन्नितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन न्नविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसङ्ग अछा चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी न्नाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ उहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा न्नवियण सुखकरू, उख हेंर अंबा लुंब सुंदर उरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यज्ज्ञागमनोभ्भव व्रतवरज्ञानाकराप्तिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर छे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग । आंनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी चउवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण ज [illegible] मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थंकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविलासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तघणं ॥ पंकवप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुड्ढिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्दिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणविणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति रुषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । रुषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विहरे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग दुवालस अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदेवोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ भवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । स्याद्वादनयादिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी । सुणिये नित भविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पयंपे होज्यो जय२कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान । नाभेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे। तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः। सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोझारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवि यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुव्वयवा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं धर्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे दाणेसु जम्मे,

वय गहणरवणे, केवले लोयकाले, पन्नाणिव्वाणगणे, पगवणं समए, संथुआ न्नावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, न्नवणवणसए, विंतरे किंन्न रेहिं,। तं मझं दिंतु मोरकं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ देवं तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, न्नावतित्थंकरंतं । सव्वन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सव्वकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममहणं, बीयअंकूररूवं । अव्वावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहन्ना । सव्वन्नामाणमंबा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंबा ॥ पन्नत्ती उत्तपउमा, धणइस्सरणाई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच कल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंमण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रन्नूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण न्नरया ॥ गिरि फरणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंमरगिरि महिमा जे मांह। ते आगम समरूं मनउन्नाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख कवरूयक्क । मन वंछित पूरण कल्पवृक्क ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेवता । न्नणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवलज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु न्नवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्टावय चंपा पावापुर शुन्न ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणन्नाण ॥ अजितादिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उल्हास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग
णधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्त२
नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम वोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस
रि अंबा पउमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृक्ष ॥ ध्या
वे सुख पावे श्रीजिनलाज सूरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले
सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दढरथ नृप रा
णी नंदाकेरो नंद ॥ जद्दिलपुर स्वामी फेमे जवना फंद । चित चो
खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अ
नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा
सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २
॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरक्षेपा स्या
द्वाद मितसिठ ॥ जविजन उपगारी जारी जिन उपदेश । श्रुत
श्रवणे सुणतां नासे कोमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा
सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥
चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन
लाजसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गाउ
उंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पद्मासन सुख
कार । श्रीतीरथनायक वैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरो
वर चामर ढोले इंद । देवडुंडुभि वाजे जांजे कुमति फंद ॥ जा
मंमल पूंठे झलके जांण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन मोहे
सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य जाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर भाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार। शुभ भावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी। भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो भवि प्राणी। सुय देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक। शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक। करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस। अक्षत गिणतीसे चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भाखइ इम जगदीस। तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चेत्र मास शुभ वार। विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार। करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद। चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद। जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद। जिण नवपद महिमा भाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उजल सातमथी नव दीस। नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय। मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार। सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अडछत्तीस पण वीस सग वीस सार। सडसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

संख्या कानुसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पावक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिञ्च भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित वीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल हे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पदाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वछल करतां भव वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जख जखणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहे मुख्य वखाण्या ऋषभादिक जिनचंदाजी ॥ भाव धरी ने जे भवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं भारीजी ॥ नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी। वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥२॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी। सम्सठ इक्कावन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता जी । भली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद भुक्ताजी । जिन सौभाग्यसूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंमन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषज्ञादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीऋषज्ञना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सव आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवम् पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंड् उदार ॥ देवचंड्गणि ज्ञाखे ज्ञविजनने आधार । सव तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत उपड्व मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे ज्ञवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सव सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । ड्व्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे ज्ञवज्ञय फंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । ड्व्य ज्ञाव विहुं ज्ञेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विनय निवृत्ती सत् आरंज्ञे विनय तपी ते जाणोजी । शुज्ञयोगे नहि आरंज्ञकारी ज्ञग वइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सव कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गछपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सदाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांतिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषभलंछन सुखदायाजी । विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरभर नासन अभिनव सूर समाणीजी ॥ भवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी । विघन विडारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक भाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो भविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर भवियण उपर सुथिर करो सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित भाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत । पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार । इग्यारे वारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान । इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

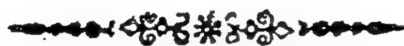
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह । सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रूपभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार । जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो उपवास । मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो बोल्यो लाभ अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । दुखदो

रुग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिणि तप फल जाण । सौन्नाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोच्छव नित नवला सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गछ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजांण ॥ इण पर गम२ तुम देखो चउदस पख्की होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन ह रेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगछ मंरूण कुमति विहंरूण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पख्को चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल जावे, तेहं विउलतवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्प जावे, थोसामि सुदिठ सप्रावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सव्व डुरकप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३॥ सिलेगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुरकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमं सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुरकवारणं, जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं संतिं च जावउ, अजयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ, सुनय नय निउणमजयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे ॥७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तिथयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मथय पसत्त विछिन्न संथिअं थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहथ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणाजिराम परम रमणिज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ़उ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वजयं जवो हरिउं॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे जयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमंतउ महाचक्कवट्टिजोए महप्पजावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयत्त पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउरकराभिराम सद्द मीसएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विभ्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायउ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सत्थिअ वसह सीहरिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठ्ठा समप्पइठ्ठा, अदोस दुठ्ठगुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसायसिठ्ठा तवेण पुठ्ठा, सिरीहिं इठ्ठा रिसीहिं जुठ्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाइवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

प्पयं, अहवा किरिं सुविब्भमं जुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणत्रं यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृद्दजितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनक्क निग्गयपहा दंरुच्छलेणंगियं, वंदारूण दिसंत इव पयरू निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविहु इज्ज सोलसः जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाणु ल्लासभत्ति प्भरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थओसिं, फलहइ लहु सवं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुठ्ठ निठ्ठदोघट्टथट्टं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्घिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जिणिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वद्धए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं, फुरुगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणछेअ भीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभा रंभनिवाणलच्छी, घणथणघुसि णिक्क प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ वहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसद णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसण्णं तावमिच्छत्तछण्णं ॥ फुरइ फुरुप

संता णंतणाणं सुपूरो, पयरू मजिअसंती ऊाण सूरो न जाव ॥ए॥ अरि करि हरि तिण्हु ण्हंबु चोरा हिवाही, समर रूमर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे ऊत्तिजंती, निविरूतरत मोहा ञ्मक्करालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरअदारु दित्तऊाणग्गि जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं ऊाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छिं गाढसंथंन्निअव ॥ ११ ॥ अरूविनिवरूिआणं पछिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च ऊाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिसं पक्क पाइक्कपुसं, सयलपुहवि रज्जं छन्निअं आण सज्जं ॥ तण मिव परि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पसस्सा ॥१३॥ ठणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणन्नरनमिरीहिं मुठिगिज्जोद रीहिं ॥ ललिअ न्नुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं, सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किमि ञ्मकुठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ न्हमुह दसणच्छी कुच्छिक साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु डुहतासे पक्किए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं वछरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिञ्चा एह ऊाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिछंकर सोल सम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर दुरिअमखिलं पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं० ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि णो ॥ चलणजुअलं महान्नय, पणासणं संथवं वुछं ॥ १ ॥ सन्निय

कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय वुढ्ढिय छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ डुव्वाय खुभिय जलनिहि, उप्नड कल्लोल नीसणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिणचलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअवणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डझंत मुद्धमियवहु, नीसरणरव नीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत नोग नीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सच्छहं नीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्कर फुडसि द्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दनीमासु ॥ नयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वुढ्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल हरारावं ॥ १४ ॥ नीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्क खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभि

न्न करि कल, ह मुक्क सिक्कार पनरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा न्नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जक्ख रक्खस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्ख पीकासु ॥ सं ऊासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तित्थ, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म बीआ, बीआपरमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुत्थाणि तित्थ स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तित्थप्पन्नायगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तित्थस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्चुज्जमो सुअधम्मो, समग्ग न्नविग वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ भवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ए ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिज्ञस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, ऋिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपमिवरकाजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि बंन्न संति सहिआ, कय मयरका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पमिहयपमिवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चकेसरि वइरुद्दा, संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्ञा देवी, उदिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अहुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रका, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहन्नावा संतावं, तिज्ञस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव हासंघे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिज्ञस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुत्तमग्ग, विहिअ न्नवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, उहाणि सवाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासरिक, नवालया नवग्गहा सनरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कंटएहिं, सविछिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सवत्र सुहं, दिसंतु सवस्स संघस्स ॥ १ए ॥ न्नवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिज्ञस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ संतिज्ञस्स भ गवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ऊविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं सव न्नय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसन्नसेण पमुहा, हयन्नय नि

वद्दा दिसंतु तिब्रस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंदिअं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पय इएऋद्धिआ जे, ऋहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु स म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, डुस्सद्धं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिट्ठिअढ़ो सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समस्त पर तित्थ जणिय संखोहा ॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्ववाहा, हय डुह दाहा सिवंब तरु साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह साहण सज्जा, ऋयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जिआणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ जिणदेवो, देवायरित्ति डुरंत ऋवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ण पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तऊाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ए ॥ पुरउ डुल्लह महिव, ल्लहस्स अणहिल्ल वाडए पयडं ॥ मुक्काविआरिऊणं, सीहेणाव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ द

समच्छेरय निसिवि, प्फुरंतु सच्छंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण हयमहिश्र दोसेण ॥ ११ ॥ सुक्कइत्त पत्त कित्ती, पय डिश्र गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पढय परवाइ दित्तो, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिश्र नवंग सुत्तड, रयणुक्कोसो पणासिश्र पत्तसो ॥ भवभीश्र भविश्र जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिश्रं ॥ सिरि श्रभयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व सारंग भग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइश्र पवर कव्वरसो ॥ १५ ॥ भीमभव काणणमिश्र, दंसिश्रगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउं, सूरी जिणव ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरढिश्र सच्चरणो, चउरणुठग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उडमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिश्र निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिश्र सावउड भउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होछा ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया भवा ॥ जेण जिणवल्ल हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिश्र पवर पवयण, सिं रोमणी वूढ दुवह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ सत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिश्राण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुवहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरडिउ निढिश्रानिढो ॥ १ ॥ गोयम सु हम्म पमुहा, गणवइणो विहिश्र भव सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणति, उ सुठयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण

वेयावच्च कारिणो संति॥अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा, ससामि पयपनम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खा ते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चउर, पुरठिउ वद्धमाण जिण भत्तो ॥ सिरि बंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निव्वुइ पुर पहियाणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरि उछिन्न कंधरा धणियं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिव्वइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो भयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो ऐस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा भय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, भयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमाण तिव्वस्स वुद्धिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ भवेभवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्र, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिः, नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि ःयेन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वडुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
ज्ञुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव ज्ञग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिज्ञुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुज्यं नमः क्षितितलामलजूषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुज्यं नमोजिनज्ञवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्ञाति रूपममलं
ज्ञवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, विंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
ज्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विलसदंशुलतावित
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोज्नं, विज्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंज्नम् ॥ ३० ॥ उत्र
त्रयं तव विज्ञातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोज्नं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि त
त्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनें
द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रह
तांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योत
न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
रावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता
नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भू
पतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
रतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद
पंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणन
क्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया
नपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभी
षणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
स्त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः
॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृ
ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विग
तबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति नयं नियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, नक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति नक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ नो नो नव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिनुवनगुरोरार्हतां नक्तिनाजः ॥ तेषां शांतिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रनावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेहसंनवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हन्नट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति नव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, नगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुनूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व
र्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुं
बुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०,
यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५,
गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृ
कुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्द्ध
मानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४,
महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अ
शोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४,
कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया
१९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सि
द्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा,
विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः
॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रे-
श्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी
१०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता
१४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो र
क्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रम
णसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यां
गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयम
वरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र
देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमं मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋ द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु,श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु, श्रीराज संनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते वि

प्रवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जयविजये, अर्हँ परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, आकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंमलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवं शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीमिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूमामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरुरे अयाण चिंतउ मणभितरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरब सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि न्नासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुरक अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अरिहंतदेव पत्रमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुरक, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुरक ॥ ३ ॥ पनर त्रेय तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सो इग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहँ पुवे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो उवय करे बुद्धि हीणजानंध ॥ ४ ॥ दक्षिण दिसि पंखडी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाल ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कहे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिजे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवो परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रखे विद्रुर तिहां नर वहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिँ जपे जे एके झाणे, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोक्कारो पद दिसिक्ष गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुइ पायालह सामी, सम्मलीकुअर उपन्न भिन्न सुर लोयह गामी ॥ संवल कंवल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ए ॥ ठींके बैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही उपर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धारू संकट टले राजा वसि होवे, तिच्छंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीमते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छनमछ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिच्छराज महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिच्छंकर गणहर पभिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुरु गिरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अठ संपय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सत्तेव इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

परमेट्टि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेट्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शशति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥१॥ पणवीसाय असिआ । पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरियं । नवियाणं नत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रक्ख साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥३॥ सत्तरि पणतीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चौरारि महाभयं हरउ ॥४॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंस । हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गप्नं । चक्कं किर सवउ नदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्रसंखला तहय वज्रअंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता। कालि महाकालि तहय गोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्ञा देवीउ रक्कंतु ॥८॥ पंचदस कम्मनूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो । वसोहिअं हरउ डुरिआई ॥ ए ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तिछयर गयमोहा । झाए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विहुम । मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि डुठ देवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फल हेलिहिकणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गय । साइणि नूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पडि

लिहियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निभ्रंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥
॥ इति शसति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दरको, नालियायरवियासिगोपसरो॥ रयणत्तय स्स जणउ, पासजिणो जयउ जय चरकू ॥ १ ॥ कय कुवलय प फिबोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलउ ॥ विहियारविंद मह णो, हीयराउ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्जिणंतो, सि दूरं पुहवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअवक्को, सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंगल संथुउ इलानंदो ॥ रयणियरदारउमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियट्ठो, नायओ नागरायकय पूउ ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय रिउ सुहं दिसउ ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा मंगलो म हाभूइ ॥ असुरेहिं नमिज्जंतो, पासजिणंदो कवी जयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा सरिस सिरी, जय चरकु सुउ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो सायर, मायंमरहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ उरणी भूयं, पास जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो, सिंहावमालोनहो उवणोकेउ ॥ दूरंतम रासीउ, सत्तम ठाण ठिउ हरउ ॥ ए ॥ इअ नवगह थुइ गप्नं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं थवणं ॥ तुह पास पढइ जोतं, असुहावि गहा न पीमंति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं ॥ ग्रहशांतिं प्र वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेयाः, पूज नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रभस्य मार्त्तंड, श्चंद्रश्चंद्रप्रभस्य च ॥ वासुपूज्यं भूमिपुत्रो, बु धोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माराः, शांतिःकुंथुर्नमिस्त था ॥ वर्द्धमानो जिनेंद्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभा जितसुपार्श्वौ, श्चाभिनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संभवः स्वामी, श्रेयांस श्च बृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥ नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनॉल्लग्ने च राशौ च, पीमयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः स हितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिभिर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुतैः ॥ वे र्णसदृशदानैश्च, वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल, बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव तिष्ठंतु ॥ ए ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू जिता भक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रभाव तः पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग र्भित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रभूजीकी माला फेरणी. चंद्र । २ चंद्राप्रभूजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्री शांतिनाथजी, श्रीकुंथुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी ॥ बृहस्पति । ५ श्रीऋषभदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्व नाथजी, श्रीअभिनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी, श्रीसंभवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥ शनीश्वर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु । ए मल्लिनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजब दान गुरुसुपात्रभ

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये जा वे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंह्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो भुजंगममया इव मध्यभाग, मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म रुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभाव वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामि न्नलुब्धगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा पिलोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म नीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विभो हरिहरा दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिभिरीश सितोपि शंखो, नो गृ ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभा वा, दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमधएव दि

बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु त्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवा हम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशो कतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमे न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्र याय, मन्ये नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भ वता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक लापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिव सं चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभि तोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विप राङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्व मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति वि श्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्था पितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जित
घनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त
मथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंम, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥
प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहे
तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्व
यं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनि
धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्ष
म् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथि
ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि
भो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामन
र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि
तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
जातोऽस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न
भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारु
ण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं श
रण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्र
णिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ
॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबु
राशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंह्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि

मपि संततिसंचिताथाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य नूयाः, स्वामी त्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांडोल्लसत्पुलककंचुकितांगनागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विनो रचयंति नव्याः ॥४३॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रनास्वराः स्वर्गसंपदो नुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ रुषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वालासमं नाद, बिंडुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, मनोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेन्य, ॐ सिद्धेन्यो नमोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिन्यः, उपाध्यायेन्य ॐ नमः॥४॥ॐ नमः सर्वसाधून्यः ॥ ॐ ज्ञानेन्यो नमोनमः ॥ ॐनमः तत्वदृष्टिन्यः । चारित्रेन्यो नमोनमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुनं ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्यं पदं शिखां रक्षे, त्परं रक्षेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घंटिकां ॥ नान्यंतं सप्तमं रक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफोद्व्यब्धिपंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसर्यांकान्, श्रितोबिंडुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेन्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुः ह्रं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेन्यो नमः । जंबुवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तारं, स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि बिंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः, सरेफो बिंदुमंडितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाच्छादितसर्वांगं, मामांहिनस्तम्माकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य, य० मामांहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-
शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुडाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०
मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥
देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा
॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-
तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
मामांहिसंतुन्नूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या
न्नुविलब्धयः ॥ तान्निरन्न्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
पातालवासिनो देवा, देवान्नूपीठवासिनः ॥ स्ववासिनोपि ये देवाः, सर्वे
रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनान्नूत-
वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रन्ना-
वतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंमी सरस्वती,
जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला
काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जग-
त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयछंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
गोप्यः सुदुःप्राप्यः, श्रीरुषिमंमलस्तव ॥ न्नाषितस्तीर्थ, जगत्-
त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ
॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यन्न्र-
ष्टा निजं राज्यं, पदन्न्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीन्न्रष्टा निजां लक्ष्मीं,
प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ न्नार्यार्थी लन्नते न्नार्यां, पुत्रार्थी लन्नते
सुतं ॥ वित्तार्थी लन्नते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे
रूप्पे पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,
गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

ज्रुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्रीतिविनाशकं ॥५४॥ ज्रूतैः प्रे तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुज्ञलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ ज्रूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टे, यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपःकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, यें पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्नवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे तन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, ज्रवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो ज्रवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, ज्रूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्नते पदमु त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंमल स्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याज्रिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः॥ निर्ज्ञयो निरहंकारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । निज्रयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रज्रुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

प्रतिमश्लेष्ठ, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो
नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥६
निःशद्धो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शु
प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अचिंतः
क्षयो विन्नुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८
अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो न्नवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः
बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ए ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञा
लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवार्जितः ॥ १०
अजेयसर्वतो न्नद्रः । निष्कषायो न्नवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ।
वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहज्ञानंद । अवाङ्मानस
गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत
विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः
लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंन्नुः । विश्ववेद
पितामहः ॥ सर्वन्नूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं
दरूपचैतन्यो । न्नगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य
क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥
गौरवादित्रयाद्दूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अन्नयः प्राप्तकैव
ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र
दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स
र्वेशः सततसुखावासः। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम
ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोन्नगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य
कारकः ॥१ए॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
न्नुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।
विमुक्तो मुक्तिवल्लन्नः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच
रः ॥ २१ ॥ सदाशिवो चतुर्वक्रः । सततसौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोटिमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंनो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोध । एकानेकविनिश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्युतः ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमश्रात्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाकृतिं नाक्षरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्म्मजित् धर्म्मनायकः ॥३४॥ बोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातांतः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसंबंधः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि

षप्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुनः॥ ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभ द्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानामपि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं । नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोभ्रावच वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुभुव इवेष्टार्थप्रतिभूपदोपास्ते पार्श्वासन यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांत्रामासूनोधुतनिधनमूनोयवसुना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोन्नानो भुवनभवने नो वृषभरं । व्यधांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगत्रय्यारामेमरकुरुहवामेयजिनपाः ॥ हतोग्राक्ग्रामे शितरसमकामेषुविजयी । त्वमकालीभामे डुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे भुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ श्रुतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिड्वारे भवदहनवारे कुरुकृपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारानहिमिथुनमाराव्ययविन्नो ॥ ज्वलभ्रस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसभवान् ॥ ६ ॥ दिशाश्रीमान्देवव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥ तमालाभ्नोमेवः परिकरिहेरवत्सलसदा, सदानंदंकेवल्यचलपदमेवस्तुतिकृते ॥ ७ ॥ कजन्माद्कंकायंकिरवगणहंकीर्त्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहाव्रततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं
ददानंकंकल्लोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं
भवकुशकदात्रंसुहृदये रहोरात्रंत्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रभो पवित्रं
सचित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्म्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम्
॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंहृगुदकभवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स
फलजनुपस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला भ
वारण्येटन्तकथमपिभवंत्वंनददृसुः॥१०॥नजानेदंनेतः कुमततिमर
प्रावृतदृशां गतिर्म्मोहक्ताणादरदरभवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य
भिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवभजन्तेस्तविधयः
॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां भवास्ताघोदत्व
लनिपतितं प्रोद्धरत्तराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर
णः शरण्योसिश्रेयान्प्रभुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयस्त्वंधीरस्वा
परितकनकाहार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिभटगभीरत्ववि
दितः दितःप्रत्यूहालिः शुभमत जगत्यावनलिना जिनाशीनश्रीरः
कुमतिवसुधालीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविभ्रद्बोधंपरमपुरुषः सिद्धिन
गरीं गरीयः साम्राज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्त्तुंकर्म्माष्टकरि
पुबलंप्रत्र्जयमहा माहतीर्थेशश्रीभरमतुलमाप्तः प्रभुमहाः ॥ १४ ॥
महाराज स्तुत्योऽडरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलभ
विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं मेवरसरसिकादम्बइवसन् वसन्र्जी
यात्पार्श्वप्रभुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीभोलोकोत्तरपद
मुपेतःसकलवि । त्पवित्रंदोपालोयवसलवनेप्राप्तविभवः भवध्वस्त्यै
नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण
गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ भवन्तंसयोग प्रथि
तपदवीचारिनिवहा अजस्त्रंविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने
यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

स्ताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकनुरुप्रकाशोधतमसं हरल्लोकंकुर्व
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनो ज
गच्चक्षुः पार्श्वोदिशतुकुशलंमेसमयभृः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस
मतनुमतांघ्नन्नमृतगु:कलाभिःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वतान्नामापुत्रः सपदिविपदस्तार
कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदूरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति र्महीजन्मातह्वा
स्त्ययप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददद्विरतंराजतनयो ह्
यातीतोलोकेतनुभवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ धरादित्येशानः शु
भ्ननरुविभ्नोगौरकरणः सदापायाद्वैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः
स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोभानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽयेऽन्यस्त्रिदसविसरेऽन्योवरतया सि
लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलभूः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
न्माधिवसना च्चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यश्रीयोगात्कमलनिलयेसो
सिभ्नगवन् ननाकश्चिद्विश्वातिशयभरवित्तस्त्रिभुवने भवाद्दक्कोगीतः
परमपुरुषोतोहरिहयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि
पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः सकल
जगदर्थौघकलना न्नशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥
अवाप्तःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता दितेयाञ्जकोणोरुहस्मद्दि
मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसङ्गःकृतकुमतभङ्गःसुमनसां हिताया
शेषाणांसुकृतपदवींत्वंकक्कथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंद्राहोरात्रंबहुविपदम
त्रंधृतमरं कलत्रंयेनात्रक्कसहरिहरादिःसुरगणः सकर्णानाकर्णामित
चरितताधूर्त्तनिवह प्रतारीसद्दोषः मित्तसततरोषःस्थितिहतः॥ २६॥
समयामयामप्रभवभयदो बोधरहितः सरुग्भव्यद्वेषीपुरुदुरितकृत्मा
नकलितः पुरामोहान्भूतश्चिरमिदसद्गहीनमहितः सदेवोश्चाघ्यत्वंकथ

मपिसमासादिमयकाः॥ २७ ॥ प्रन्नोकिंवामेतैरन्निमंतविधानेलसतरै
रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेणयोनवरतम् मनोलिम्मैत्वत्यद्दनजयुगले
सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८॥ अदन्नंद
म्नांसिन् द्रविणन्नरमङीसदृशं विहायेनाप्तनंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
दधत्सौवर्णानामुपरिन.लिनानाक्रमयुगं पुनर्न्निर्लोन्नानांगुरिसमतिमङ्गि
स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी
सध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्पतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
क्ष्मांणिदधत कुतस्तैनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं
प्राज्यंराज्यंविदितविन्नवापास्यलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यसुमतां महच्चित्रंचित्तेजनयतित
वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामार्थोत्तृष्णा ततवनदवप्रयातिशयितं जगद्वा
रिद्यान्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्ध्याध्यायन्तस्तवचरणयु
ग्मं सुष्टादया नतयँ स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
त्येकाधाराद्दितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिक्ति
ल तवत्रातर्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् न्नवेवेशस्तोर्थोपिचनिश्च
पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
मनाक्यस्येन्नक्तोयदिभदनुगंमह्यसनितं नितम्बिन्यान्वोतः सपदिकुश
तेतंस्वपसमं समाह्वल्यंवाथप्रन्नवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
लापायाच्चुद्दास्तवगुणगणान्नान्तिविशदा स्त्रिलोकीन्नूजानेसुरपयमणे
न्नानवश्व रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिषणोनव्याधिषणो नतानीष्टेसख्या
तुमदरपराब्धेतुसरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे
नमस्तुभ्यंन्नीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी
कृतसुधा समुद्रायामुष्मयुदवसिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
मद्दिमालयायसुमनः सन्दोहशुश्रूषितां ह्विदन्द्दायकलिच्छिदेन्नगवते
न्नव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायत्रिश्वत्रयी मित्राय

क्षणादोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा भरनिर्जिततारकराजगणः कृतव क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द। भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमिति जिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये हम् वितरविततबोधंयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्यः स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसनृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्य्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन यरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीउ मु णिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम लगिरिमहं तिछमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अभय देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण्ण, फण पल्लव मं मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥ आराहउ जहि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कांत दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृप लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंडरीकनी जांण ॥ प्रभु द्यो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सुजगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरतखित्त । मंगण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामार्द्धे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शश्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशब्दघनोघा । प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासितचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवम्हा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोन्ने महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वम्हा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समोसरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज हु न बावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाम्हले, वसे पहाम्हा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतम्ही, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोम्हियो, लाखां ऊपर कोम्ह॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोम्ह ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलमी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण जूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन नाखित सिद्धांत सुद्ध अनुनव अनिराम ॥ १ ॥ बोधवीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परनव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संनारो ॥ ३ ॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन जूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुज आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय नली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर नाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रनु तादरे परसंग, वंदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रनु सुजस तुम्हीणो सांनल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ नगति जुगति करवानी ठे मुज सघली जोम, पण प्रनु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा मूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रनुजी एटली दूर ॥ आंखमली ???ओ करे जोयवा मुख जिनराज, पां

झली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटमझी वहतो कोई न मिले सेंगू साथ,कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाझे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रज्जुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण ज्ञरतना वासी ज्ञविजन पावन थाय ॥ साहिवनी तो सुन जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो बुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं बुं सेवक तुं ठे माहरो आत मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रज्जु करजो मोपरि महिर अठेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो बिरुद संज्ञालो निज सेवकशुं रुपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रज्जु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज्ञ उदयजिन चंद लहे नित प्रेम अज्ञंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्म ज्ञगते ज्ञणुं ॥ ज्ञेटवा पायकमल ज्ञाव हियमे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मशुं कूऊ अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अठे तिस्यो कर जोमि करि ज्ञांखियें ॥ अति सबल मुऊ हिये मोह माया घणी, एक मन ज्ञगति किम करूं त्रिज्ञवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगमे, रीश चटको चढे

लोन्न वयरी नरे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयमें नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने डुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, डुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रनु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, इस्यो वोढ्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवड नहिं अवर वा ल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांन्नलुं, वारवर परपदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय ऊलगुं, किम करुं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ न्नोलिमा न्नगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकमा जेम हियमे वसे ॥ ए ॥ न्नव न्नलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय न्नेटवा अति छणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आन्न कागल करुं, कीरसागर तणां दूध खमिया न्नरुं ॥ तुह्म मिलवा तणा सामि संदेशमा; इंद पण लखिय न शकें अछे एवमा ॥ १२ ॥ आपणे रंग न्नरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाम ने कोम प्रनु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुब्व न्नवि मोह वश नेह हुवे जेहनें, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल न्नम रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियरूे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गाम जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कझ सावझ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रन्नु पालशुं, छुःख न्नं रूार संसार न्नय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवरूी मारी न्नगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम रुद्धि वृद्धि, समृद्धि कारण, छुरित वारण, सुख करो ॥ नवरूाय वर श्री, न्नक्ति लान्नें, थुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रन्नु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १७ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान नपाय ॥ पांचमि तप न्नणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चनवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगरूे गहगह्यो ए, न्नवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सदह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, न्नगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोछ्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीनें सही ए, कोमू बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया वे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ भगवंत भाखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुभदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ वे कर जोमी भावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव भवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्गरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वींटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

भजीलणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति भली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पम्फपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरू अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुंदर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछे किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥
मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे ॥
दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेथुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान
समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ
प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण
पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोडी पास ॥
सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी
साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥
सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें
पेखतां मानुं, नव नवि छबिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥
भव दुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी
गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥
दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिले
नाहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु
मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे
रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥
किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें
तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा
ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा
रसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत
रों बावीशों, वदि वैशाख वखाण ॥ आगम दिन भले भावशुं,
गारी लात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खार
॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्या जी, हियर
हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर
खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनार
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न बते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ।
कुण सुरतरुथी ऊर्गिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ दे
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रनु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नवे
नवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा नगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ।
बारे परषदा बेठी जुम्मी, मागशिर शुदि इग्यारश वम्मी ॥ १ ॥ म
ल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अ
दीक्षा लीधी रूवम्मी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान
पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवम्मी ॥ मा०
॥ ३ ॥ पांच नरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे ति
हीज, पंचासनी संख्या परगम्मी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि
जेवम्मी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लान अ
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखम्मी ॥ मा०
६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ
॥ मौन तणी परि व्रत इम पम्मी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसे

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें धर्मी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावमी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग गुरु पाये पमी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकमी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्च रकाण करो श्रारवमी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो धाहमी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥१॥ सांत जपीने कीजे कांमा, सोइ कांम हुवे अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दारिद्र दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट२ के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावे, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही दु खियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचे, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक दुखेवा ॥ ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजे, भिक्षा हारी नांम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजे, नाम देव अरिहंत भणीजे ॥ सयल जीव हितवंत कहीजे, सेवक जांण महा पद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहै प्रभु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये त्रिगडो सेवीजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणै सिर बत्र धरावै, नाम जती पिण चमर ढुलावै ॥ अभय दांन दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापे, लछ धणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज पगठावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अदभुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक छै वडवीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वडभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन भायै ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, तोन्हा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पड़े जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आसातना चउरासी टालै, ताश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदोनी नाखै चांमड़ियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पियै कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावे, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखैं, नख गाल वपुपना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै छाणा वड़े हुंढणियां ॥ सूकवे कप्पड़ पप्पड़ वड़ियां, नासीप छिपै नृप भय पड़ियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथा ज कहै, इहां संख्या वैतालीस लहै ॥ हथियार घड़े ने पशु बांवै, तापे नांणो परखे रांधै ॥ ८ ॥ भांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरे छत्र ने मंडपमें वेसे ॥ पहिरे वस्त्र अनें पनही, चामर वींझै मन ठांम नहीं ॥९॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, भूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसाड़े उत्तरासंग न करे ॥१०॥

बांगो सिरपेच मोभ जोभै, दर्पणिये रमनैं वेले होभै ॥ सयणांसुं जुहार करे मुजरो, करे भेम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥११॥ धरे धरणो झगभै उल्लंठो, सिर गूंथै वांध पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावखि यां, पग झटक दिरावै डुखम्पियां ॥ १२ ॥ करदम ल्हुहै मैथुन भंभै, जू आवलि अंठ तिहां भंभै ॥ भघाभे गुभ करे वयदा, काढे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिन्दहर परनालनो नीर धरै, अंघोले पीवा गाम भरै ॥ दूषण जिनभवनमें ए दाख्या, देववंदनभाष्यमें जे भाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावग सगति छतां, आसातन टालै वारसतां, परमाद वसैं कोई थावै, आलोयां पाप सहू जावै ॥१५॥ तंबोल ने भोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री भोग हुआ ॥ भूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहिं वसै ॥१६॥ द्रव्यत ने भावत दोय पूजा, एहनाहिज भेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम भव्य प्राणी भाव आणी, विवेकी शुभ वातना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थंकर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ भवजाय श्री धर्मसींह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय, धनुष पांचसै ऊंची काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसैं ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार, ऊंची काय धनुष सो च्यार ॥ अभिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पद्म प्रभू पूरै मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय, देह प्रमांण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसे ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र
मांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण ध
नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, उंच प्रमांण धनुष
तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख
कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर
॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥
पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पेंतालीस ॥ शांति
करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥
सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अ
ढारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि
नाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम
मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवी
सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम
श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपे जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री
पारसनाथ, नील वरण सांढे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री
वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो
वीस, प्रणमें भद्र शम धरिय जगीस ॥ तां घर ऋद्धि सिद्धि उछ
रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन
देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरव आय ॥ बी
जो अजित जनु सूत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती
र्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो ॥ अभिनंदन पूरे
मन आस, आउ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम
जगदीस, आउ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थित

जांण, लाख तीस पूरब परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय, इक लख पूरब शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुनाथ तणी संभवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाण उदार ॥ दीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऋषभतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शंतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं२ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल बयाल हजार, षमधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोमि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणों ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नवणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल

प्रवतारं, पामीजै ज्ञव पारं ॥ १ ॥ ऋषज्ञ अजित संज्ञव अ-
ज्ञिनंदन, सुमति पदमप्रज्ञु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्र-
प्रज्ञू नें सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
थुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
जिन चोवीस ॥ जग वछल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम ज्ञरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, छठो
कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संज्ञूमि सनाथ ॥
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
नाम, बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र ज्ञरत
सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मऊार ॥ ७ ॥ सं-
ज्ञूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नरय निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीनो स्वयंप्रज्ञु जा-
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये
ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊगी ए
पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
पांच छठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नेर, चोथी आठमो, नवमो
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें ज्ञद्र, सुप्रज्ञु सुदर्शन,
आनंद नंदन शुज्ञ मती ए ॥ रामचंद्र बलज्ञद्र, बलदेव ए नव,
आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलज्ञद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उत्सप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत नणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण नावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह नव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत नव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखै ठता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय बारै टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी थई साठ लेखे इसै ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुणया तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंता सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, नय नंजण नगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन ऊलट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, नव नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचनमासे रह्या, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांमे शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुंमरगिरि तिण कारणें, जगति करो निरभीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलै, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मूंगरे, मुनिवर कोमा-कोमि ॥ पाज चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे वाघण प्रतिबूझवो, ते दरबाजे जोय ॥ गोमुख यक्ष कवम मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीमा जात्रा निनाणूं करिये रे॥१॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोमिसुं पूंमरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संते रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमी

॥ या० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पांम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संब प्रद्मून कहाय ॥ या० ॥ ए ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाष्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ तज्जंज गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश् ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इकतारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे ॥ जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण त्यागी, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारुं, तुं दुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिया साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ए ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजे, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसे, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, वीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोडी हो कहुं मननी वात ॥बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामीसमुद्र मझार ॥ दुख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वाम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ झंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काछलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ए ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्रथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही श्रावकी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामो आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ विस आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यांन

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फले, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री महा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिरतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंडक हुं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वेमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाता बे दोय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखे नर तिरि, निहचै देव ज थाय जी ॥ निज आउखे सम के ऊछे, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

रा स्वांम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्या हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काछलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण उधरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही श्रावकी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो लामो आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरभी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यांन

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी गांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिमतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंडक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वेमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजे, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखे नर तिरि, निहचै देव ज थाय जी ॥ निज आउखे सम के ऊंछे, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०॥ ॥ ८ ॥ आउ संख्याते जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९॥ पर्यापता इण पांचे ठांमे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण आगे, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी मांझी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए दसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परैं, जीव भमै संसार॥दोय गति नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग जाय असन्निया, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सापणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊपजै गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै, तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परजापता ॥ संख्याती जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरयां, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्ट भांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही कोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकरपद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ ॥१८॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहै, छठि देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्याते नर सहु दंमके रे, आवी लहे अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाऊ दंमक बे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आया आवे मानवी रे, सुख डुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखी आववे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरनें मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत जाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ति ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवे रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजे रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंडी तिर्यंच संख्याते आऊखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आठ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहे सरवविरति पिण मुगति न पावे, तेउ वाउथी आयो तेहनें समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहे अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवे दसे ठांमे, थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामे ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंमके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ बे जावे, विकलेंडी ते दसमांहि जावे पूठाही आवे ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंडी तेइंडी अने चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवै छूटकवार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अ-रिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर भगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरख सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥३४॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं॥

॥ अथ इरियावही मिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिडक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते क-रिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

श्रया, बावीस रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत अपज्ज-त्तग वखाणया, विगल तिय ढह न्नाल ए ॥ जल थल खचर भुयंग, उर, पण इंद्रिय तिरि अरुपाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद भेदे करी जाणो, पज्जतय अ-पजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविपिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंन्निय दस रे नव लोगंतिक जांणिये, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणिये ॥उल्लालो॥ वखाणिये दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपजत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचन्नरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीये असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणयवत सहीए॥मेरुपिण पारवती चारि ए खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए॥ ४ ॥ हिम-गिर सिंहरीय दाढ चीथारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासे दीप उप्पन्न अन्तर धरीए ॥ बोइसै भेद इह आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अन्निहय आदिक दस गुणित करीजे तेह ॥ पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागे दोसै दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह इइ-सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितकर आण ॥मन-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-असी निःसंक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संन्नाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखे छगुण न्नाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिच्छामि डुक्कडंदेई न्नविक तरया न्नवजल निधिकेई ॥ तरे अछे वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करे आतम करि निरमल ॥ सं मुखन्नाषे वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जे ॥ मानव जनम सफल इम कीजे ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ न्नवजाय लक्ष्मी किर्ति सीसे जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लन्न तवन करि इम संथुणयो न्नावे करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिच्छामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु-तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त न्नंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले ऊपजे विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ काले गर्भ धरे जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसूत रे ॥८॥ काले दूधथकी दही थाये, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे वे वाक रे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बार चक्कवे, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पणी आरा, छे छे जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥११॥श्री०॥ काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्धपणे दुय बलिश दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करे रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निस्संक ॥१३॥ सुविवेक विचारी जुओ रे वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वांझणि न जणे बाल ॥ मूछ नही महिला मुखे जी, करतल ऊगे न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सभाव नवि संपजे जी, किमह पदारथ कोय॥

अंब न लागै नींबमें जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपं ७ कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ कांटा बोर बंबूलना जी, कुणें अणि याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकें नित वसै जी, मणि हरै विस ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल ॥ १८ ॥ ॥ सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरे जी, बूडै काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परे सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरमें करै विरेच ॥ सीझै नही कण कांगमो जी ॥ सकल स्वन्नाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी, भुंयमां थाये पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वन्नाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो ससि सीयलो जी, न्नव्यादिक बहु न्नाव ॥ ठए इव्य आपापणा जी, न तजे कोइ सुन्नाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै बापमो रे, वस्तु स्वन्नाव अकज्ज ॥ जो न होय न्नवतव्यता जी, तो किम सीजे कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो न्नावी न्नाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोडि यतन करै कोय ॥ अणन्नावी होवे नही जी, न्नावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरया केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम न्नवतव्यता जी, जिण जिण दिसे न्नजाय ॥ परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्यूं जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करे जी, किम राखीस रे प्राण ॥ आहेडी सर ताकियो जी, ऊपर भमे सींचाण रे ॥प्रा० ॥२९॥ आहेडी नागे डस्यो जी, बाण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सस्त्र हण्या संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जो, राख्याही न रहंत रे ॥प्रा०॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वभाव नियत मति कूडी, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ कर्में राम वस्या वनवासे, सीता पामी आल ॥ कर्में लंकापति रावणनुं, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर ॥ कर्में नर गुणवंत ॥ कर्में रोग सोग दुख पीडित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्में वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में जिनने जोउ निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥चे०॥ कर्में एक सुखपाले बैसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जग हींडे हाहूतो ॥ कर्म वशी ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो ममकोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीये आपणूं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया, कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चाढियो घन मान गजै ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारे असमत्थ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि करथां विना ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पडै कोलियो ए, मुखमां देपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दढप्र हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै२ सरवर जरै ए, कां करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोडै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय रसे जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचे समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूझै ते राजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण, जीते सुन्नट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वन्नावे पट उपजावे, काल क्रमें वणाई ॥ न्नवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम न्नोक्तादिक, न्नाग्य सबल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥५४ ॥ नियत वसें हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज न्नवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ न्नवथितनो परपाक थयो तब, पंमित वीर्य उल्लसियो ॥ न्नव्य स्वन्नावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमांन जिन इण पर वीनवे, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रन्न मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ थंत्रणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी न्नाव अपार ॥ चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम न्नव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै, अठम नांम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल ध्यांननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अडिग ध्यांन धरै ॥ २४॥ हिव अनिवृत करण नवमो गुण जांणियै, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणें उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करै किणही परे, तो थावै अहमिंद अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडै ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेडो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकर्म क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहनें जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरै श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी गर्भित परगट वात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरबकोडि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चऊदमे गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाभे पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर बाहड़ मेरु मंडण, सुमति जिण सुपसाउले ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, भेद आगमनें भले ॥ संवत सतैरेसे छवीसे, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहे मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदे गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा भाखा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सतावन बारै चौ नव क्रम भेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छविह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदे गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदें होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए प्रत्यक्ष लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन षट् ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगिंदी पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षट् पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना त्रिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विभेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव ॥६॥ चलण सहाई धम्में थिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल ॥७॥ षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आ तप ने उज्जोय ॥ ए ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तित्थंकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पज्जत्त प त्तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसैं त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मित्थ थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एकेंद्री वि ति चौरिंदी तेय, कूखगई उपघा अपसत्थ वसा चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढ म संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप त तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरै गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय तिम जोग बायालीस सेव पच्चीस क्रिया संजों

ग ॥ काइ अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं
नकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वत्ती
तेम,, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि
य ने सत्थि सहत्थे नेद, आज्ञापनकी वेयारण अणाजोगा तेद ॥
१४ ॥ अणव कंख पच्चयना नवनंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव
ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म नाव
ण चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ
रियां नावा एषणा सुमतीना नेद होय, आदान नंम उच्चार नि
स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जांण, हि
व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ नूख पिपासा
सीत उसन मंस निरवस्थ, अरति जोषा चरिआ नैविधा सिज्झा
सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलान्न रोग त्रिण फास, मल सक्कार य
न्न अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव
संजम सम्म, सत्यं सौच अकिंचन बंनचेरज इ धम्म ॥ पढम अ
नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर न
वि नावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुन्नाव बोध डुरलन्न इग्यारम नाम,
धरम साधक अरिहंत ए बारे नावना नाव ॥ सामायक छेदोप
स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चनत्थो जोय
॥ १९ ॥ तिम अहरकाय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु
विधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारे विध निर्जार तत्व बंध
ना च्यार प्रकार, प्रकृति हिई अनुन्नाग प्रदेस नेदें निरधार ॥२०॥
अणसण ऊणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सलीनता
बाहिर तप षट नाग ॥ पायछित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय,
ध्यान कानसग अन्यंतर तप षट विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु
नाव काल अवधारण थित निरबंच, अनुन्नागे रस तेम प्रदेसे दल

मो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र कर कुंन्नकार न्नंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामनां न्नाष्या जे जे न्नाव, तिम ज्ञानावरणादिक अष्टना एह सन्नाव ॥ इम संखेपे विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावें पाम्यो वरण वस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो बठो अंतर जाण ॥ न्नाग सातमो न्नाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥ ए नव न्नेदें न्नावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी बे जे पदेअविनान्नाव, व्योम कुसुम तिम स सिक शृंग जिम नहीय अन्नाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तें कायक सन्नी असन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न इव्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम न्नाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां न्नावें नहि सिद्धां अंतर जोय, सरब जीवथी न्नाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने बे ते कायक न्नाव, जीवत्त जेहनें वलि परणामक न्नाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी न्नाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निच्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त न्नेद पमिन्नेदें विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुन्न सदन प्रकास नदी ऊपमान,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वूरुसाखानी पमिसाख ॥ ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे विनाऐं गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा जज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व जाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रूपज्ञादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंमक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गप्नधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंमक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवे, गणनाये ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केहिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संखेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुचो हुं तेहथो कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गप्नय तिरि वाउ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंमक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

प्रमाण, भाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गब्भय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह ऊंचै आकार ॥ आरंभ कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगुलनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साभावकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्ष एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो थावर सुर नारकनी माल ॥ गब्भय नर तिरनें षट् विगलनें छेवठ एक, सरब जीवनें च्यार दसेससाये लेख ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट् सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह धयसूईमसूरनी चंद आकार, वणसइ वाऊ तेऊ भू बुदवुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गब्भय षट् नर तिरि होय, वेमाणिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्या ने च्यार, दार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण गब्भय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव ॥ दिठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंसण होय, चौरिंडी ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजने च्यार सेस दंमगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गब्भय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरै जोग, मनुजे ... रै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायनें पांच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवनें नव उपयोग ॥ विगल डुगे पण पन्न चौरिंडी थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या चवण पपात, गप्नय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ, वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरस पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणवास दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ नुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अमंस वेमाणियं जोइस धार; सुर नर तिरि नारगनें पट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अढारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय उए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सव मझार, दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्नय मणुजनें दोह कालकी सन्नां होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पज्जत्ता पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजे तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि नर तेम, पज्जत्ता न्नू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥ ए सरवेमें निश्चे सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गप्नय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर उपजे न हुवे सेस, न्नू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजे असेस॥ पुढवाई दस पयमें न्नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेज वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१ ॥ वेइंदी तेइंदी पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पाम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता भिनै सिद्ध अनंते रूप अभेद॥संसारी थावर इम तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ

तेने वण स्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटा पालेवो पाषाण ॥ ओफल तूरी उस भूमि पाइण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विछेद ॥ भूमि आकास उस हिम करग आकुना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा फाला ओभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उभ्रामगउकलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गूंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि सेवाल, भूंफोडा अद्दत्तिय लरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ कांटी डाले भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाव पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गाल फल मूल काठ बीजे जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुर्त्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोको लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला जलिगा लटनी जात, चंदन का अलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय वाहाक्रम पोरादिक बेइंदी होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक इली घीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कृम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, इली कंथुक इंद्रगोप तेइंदी एह ॥ बीछू ढंकण भमरा भमरी इंदी च्यार, तीडा माखी डांस मछर कसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला माकडि पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंदी च्यार विछेद॥

घम्मा वंसी सेला अंजन रिठा जात, मघा माघवई नारग ए नाम सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिरयंच, मच्छ कच्छ सुसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि भुजचारी साप भुचारी तेह, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय॥१२॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेरू कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरबे जल थल खचर समुछम गप्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मणु जोय॥१३॥असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ, जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु तें दिठ॥ पनरे भेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार॥१४॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण॥अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय॥१५॥बि ति चउरेंदी अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण भास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमांण, तेहथी अरध२ ऊंचा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जोयण सहस गप्भय मच्छ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त भूचारी पंखी जेह खेचर नव धणु उरग भुयंग जोयण नव होय, नव गाउ परिमाण समुछम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरू गाउ ऊंचास चउप्पय गप्भय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमांण ॥ भुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहिंदै षट ब्रह्म लांतक पांच, शुक्र स हस्सारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथे तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुत्तर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय भू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बा बरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंदी तेइंदी चौरिंदी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेत्तीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिय मनुजनौ तीन पल्योपम श्राय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कोसे पुव्वकोमि, पंखीने इग भाग असंख्य पल्यनो जोम़ ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसे अंतमुहुर्त्त नियम थिति तेह, इम भगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंडी आपणी काय, उपजे चवे अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवछर विगल आपणी देह, सात आठ भव पंचेड़ी तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उद्धवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंड़ी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जीव प्रयोग जिय मरणों होय ॥ भोम सायर संसार अपार अनंती वार, भमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवदं लख सूत्रे साख ॥ भू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चो पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत भंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धांते सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी भाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिनलाभ सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहूं अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ जुवनपति वीस इंडे मिळ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ऊ दस वेमाणिय जुडथा जी, चौसठ इंड सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन सम जाग ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुज्ञ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर द्दिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुह्प पंच वरण जरध सुखै जी, वरषए जाणु प्रमांण ॥ जवणवइ देव त्रिगडो जलो जी, करय ते सुणज सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-तणो जी, सोवन कांगरे सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ए ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जींत ऊंची धणु पांचसै जी, सवा-तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ एक श्रम नदिय चढतां थकां जी, एक कर ऊच विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, ऊच

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसे जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमाण ॥ कुसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें फाकफमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंदुन्नि नाद उपदिसें जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखे सहू ॥ दीपे असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखे सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी, जगवंत उपदिसे बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणें करी, गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी जुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊन्नी सुणे ॥ अिहूंत णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मह्नर छोम ए, नूख त्रिस विसरे सुणे कर जोम ए ॥ १९ ॥ पूठ जामंमल तेज प्रकास ए, जोयण सहस ध्वज उंच आकास ए, झलहले तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु प्रथिय पहिले गढे, दोय पगथार नर नार उंचा चढे ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचे, मणिमयी मांडिलो प्रोल

माहें वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंवरु पुरुष खट्टंग अ र्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठांम ए ॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह ध धन धन्न अवतार पायो तियै॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सरदहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसायर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखे नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजारी कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे, मुझ ऊपर महिर धरीजै, दिल रंजन दरसन दीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भवरना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसै मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ॥ ४ ॥ समरचा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुझ

आतम पुन्य न्नरावे ॥ रु० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजे, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणीजै ॥ रु० ॥ ६ ॥ प्रनु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ रु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रनु पंचम आरे, वीस माहा नय संकट वारे, सहु सेवक काज सुधारे ॥ रु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोन्न सवाई ॥ ॥ रु० ॥ ए ॥ नान्निराय कुलंबर चंदा, नव जन मन नयण आनंदा, लगे सुर असुर सुरिंदा ॥ रु० ॥ १० ॥ जयकारी रिषन्न जिनंदा, प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन न्नक्ति सूरिंदा ॥ रु० ॥ ११ ॥ इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंमण गुण निलो ए, तवन करिस प्रनु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी बै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लन्नै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूठे नूपतिनें कह्या ए, करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै वृषन्न उदार, धरणी जिण धरयो न्नार ॥ ५ ॥ तीजे सिंह प्रधान, जसु बल कोय न मांन ॥ चउथे देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमैं पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठे दीठो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो नृप उदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर उत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम उगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुरक अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥१६॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी उगो दिवस उदार, घर२ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान १९

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रभु रहतां काल सुखे गमे ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तव लोकांतिक देव जणावे अवसरू ए, देइ संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सव मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरे महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गोमीपासतणा गुण जे नर गावे, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावे ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावे, चोर धाड संकट टले विघन घुराइ न आवे ॥ २२ ॥ धरणराय पउमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोले, श्री गुणशेखर सीस समयरंग इण पर बोले ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिअ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोम्हि लाख पचास ए, सागर जिनसासण भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, इक्ष्वाग सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, त्रिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहिं जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ नयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आंणंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उछाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥ ए ॥ हिव हथणापुर ठाम ए, विश्व सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवत रयो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणै कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणा हिरणला ए, वन सिंहे वीहै एकला ए॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी तहि राग सु रंग ए, पिण भाखै लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो स सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणा ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल छल आँ यण जोगवे ए, पीय राज भलो पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त णें मंरूल समें ए, पंचास सहस वरसां गमें ए ॥ तो तेजै दिणय र जिसा ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसा ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छ खंड ए, वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मोमबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम ए, भिन्न
वे नमें वे कर जोम ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस
सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला
वण्य लीला भरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह
स अंतेउरी ए ॥ २१ ॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
यण भंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमांण
ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस
सहस पचवीस ए, सव पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं
तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
सार ए, बिहुं लीधो संजम भार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर
ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन झाण
समाण ए, बिहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम-
हिमहि ए, बिहुं चौतीसे अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण
ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,
बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
गुण गावे सुरवहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, बिहुं
पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग
न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार भुवन भरी ए, बिहुं
सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं भंजी भव फंद ए, बिहुं उदयो
परमाणंद ए ॥ २ए ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर
तरु समो ए ॥ थुणि अति संऊ विहाण ए, तिहां इह परभव नवि
हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उच्छव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय
हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज भुवण
रयण ॥ ३१ ॥ इम भगते भोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय नणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन नवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण नपदिसी जी, सिव सुख तणो नपाय ॥ नविक जन धर श्रीजिन नपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ न० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण मुहपत्ती तणी जी, नाखी है पचवीस ॥ तिहां ए नाव विचारिये जी, इम नाखे जगदीस ॥ न० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ न० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ न० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनान ॥ नव अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमान ॥ ५ ॥ न० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ न० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-धार ॥ न० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जांणनें जी, तीने दंम विशुद्ध ॥ न० ॥ ८ ॥ पमिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पमिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ न० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज नय शोक डुगंबना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ न० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ न० ॥ काढ सल्य तीन नरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विरावना जी, चरण विन्हे सुद्ध दोय ॥ ए पडिलेहण भंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥ इम पडिलेहण जे करे जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरे करे जी, पांमें सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहे सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, सुखथकी ए संमही ॥ मुंहपती पडिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणो, जास परसाद उपगार थाये घणो ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकित अने विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करे, जिणथकी जीव संसारसागर तिरे ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइये, जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसे पाप जे कीजिये, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजिये॥३॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुखे करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥ कूदतां गर्वतां दोष हिंसा जिहां, दर्प्प इण नांम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणततां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथो आकुट्टिपा दोष कहजे तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण-तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमड्ढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंडित थायै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपडिलेह्यां पुरिमढनो तप धार, गिरतां एकासणनें गमतां चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमड्ढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदे मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चउरेंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु बि ति चौरें-द्रिय हण्यां बि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावडा कीडी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै आलोयण जोइ, बहु पंचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुण दे सीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें लकडी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें छठ विचार ॥ साध समक्षं लोक समक्षं राज समक्ष, कुडा आल दियां डुइ चौथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंडायां तेम मरायां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवडना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतीने पोस ॥ करीय डुआलस चार हजार गुणो नव

कार, मिच्छाडुकम् देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इकर आंबिल आचरे ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगे आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छुरी, आंबिल चढता आदरे ए ॥ १८ ॥ जीव करावे युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमादान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकल्पादिक, चिहुं भेदे चढता लिख्या ए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दान ग्रुं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत लागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाडि कदाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधुअने श्रावक पोसाध, एकेंद्री सच्चित संघट्टे कीध ॥ वीसर भोले सच्चित जल पी

ध, दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रै, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रै ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम नुंधै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठीकी राखै, व्रत पच्चखांण करै षट् साखै ॥ दोषे मिच्छामिडुक्कम दाखै, आलोयण लेतां अभिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ एकांत पूछै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीप्रमासिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुष भानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत, वलयाकार विराजै रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर गाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अभिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस दस जोयण, उवरि सहस कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे वि विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै २ इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर सा खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुगामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उछव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवेरे, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ वाव२ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्तंगे, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥ ९॥ वाव५ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रूड़ारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसै, कह्या नही ए कूड़ा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, वस२ सहस विस्तारारे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारया रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणे रे ॥ जिनपडिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणे रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभुना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भरू जीपे रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाभिगमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेके, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहां ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारे तारे कर उपगार, किण२ गामे कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहे द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरे करमाभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूद्वीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र । उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण बिहु करमभूमी छ अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ वावीसलै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचे कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधरस्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पच्छिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो वाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पच्छिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ पिहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छै जिहां, इण-हिज नांमें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजें दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पच्छिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज२ मेरुथी मांभिने,

देखो चिहुं दिसि दीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषभानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि गाए, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंद्रानन जिन, पछीम धातकी मांहि ॥ विचरै च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछांहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूडी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पुखरवर अति सुखकार ए ॥ उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगे ॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगे ॥ तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजै, धात-की खंड जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधे पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पछिम विद्युमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो देत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही ॥ बार २ कहतां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ उ० ॥ सुविचार बाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरवे पुष्कर अरध मांहे, सरब जीव सुखंकरा ॥ २१ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन सेतेरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ॥ देवजसा उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ज० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध मांहे, कह्या पश्चिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरब लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उत्कृष्टे भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ ज० ॥ जिण लहे पांचै तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहा पिण छे जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसे जिन गुणगेह ए ॥ ज० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए ॥ चौसठि इंद्र नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजे तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए ॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमुं बे कर जोड ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह धरि धर्मसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं ३॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच-

रता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाज्ञाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र ज्ञणी ऊमहेज्यो, तुम्हे नरज्ञव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथी मांहे गाजे, आबू मारूमे देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे लागो, ऊंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावे, निरखंता विपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो ड़ुंगरियानो राजा, एहनी है बारह पाला रे ॥ जा० ॥ २ ॥ षट ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा ऊाऊा, जिहां तिहां वनवेढया आऊा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ ज्ञार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवे, फूलमानो रंग सुहावे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर ज्ञूमि विसाला, देवलहीग रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्केसरि देवी सहाई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाम वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जीतो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंमायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ ऊीणी२ कोरणी ऊेरचो, दल मारवण लेम ऊकेरयो रे जा० ॥ नवी२ ज्ञांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया ऊिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ऊत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ ऊगणिस कोम्म सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोमीने आगे, मंत्री जिनवर पाय लागे, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठे चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवम कोई, ज्ञूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ से

हवो जिणहर पासै, वार कोमनी लागति नासै रे ॥ जा० ॥ देरा णी जेठाणी, आलानी अनव कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देव ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाम्हो दीठे, ते तो लागै नयणै मीठेरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आ गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा न्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते धातो, झिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥जा०॥ मण चवदेसै चम्मा लौ, जिण बिंबनो नाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली नोम सोनागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करे मन नावी रे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० ॥ साहमी वन्नल कीज्यो, जातफलीनो जस लीजो रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषनानन ब्रधमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि णा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिनुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस ब्निन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमत्रीस सहस सत साठ अछै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक वखाण, चउ४ चेईहर साठ सवे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसें चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसे सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सही ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुख, इग्यारेसे सत्तर सुक्ख ॥ कुंम त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणियें रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणियें॥१२॥ त्रिण लाख सहस वलि त्र्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवाले सव मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्खा रे, दोयसें निव्यासी कयरुक्खा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे, अमवन लख अधिके जोमी ॥ छत्तीस सहस अधिक कहीयै रे, प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ९ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजे प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारषी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाजिगम प्रमुख मांहि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी॥४॥वि०॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, चिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुफ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥ प्रजूजी विराजै रे सूरत बिंदरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवच्छ सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रजु देह ॥ २ ॥ ज० ॥ विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन जाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, कुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित थिर दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत ज्ञाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भरावियो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अगारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी तसु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेरमी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हांरे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्ये कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव थास्ये महारी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथ जो, उलचस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छे दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नहीं सिद्ध जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हांरे कांइ कूढुं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजांमी जीवन प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक जगत वछल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुफने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उन्नोगलो रे लो ॥ हांरे कुण जांणे अंतर गतिनी विण माहाराज जो, हेजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखमली अणियाली कामणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुफ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारया भोंयरा रे लाल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरू रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥म०॥ लक्ख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खेतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद त्रीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियंतरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पेसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाड्या तम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजे जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजे रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजे, म्हारो मनमो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापै, पिंड भरे ते पापे रे॥ आप आपणा मांहि आलापैं, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आतम उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगैं, सिद्धरमणाने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोडाकोडीमें भमतां, तुझ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, स्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीझै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार ॥ ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम भोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्ते भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अभेद॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, नास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अभिलाखीपणो रे, कर्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ए ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमी वीनवुं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूम कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीगं दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुस्क ॥ परदुख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुस्क ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखे जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकाले दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीठे नहीं जी, गमरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धमर सहू कहे जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, शंसय पमयां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

भमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कु० ॥ ए ॥ भग-
वंत भाष्यो ते किहा जी, किहां मुफ करणी एह ॥ गज पाखर
खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ कु० ॥ १० ॥ आप
परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो
जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी,
तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाडिया जी, किहां जइ करूं
पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-
विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कु० ॥ १३ ॥
सहज पड्यो मुफ आकरो जी, न गमें भूंडी वात ॥ परनिंद्या क-
रता थकां जी, जाये दिन नें रात ॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखे धंदे पड्यो जी,
नरके करसी रीव ॥ कु० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो
हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख भली दिये जी, तो मन आणूं
रीस ॥ कु० ॥ १६ ॥ वादभणी विद्या भणी जी, पररंजण उपदेश
॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कु० ॥ १७ ॥
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक
मनमांहे ऊपजे जी, मुफ मरकट वैराग ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रिविध
२ कर उच्चरूं जी, भगवंत तुम्ह हजूर ॥ वार २ भांजू वली जी,
छूटकवारो दूर ॥ कु० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा
आरंभ कोडि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोड
॥ कु० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंड ॥
कूड कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंड ॥ कु० ॥ २१ ॥
अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा
जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही
जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कृ० ॥ १३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोज ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज ॥ कृ०॥ ॥ २४ ॥ लागया मुऊनें लालचें जी, रात्रीजोजन दोष ॥ में मन मूक्यो मादरो जी, न धरचो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण जव परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कडं जी, जगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी; प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ वाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार है एतलो जी, सरदहणा है शुद्ध ॥ जिंनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषजदेव तूं राजियो जी, सेत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रजु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥कृ०॥३१॥ ॥कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा, करजोमि आदिजिनंद आगें पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें॥३२॥इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रुषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

रुषज जिनेसर प्रीतम मादरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जांगे सादि अनंत ॥ रु० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट ज्ञक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संज्नवे रे, मेलो ठाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुऊ नांम ॥ पं० ॥ ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, ज्नूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुज्नव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्के विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अज्निमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्र वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए निजमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित से वक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ ॥ मत२ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलुं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुज दरिसण जगनाथ ॥ धी गाइ करी मारग संचरुं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस ण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम भाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल भ सुलभ कृपायकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥ ६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता वीक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता उनय विलक्षण, एक ठांमे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
नयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण नावे रे ॥ प्रेरण
विशु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता
मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु नं
ग त्रिनंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न वाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज
नी वासर वसती ऊजम, गयण पायालें जाय ॥ सांप खायने मुखडुं
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
अनिलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अन्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं
चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
घरनें हाथे, नावे किण विध आंकूं ॥ किहां कणे जो हठ करीहटकूं,
तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांहे ने सहुथी अ
लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समजावे,
समजे न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छे नर,
एहने कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं उराराध्य तें

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ लुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोम्हि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया दुरक अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुऊ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णातणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल, नगर व्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विखमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आलेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आलेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमा-कल्याण ॥ आलेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे॥ तीन कमल मुझ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निसदीस, इम मन आणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं छाजे रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखे रे ॥ नगर मंडेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद मुणिंद, वांछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडी चाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई उतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पाणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महा-राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो उमही, गो० ॥ संप्रति क-रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवडो, गो० ॥ सगली

प्रीति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देखलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उछाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाल्हे माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सधीर हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करे, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥गो०॥वा०॥ ७॥ इति पदं॥

॥पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥१॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरांमी रे ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३॥ इति पदं॥

॥ पद ६ ठुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन भाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज हे, भवदुख ताप मिटाय॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितमांमें लागी है चूंप ॥ सवाइप्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखरूी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीवो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो य घरूी सुप्रमांण ॥ स० ॥ जगतवछल जल जेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंद्रनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घरूी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयरूलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितरूो लीधो जिम तिम करिनें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो जवर चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थायै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥४॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवरू सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गच्छपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीनै मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतरजामी, पूरब पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाणयो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभुजीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताहरो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥१॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका कांइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वालहो प्रभु, थांरे सेवग कोड ॥ म्हारे

हूँदिज साहिबो कांइ, वंदू वे कर जोम, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फळ्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजे ॥ दीजे २ जी माहाराज, कारज सगला सीके ॥ ए आंकणी ॥ मुऊ मन भ्रमरतणी पर मोह्यो, बेमायो नवि छूटे ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रनु तुमने, न हिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरते, जाणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रनु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छे बहुला, मो सरिषा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही नाखूं ॥ अमृत जेम लही तुऊ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुहानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण मति उपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणे किंचित गुण नाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुऊ गुण लायक, त्रिनुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर परब उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंमायो ॥ लान उदय जिनचंदने प्रनुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रनु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिन२में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जांणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिव इण भरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥५॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे वीर० ॥६॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसरया, भला गुण भरया रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्ध तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, ऋद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंडल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं वंदेनी, विमलाचलगिरि जइहुं रे ॥ आ० ॥ सुण वंदेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम भांखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणगिरिवरियें काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छेडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुहावें ॥ कोडि भवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें भुलग करस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भवसायर निसतरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ भदे ए गिरि वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युय गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, भले में भेव्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चखाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण उलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से हथ देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो सी सफल मुझ आस ॥ पक्ष मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइयार ॥ प्रजुनो मारग देखतो जी, वेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रजुजी कां न पधारसी जी, मैं निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्यूं पारणो जी, हूं प्रजूने पमिलाज्ञ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आज्ञ ॥ ज० ॥ ए ॥ अवसर ऊठ्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत्त ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते इम कहे जी, कांइक जिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू ऊरने बाकला जी, प्रजूने आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्रजू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुन्नि जी, जै बोले कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोबारे कोमि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, मैं वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजादिक सहूए कहे जी, धन२ पूरणसेठ ॥ ऊंची करणी तैं करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तदे जी, वाजित डुंडुन्निनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अन्नागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंमल ग्रांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ मैं किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निरधन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज०॥ १८॥ स्वामी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १ए ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछे जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण थाल्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घमी एक सुर डुंडुन्नि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहितो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुझनगरमें थापियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कमं ॥ १ ॥ अरिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु० ॥ २ ॥ सात लाख पृथवीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चवदे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार२ प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

वियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध१ करवोसरूं, डुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेळ्यो कारमो, की धों क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोन्न में कीया, वलि राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूम कलंक ॥ निं द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाम्री की धी चोतरे, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, न्नलो आं एयो न्नरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकोने न्नव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिम्रीमार न्नव चिमकला, मारचा दिन ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर न्नव माछला, जाल्या जलवास ॥ धीवर न्नील कोली न्नवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने न्नवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालन्नवमें किया, आकाराकर दंम ॥ बंदीवान मराविया, कोरमा उमी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने न्नवे, दीधा नार की डुख ॥ छेदन न्नेदन वेदना, ताम्रना, अति तिख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंन्नारने न्नव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीन्नव तिल पि लिया, पापे पेट न्नराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने न्नव हल ख म्या, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूमाने दान किया घणा, दीधा बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने न्नव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही आंगमी, न्नरया अधिका न्नार ॥ पोठी ऊंट कीमा पड्या, दया ना वी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छींपाने न्नव छेतरयो, कीधा रंगणपास ॥ अगनि आरंन्न किया घणा, धातुरवाद अन्न्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर पणे रणजूऊतां, मारचा माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण न्नख्यां, खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

ठलंञ्या ॥ आरंन्न कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संञ्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, घरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूमा कोसञ्ज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली न्नव ऊंदर गिळ्या, गिरोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे न्नवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ न्नामन्नूजातणे न्नवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंन्न अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, कीया पाप नदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमान्मिया, रोदन विखवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने न्नागा, मूल अने नत्तरतणा, मुऊ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे न्नवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवमे दूषण घणा, वलि गरन्न गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत न्नंजाया ॥ ते०॥३०॥ न्नव अनंत न्नमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणन्नव परन्नव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुऊ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहम्मदावादे पास ॥ गोमीचो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुन्न वेला शुन्न दिन घमी, महुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्टा जांण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला, मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥
कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥
४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥
वनी भूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥
गंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि
नर केरी प्रतिमा, सेवग तुऊ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ महक्क
ने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठगो
ठे जे, टका पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा
स मुरझिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी,
ाव धणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुऊने मिल
पे, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु
हे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकमों, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुह
ातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा
व दे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥११॥
ाल्लीरात परोझिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संभ
ावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास
तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥
पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी॥ जतन करी
पहुंचाडे थांनक, प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुऊने
होसी बहु फलदायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना
पाया, प्रदक्षीने गुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देहने सुर चाल्यो,

आपणे आनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, ईमे तुरकने ओतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिल क निलारू जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे वहु लारू जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुऊने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुऊ आपे, तो मोल न मांगू फेर जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १ए॥ गादी रूऽी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ नछव दिन२ अधिका थाये, सत्तर नेद सनात्रो जी ॥ गांम२ना दरसण करवा, आवे लोक प्रनातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो नंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अनंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी ऊजाम ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥ ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुऊने मुऊने जांण, संका छोमी काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषेंन्न जोतरे ॥ पारकरथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनइ विमासण थइ, पास नवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुटको कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंमावुं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी उलटस्ये खांण॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुत्त, अमृत जल निसरिस्ये कूंत्त ॥ खो राकूआनो इह सहनांण, भूमि पड्यो छे नीलो छांण ॥ ३० ॥ सि लावटो सीरोही वसे, कोढ पराभवियों किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो॥रोग गमाडुं ने पूरुं आस, पासतणों मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया तेडवा॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांड घृत चूरमो॥ घडे घाट करे कोरणी; लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंडप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी ईंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पबासण वेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान; एकलमल वगडे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अछे, यात्र करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विडारण जड जग, तेहनो अकल सरूप॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुड गोडीपास जिन ॥ आपे अरथ भंडार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार; मारग चूकां मांनवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे न्नोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार उतारे लब्बी वरे ॥ ४३ ॥ दोन्नागीने दे सोन्नाग ॥ पग विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेहने धे ठांम ॥ मन वंछित पूरे अन्निरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने धे आधार, न्नवसायर ऊतारे पार ॥ आरतियानी आरत न्नंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां साद दिये जक्खराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि प्रकाश ॥ गूंगाने धे वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो दातार, न्नयन्नंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेमीतणा, श्रीपार्श्व नाम अक्खर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्खर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध दूरे टले, डुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा न्नय चूकवे, विष अमृत उपकार ॥ विषधरना विष ऊतरे, संग्रामे जय जयकार॥४ए॥ रोग शोग दालिद डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजततू २ ॐज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्खर जपंते ॥ न्नूतने प्रेत ऊोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ डुष्टा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डुन्नपंते ॥ गन्नबंधन व्रणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी ऊाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंतें ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोजावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंतें ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाजय हरे कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रजु, श्रीपास जिण नाम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, जमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समसा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणजत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लप्रामो ॥ नहि कोइ जव हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वुच्चं ति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शासनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रजु ॥ मंगलं स्थूलजद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव ज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्द्दढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयो सुजे ॥ एसो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च स

कोसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य नस्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा स्तोत्रं संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोडि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहर शोभ, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोभ ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आ चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते क हिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमा रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल,

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गे, अहो जव्य लोको जुला कां जमो गे ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गे, पड्या पाश मे जूतमाने जजो गे ॥ सुराधेनु छंमी अजाने अजो गे, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो गे ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम उपामने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रजु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना डरक दालिड दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुपोने वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ जजो जगवंत तजो हष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदय रत्न जाखे सदा हेत आणी, दयाजाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आंज मोतीअर्फ मेह वूग, प्रजु पास संखेसरो आप तूग ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंगित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ जूत प्रेत नवि मंडे प्रांण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयजयकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पम तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वारू विलसे वंछित कोमि ॥ महियल मांने मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥९॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रजात उठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए॥ १ ॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी जरतनी वहिनमी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रुषज्ञ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उमदना बाकला वीर प्रतिलाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, संजम लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरजुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो कां मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कूं आथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुजद्रा चंपा बार उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांम्वरायनी कुंता नांमे कामनी ए, पांम्व माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप तां पातिक जाए, दरसन उरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पम्यिां शीलज राख्यो, त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न जापे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर जणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ पृथ्वीकूख रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ वतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विवुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रजु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव तार, जये गुरु

त शुद्द हैमे राखजे, बोल विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, ऊघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम गम खरचो वित्त, पर उपगार करो शुज्ञचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चार आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण जव जवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥ ॥२०॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये जवनो ठेह ॥ आठे कर्म पमे पातलां, पाप तणा ठुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥२२॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पजणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंत करवि निसुणहु जो जविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥जंबूदीव सिरिजरहखित्त खोणी तल मंमण, मगहदेस सेणियनरेस रिजदल बलखंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुजूइ तत्त्र तसु पुहवी जज्जा ॥२॥ ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपामिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमामिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयवाल्यि ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल जीत इत्र गुण मेल्या संचिय ॥ अह वा निच्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंग रतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नर र कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र गात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव ज्ररह वासंमि खोणीतल मंमण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वरगाम तिहां, विप्प वसे वसभूइ, सुंदर तसु पुहवि जज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानिला, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥ जास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठा जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिज्ञुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइठा ॥ ए॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुंडुभि आगासें वाजे, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्र मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंमक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उपम दी

जें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण वहु सुक्क कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ न्नास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदन्नूय न्नूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन न्नूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंन्न ॥ तो दहदिस देखे विवुधवधू, आवंती सुररंन्न तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंम ध्वज, कोसीले नवघाट तो ॥ वयरवि वर्जितजंगुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रन्नु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विलास तो ॥ एह असंन्नव संन्नव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोला वइ त्रिजग गुरु, इंदन्नूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेमे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, न्नगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिन्नूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आन्नास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे न्नुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदन्नूइ इंदन्नूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेमे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्झायमनें, गोयम न्नवहिं विरत्त ॥ दिक्ख लेई सिक्खा सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ न्नास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य न्नरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें असिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५ ॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुऊ ए अजिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वम सहिय॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर जरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजृंजक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन जणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुज जाव, उज्जल जरियो खीर मिसें ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसं, उप्पन्न परिवरिय, हरिउरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम जणे;

गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हंसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम महुवर राजीववने ॥ जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल धने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पंवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम नूमीपती नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आंज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अटमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहिलो पन्नणी जें, मायाबीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोना संनवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहूउवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय नमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीजे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पन्नणीजें, परव महोच्छव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धंन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ वेनयवंत विद्या नंमार, तसु गुण पुहवी न लब्नइ पार, वम जिम शाखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन उम्मो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासण बेस

यो ए ॥ तिहां बेठी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नांमे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंडरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगि

ने महागिरि पुन्यरीस, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरखे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने ठांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपणे, छवीस जोयण जांण ॥१॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यांन धरू चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपणे, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो परबत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥१॥ सेत्रुंजसाधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नहीं भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चेत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

णा पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सेत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, डावम ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठू क र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवस रया गिरिश्रृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग रे ॥ से० ॥ ए ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सेत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन ता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनम शना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋ षजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो वंदणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पामिये, प्रजु कहे से त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुऊ, थे आपो

हूं अंगज तुझ ॥ ईंद्रे आण्या अक्षतवात, प्रभु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ ईंद्रे तिण वेला ततकाल, जरत सुजरा बिहुने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेरीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर घर तेमिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणी, संघ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम साथे लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रूद्धि, जरते साथे लीधीतिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण गांमे रही महोछव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरू पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूंख वे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, जरतें दीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, ईंद्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, जरत करायो गुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माहे पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्राशाद, जरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो आसाउरी ॥

॥ भरततणे पाट आठमे, दंमवीरज थयो रायो जी ॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उधार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीज वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब भंमारीयो, पश्चिमदिसि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंमवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंमवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र कराविया ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कराविया, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ए ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय कराविया, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय कराविया, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविया, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांमव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांमव संघ करी, सेत्रुंज भेट्या अपारो जी, काष्ट चै

रथ बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अढोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिम्होतरे; श्रीमाली सुविचा रो जी; बाहमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स त्यासिये, वेसाख वदि शुज्ज वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पामीजे जवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांजलो जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेष मानता, लाज्ज हुवे तह-तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह त्या, पापथी नासे छोम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जणी, जो जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाज्जतां, अधिको तेहथी देख ८

ज नतरूं ए, सिद्धवरूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सी धा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल क्षेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठां जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव त सोल वयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत णो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, सम यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद था य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्री सेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ शि खरसमेतनी, महिमा कही विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन जे टो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती रथ होय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर चली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण, भी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उच्छव धरे॥, तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु, क्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग ॥ अवस १र दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजांण ॥४॥ कर्म खपावी पांम्यो ज्ञांन, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पं, चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक, श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साध्व, यां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठांणु सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी सं, ख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं भीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिन, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेच र किन्नर सुरी, इंद्रादिक सहु उच्छव करी ॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही, अठाइ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावत्थीनगरी भली धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा
ण, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण
सरीर मनोहर प्रभुनो जांण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा
न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च
पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर
होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख
श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशंभव
जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट
लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दु
रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥
सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण
कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण,
तीरथ महिमा महियल मोटी यश्य सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-
मेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संबर राजा सोहे
मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रग
ट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी
तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥
पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि
छ लाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी
दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यांरी संख्या
जाण ए, नायकयक्ष कालिका नाण ए॥ उल्लालो ॥ ठाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥३॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुप तसु तीनसे, लंछन क्रोंच सोहै सुभगे हसै ॥ पुरब लाख पच्यासी श्राउ ए, इकसौ गणधर गुणगण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणा ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥३॥ चाल॥ इम कोसंवीनगरी तात ए, धर नृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलत णो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुप प्रमाण पूरा अढाई से त... कहो, तीन लाख पुरब थित कहावै एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय खल सहस विहतर श्रावक संख्या सार ए॥४॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकणयारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रम रसु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर वनारसी सोहता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥१॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसें देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी न्नाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवार लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरब आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संका कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर कार्कंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, नए सुविध सुजन जीव ॥ १ ॥ रक्तवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या नए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय सहस श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा निवकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा म हियले, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सु णज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंछन सुज श्रीवछनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥ए॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमांण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधून परिवार ॥ मुक्ति गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ धन२ संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपन्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खड्ग लंछन प्रभु पायजी॥धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चोरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लख जी ॥ ३ ॥ न० ॥ अरूतालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारे, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज रूपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख वरसनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अरू सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ए ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पचास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वछरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारे, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रेसे धर्म जिणेसरू, पुहत्ता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमोश जगन्नाथ ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंबन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमाण ॥ श्रमणी बासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर पन्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जयकार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छतीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ बासठ सहस मूनि वसे जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरूड़यक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ए॥ नवसै मुनि परवार स्युं जी, श्राया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ श्रेसें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जांन ॥१२॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ ठसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, श्राव क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी व ला गंधर्व॥कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ज०॥१५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रो ता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू॥ए देशी ॥

॥हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥ ॥२॥ श्री अ०॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांण रे लाला ॥सहस बहुत्तर लाखनी लक्ष श्राविका संख्या आंण रे लाला ॥ श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा रे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचा वन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चा लीस सहस मून सरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म०॥

श्राविका तिन्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥९॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरर तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब हुत्तर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, लोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस वलि दोय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंमले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ लयरा परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नांम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे नर आवे, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै भक्ति, संघपति नांम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ सायमीं वच्छल मुनिभक्ति, पूजा उच्छव थाट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गच्छपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

श्रुतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबु ध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसे सितसोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

ऋषभ प्रमुख जिन पायपुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावे श्रमण सुगुरु जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जरत महामुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उप शम जंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल ज वपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कं ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महा बल संजम सोह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न-वम असोह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख व वसुंदर, श्रीमल्लि नाथ पूरजजव मित्र ॥ पहुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंडु विष्णुकुमार लवधि निधि, खं दक सूरीना सीस सत पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोजसु सा गर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध रुषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणनिरुनो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण रुषि श्रीथावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसु सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अंतर प्रकासे तिमर नासे, भविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय मुणी, स, मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल थिवर आणंद रस्कियो, अणगार कासव धर्म भाख्यो सोधि सिवपुर सस्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुंमरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंदु वलकलची र केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू डुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृषभादि देसी थया वरू वइरागिया, संजमसिरि भज मोहनिद्रा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंते कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय लाइये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुद्ध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणभद्र सुभद्र सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय वीस सुव्रत, साधु सुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुड गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये, दसारणभद्र नमुं डुख वंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदृढप्रहा

री सिवरमणी वरो ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगडू क्षमावंत
सिद्धव, कोडिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिर्मोत्तरा ॥ गो
तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥
ारुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद्र प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खं
दकुमार सदा अभिनंदिये, नमिद्द ऋरद मित्र मन आणंदिये ॥
उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुप इ
लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीइंद्र नाम निर्ग्रंथ निर्मम
धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी
सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि १ जसतणो, श्रमण सु
दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअभयसुत आर्द्रकुमार ए, चित्त चतुर
नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर
देवतानिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत द्दि
त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसील धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥
श्रीकपिल ऋषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥
॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुड, लेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुत ॥ श्री
इखुकार नृपति कमलावती, राणी भृगुसुं प्रेहित सुजसती ॥ उल्ला
लो ॥ सुजसती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए छहूं
लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु
संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसं
यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कप्पो, विवसुं शीतल
सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं
स्यो तप गुण वीर ए ॥ ३० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु भद्र नं
दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥
श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत
तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अनैकुमा मुनि अन्नयंकरो, इह्न विहन्नसु आतम हितकरो ॥ नन्नावो हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनन्न नै सर्वानुन्नूति समर सिवसुख साधियै ॥ श्रीसिंह साधू अ उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नइ सुधन्न मुनिवर समरं मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वम्वेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्न परगम्मो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जं नांमे घर नवनिध्य वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग सं तिविजय जयो, न्नद्रवाहु कृतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनि श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शि मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥ म० ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहस्ति विसाल ॥ संप्रति नृ पम्मिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसां यसंसियो, अज्जसुन्नद मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींह री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवय स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमा ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्षत गुरु दक्ष ॥ पुर मित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु डुरबलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंझ स धु सुविहइ न्नरयो, श्रीठंम्मिल सुविहक्ष ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्र डुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्यै अणं ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ आज्ञ

सुंदरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल बत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिभद्र सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीये, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख भरपूर ॥ म० ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम दालिद्र घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चौवीसी वंदूं, मन सूधे नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मह सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमिये, जेहना नाम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

णस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न च
इज्ज चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहि
वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ नद्दो विणीय विणउ, पढम
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमन्नं, विम्हिय हियइ
सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इच्छंति ।
इय गुरुजण मुह नणियं, कयंजलिउमेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह
सुर गणाण इंदो, गहगणताराणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणि
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
॥ गंन्नीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अन्निग्गहमई य ॥ अविकत्थणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए नगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ
माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स
अन्निमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ आसणगहणं, सो विणउ सव्व
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू ॥
अन्निगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्सरन्नो, तइया वाणा-
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥
तह वि च सारायसिरी, उल्लट्ठंती न ताइया ताहिं ॥ नयरठिएण
इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
ज्झाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह जरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओ मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहठ्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्झडिओ ॥ संव च्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग प्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गविओ निरवणा मो ॥ साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु बकेइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंत सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं जन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स डुक्खमल्लियए ॥ जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह स्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुझई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, जरिय जरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू णवि जीवाणं, सडुकरा इंति पावचरियाइं ॥ जयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवमियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिख्या० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिद्याय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणह जि ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंमिअसरीरा ॥ बहु पमिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए गमि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुम पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पमिलेहा ॥ दवाई उवउगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा भरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, रकम ग्ग संसग्ग विग्घ भूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाई, अहारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो हं नछिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीए मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलरकणा ॥ ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता दुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सवं तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आ यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ नवझाया मंगलं मझ, नवझाया मझ देवया ॥ नवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लस्काउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चनदस जोणि लस्काउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चनरो चनरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चनरो, चनदस लस्का यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वं जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वनूएसु, वेरं मझं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं॥ तिविहेण पमिकंतो, वंदामि जिणे चनव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मझह वेर न नाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चनदह राज नमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संन्नालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु नरयां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम छुटकवारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिझाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछयो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं भरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थया रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिझाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिझाय ॥

॥ श्रे णिक रयवाडी चढयो, पेखियो मुनी एक तंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुज पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी, ओरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नाहिं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नाहिं, ते भणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम सांहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे नगर मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पडिक्कमणो भावसुं, दोय घडी शुभ ध्याण ॥ लाल रे ॥ परभव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणु भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम

दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसथ्थो, भलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यानथी, पच्चक्खाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सया ये ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह ऊगीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियरूं राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भाख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए चारू मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥ भ० ॥ ए चारूं तहतीक हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार ॥ ॥ हि० ॥ ४ ॥ झाकण साकण भूतड़ां हो ॥ भ० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेमो नाहिं आवे रोग ॥ वरतें आनंद सुख सदा हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम्ह कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिझाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुपीनी सझाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न ले अणसूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०; वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आण्यो भाव विसेसरे हुं० ॥५॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छे शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लब्धें मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लब्ध नही वछ तादरी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, ज्याल्या परठ-

न काज रे हूं० ॥ ईंट निचा हे आयने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण रुषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण रुषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंद मनरूै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्न धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचाव ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अ मति देतां रे जीभ वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे नारी हो धन्ना अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो वोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजग ग रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुखसज्या मो० कोड़ बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, ब पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ अ अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु हावणो ॥ ८ ॥ घर२ जिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाण रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, अ गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥ १० वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोम केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्म फूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो॥१२ सुख अजिलाषी हे अम्मा, फूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मार जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमा थि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुणयो ॥ १४

में इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जो- वन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनु मति आपी हो अम्मा, जीव सव धावो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवा रण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख सं जम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा जाणे ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव स रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर हुओ महा पुत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म्म कीयो तनु खार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ बारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चोपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संभूम नांमे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मैं कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो नविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ उपन्न को ऋ जा दवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंछ एकलरो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ए ॥ पांम्व पांच महा जूआरा, हारी डोपदा नारी ॥ बारे वरस लग वन रम्रवम्रिया, ऋ मिया जेम निख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस नुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख डुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥क०॥१३॥ सतिय सिरोमणी डो पदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आन्नानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकम्रो, कर्मैं नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क रता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, निक्षा नो जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंरुया नर करमें, नांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धिहरष कर जोम्रीने विनवै, नमो२ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिज्झाय सं०॥

॥ अथ सात विसनकी सिज्झाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि वेकी ॥ सात नरकना रे नाइ सातेई, आपै डुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पम्यांथकां, पाम्व पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पम्यो, खोइ सहू रा जरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस न्नक्षण अवगुण घणा, करे पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार ववेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दह्यो जा दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे स्याघर वसे, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेमे कुविसन साचवे, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे डुख जोर वि० ॥ मुंजदेव राजायें मारियो, चावो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने न्नव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण न्नव परन्नव आणंद अतिघणा, कहे ध्रमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेमाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत ठंगार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्ये तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जी ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ भगवंत सांसो भाजियो जी, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवत णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ भूलो मनभमरा कांइ भमे, भमियो दिवस ते रात ॥ मायारो लोभी प्राणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना ढोरू केहना वाछरू, केहना माय ने बाप ॥ उ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखे बेठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरवो छे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अछे, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड माय ॥ ८ ॥ भू०॥ मह मंद कहे वस्त वोरीये, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाभ उवा रिये, लेस्यो साहिब हाथ ॥ भू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल फूझे रे ॥ मूंठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथकी ऊतरो; ब्राह्मी सुंदरी जासे रे ॥ रूषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासे रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमानो रे ॥ लघु बांधव वांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमानो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहूबल ऋषिरावा रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी ॥ पाय उवराणा रे वेलू परजले, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठे जी ॥ खरे डुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठे जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण ठारो जी ॥ दासीने कहे जाय उतावली, ऊ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठे, तब दीठो निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियैर मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणको, पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिला उपरै, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापूत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावडी, वंस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमैं, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पडै नटवो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै रे नूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवडा, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहिस भार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछे जी, जोवन भरयो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मे सुणियौ कांन हे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया ॥ हूं न० ॥ ६ ॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमें नवसर हार ॥ जोबनभर छोरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमिए मात पसाय करी जी, मैं दीधुं तुझ दुख ॥ दिज्ञ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणें ल्युं दीख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठै रमै जी, हिव अम्ह कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुली थिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिविका तव सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उछव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जांणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोमी पूनो भणे जी, ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली पमवा तीन विमास ॥ चौथी पमवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जां लगि होली झमै वार, धुंवर पमती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो भय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ झूझै मल्ल मांहोमांहि जांम, तां लग असिझाई तिण गांम ॥ ३ ॥ भूपति परभव पोहतो होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली छै असिझाइ, स हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पमिवा लग असिझाइ वकी ॥ पमिवा बीज तीज चांदणी, समीतांझ असिझाई गिणी ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागै जांम, गाज वीज असिझाइ ताम ॥ गाज वीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संभाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठ विचार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखे भविपण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥९॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणे प्रसवे दिन सात, वेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाइ, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥११॥ इंडो फूटै प्रसवे गाइ, जां लग रुधिर पमै तिन गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नही॥१२॥ असाढै चौमासे दिने, पडिकमणा गयांथी गिणे ॥ बार पोहर असिझाई कही, काती चौमासे इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छे बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांभलि ए में कही संखेवि, हरखे पय प्रणमू कीजे देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षर जेह, च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अक्षरे, तव कवि नांम कहियो इण परे ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरो, सहि पालो रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो भवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढो वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोभी नर कूमो करो, जांणी सावद्य रे अभक्ष बावीसे परिहरो ॥ वड पींपल रे पिलखण नें कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ रखे तुमें भक्षण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ठंमि परहा, दोष मूल नाटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीभोजन, प्रथम दुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब नांम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण रे तुछ फला सवि छांरू ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंरू ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंमए व्रत नियम लेइ, बेइ फल व्रत भंगनौ ॥ अज्ञात फल वहुवीज भोजन, चलित रस होय जेहनो ॥ संवर आणी अभक्ष ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥ गुरु वयण विगतें वली पूछ्यौ, अनंतकाय वत्तीस ए ॥ ६ ॥ अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु भक्षण रे पातिक बोल्या छे बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद बहूं कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली वीज पाखै, चाखै चतुर नर आंविली ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवछुलौ, पल्यंक सूरण वाल वीली मौथ नीली सांभलौ ॥ ७ ॥ वंसकारेला रे कूंपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी रे भमरवृक्षनी छालरूी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलरूी ॥ ए ॥ वेलरूी तानु ताजा खिलोरू ने खरसुआ, भूय भूंफोमा छत्रा कार जांणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोल्या लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अभक्ष सिझाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिझाय ॥

॥ संवेगरसभे झीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १॥ यादवराय धन२ गजसुक माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभू पास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि सुगति जा
यवा अलजयो, पऋषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,
पिण दिन जावे रे तो छेद दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय
काउसग्ग रह्यौ, तिण सांऊि प्रन्नुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिं
तवे, एहनैं साची रे छे मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुऊ सुता विन
अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगऊी रचि सिर ऊपरैं,
चिहुं दिसि वांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मु
निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,
ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे
प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रन्नु मांऊी करी, रातिनी वी
तग वात ॥ हरि देखी हियऊो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो
धात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचलरा
ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥या०॥ ए॥

॥ अथ प्रण्णचंद्र सिद्याय ॥

॥ राज ठंऊी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागे
मन वालियो, कांइ लीधो संजम न्नार ॥ प्रण्णचंद प्रणमूं तुमारा
पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो
रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ वांह वेऊं ठंची करी, सूरज सांमी इष्टी
लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन
जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध२ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु
ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
ऊियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे,
एहनी सी गति थाय ॥ न्नगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-
के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि वि

आन ॥ वाजी देवनी डुंडुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥ रिद्धह रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरभा वासे जीवभो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाभी छै दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥ नाभी वांसतणी भरियै घणी, रूयाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजे नर नारी मिथ्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवभो, जंपै जगदीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरभावास ॥ सात

दिना उपरि रहे; नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ वं रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गर्भावासै जोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने स्रोणिततणो, नही कूड लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर- जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारे तूं थयो, उदा रिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अछे उदरे तिको, उपजावे अंग ॥ अगनि करे थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करे प्र कास ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारे महुरत तां पछे, विलसै नर नारि ॥ गर भतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हु वे दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधे, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमतालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सु थिर मास बीजे हुवै, हिव तीजे मास ॥ करमतणे वलि ऊपजे, मा- ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथे मासै मातना, प्रणमै सहु अं ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पि त्त रुधिर छठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसे, पे सी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोडि ॥ ऊपजे ऊणै केतले, इम आगम जोडि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मा सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ ऊंधे सिर वेदन सहे, जंपे जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वडनीत ॥ वात पित्त कफ गर्भथी, थाये नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सूंटि लगे, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ल्ये आहारते, जाय नाभोनाभ ॥ रोम इंद्री नख वस वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊज

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नहीं, गरभै सुविचार ॥ ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, आये ज्ञान विभंग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥उ० ॥ ३२ ॥ कटक करे वैक्रियपणें, फूफी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधै मुख गोफा हिये, सहितो बहु पीड़ ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी भींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजे आधांन ॥ अथवा विहुं नारी मिळ्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥ ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम नीकलूं, नाउं गरभावास ॥उ०॥ ३६ ॥ ऊंठ कोड़ि चांपे सुई, कोइ समकाल ॥ तिणथी गरभे अठ गुणो, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥ ॥ ३७ ॥ माता दूखो दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ मातर सूती ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभथकी दुख लेख गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग२ मोह विकार ॥ उ० ॥३९॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तुरत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर सुख ठवै, पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करै रंग अपार ॥ लाड़ कोड़ माता पिता, पूरै सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, छै सातसे नाड़ि ॥ नवसे नाड़ी पिंडमें, तिम तीनसे हाड़ ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि एकसो साठ छै, सतोत्तर सो मम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै, ढांको छै चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अछै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती स सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणथकी यदा, उंगो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोरव्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम्फ कपाय ॥ ५१ ॥ उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ छठे दसके प्राणियो, वले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ उ० ॥ आवे दसके सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके फोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणैं, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै वचन बहुआंतणो, दिन फुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही; दीयो परिजन तेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पफे मुंहफे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ उ० ॥ कोम्हि रतन कवम्ही सटे, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखे पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संसार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ चवदे राज प्रमांण ए, छै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥ ज० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ ज० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ ज० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ ज० श्रीनमि रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ ज० ॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ ज० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ ज० ॥ तंडुलवेयाली अछै, एह नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही झूठ लिगार ॥ ७० ॥ ज० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परि सिंह केरा सदा पाले नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ ज० ॥ इति भतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घमी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कभी तूं मिश्रमोहनीमें, कभी तूं कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कभी तूं कुगुरुमें, कभी तूं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामें, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी व

चनदंममें, कन्नी कायदंममें, कन्नी हास्यमें, कन्नी रतिमें, कन्नी अरतिमें, कन्नी नयमें, कन्नी सोकमें, कन्नी डुगंछामें, कन्नी कृष्णलेस्यामें, कन्नी नीललेस्यामें, कन्नी कापोतलेस्यामें, कन्नी तुं ऋद्धिगारवमें, कन्नी तुं रसगारवमें, कन्नी तुं सातागारवमें, कन्नी तुं मायासद्यमें, कन्नी तूं नियाणासद्यमें, कन्नी तूं मिथ्यादर्शनसद्यमें, कन्नी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता हे, कन्नी तेरे बाहिर कर अठारे पापस्थानक आय फिरता हे, रे तूं आत्मा महा डुष्ठ, महा डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणहठी, अरे तूं अयोग्य कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव, प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमी, विचारा तेरे खपी नही, गुणठाणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे उठल रहा हे, तें जो धर्मक्रिया करता हे सो शून्य मनसें करता हे, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा हे, अरे चेतन ! सोगन नही लेवे सो पापी, उर लेकर नांगे सो महापापी, तें अनंतकाय, अन्नक्ष, शीलव्रत, जरदा, नांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां छूटकवारा होगा, रे चेतन ! तें पुद्गलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो हे, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधांन हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये बाते तेरे हमेसां ऊपजे, इसमे गुणठाणेवालेकेही लोन्नका त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारतो

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुद्ग ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा, संसारमें न किसीका तुं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पूत्र पणे, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें ठगकी बेटी नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण भो गेगा ? मा बोली—बेटी, करेगा सो भोगेगा, तबतो उसने कहा धिक् हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म, आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका धर्म पुंन्यानुवंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क उएकूं उराणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ- डंबरी कुगुरुउके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा भया, मांनरूपी गज पर बाहूबल चढा उर संज्वलनमांन था, उर बाह्मी सुंदरी बहिना जैसी समझाणेवाली थी जब समझे, उर तेरे सो एसा मांन, अरे चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोंके केसीक राजरुद्धि सो केसीक भावना भावतां, धिःकार राज्यनें, धिः कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं, धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य जो सर्वविरती धर्म पालते हें, धन्य जो दांन देते हे, धन्न जो सील पालते हें, धन्य जो तपस्या करते हें, धन्य जो भावना भाते हें, एसें भावना भावतें भरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोकी बराबरी मतकर, वहनो तेसठ

सलाका पुरुष चौथे आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्र-का कोमा भनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-ववस्तु, जीवसें जीवतो इमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों करे, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गिराया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्रभाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं भिगाय दिया, तो तेरी तो विसायतही क्यां, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछे लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परि-चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंतें तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता, छक्कायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका ज.प-क, नवविध ब्रह्मचर्यको वाभका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, वारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पाले, रे चेतन तुझै कब उदे आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवे, तेरे संसाररी वहुलताइ, धन्य देसव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करे, देवदर्शन करे, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणें, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणे षडावश्यक करे, सुझैभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-मायक मनसुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण हे, ऊर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझें पढणे गुणनेकी लगन नही, तेंनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञांन ऊर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्तार होता हे. दिवस प्रते दे कोई सुजांण सोना खंभी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्रावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे कांम काज घरका चिंतवे, निंदा विकथा कर खिज रहे; आरत रौद्रध्यांन मन धरें, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरखा गिणे, कंचन पत्थर समवरू धरे, साचो थोभो आगम भणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा भला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेंनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखके, पत्थरकूं दूर करे, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन ऊर कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भस्म कर जिस्से तेरा गरज सरे, अहोहो मैं भव्य हूं अभव्यहूं अथवा दुरभव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता हे, प्रायेतो मैं अभव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने भाव देखा सो सही, हे रे भाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खुणे खाज मोफे

करमका, बंधतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिकारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहानिसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे छती शक्ति साधु जिनमंदिरमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका डंड और श्रावककूं बेलेका डंड ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घडी रात रहे पिछली तब उठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके घोडा हाथी रथ पालखी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे. जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखणीभी सोभी छोडे २; (इसमें द्रव्यपुजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भावपूजाही करे, लेकिन् द्रव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक–ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक–मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक–प्रभूकी अंग १ अग्र २ उर भाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुछ्भी देवकार्यकों छोडके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ हो सो विकथाको छोडे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया तथा खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोपेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके भावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणाका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र द्रव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, भावसें दुसरा निस्सही कहते मूलगुंभारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अच्छा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें भगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवडा जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लोखे–दर्पण १ भद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंमें अष्टमंगलीककूं पूजे, अच्छे केसर चंदनके छटा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अच्छे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग भक्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रभावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित भव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नेवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा ३. द्रव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक–तीन अवस्था विचारणी. पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, और केवलअवस्थाकों विचारणा सो पदस्थअवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक–तीन दिशा छोडके प्रभूके सामने नजर रखे,

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३ ४ वांइ पिछाम्मी निजर नहीं करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे तो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रक्खे सो मन शुद्धि ३. ८

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोंकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ए

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १ मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाइं इह संतो तडसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंम विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आन्नवमखंमा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३ एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अन्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं. सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे ज्ञोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १ उर राजचिन्ह मुगट छत्र खम्ग चमर पाउका अचितवस्तुउकाभी छोमणा आन्नूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोन्नुवणबंधुणं एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके ज्ञगवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बेठके ज्ञगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा है. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बेठके देव वांदे,२, उत्कृष्ट६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद है. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते है पांचदंमक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११, दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्र माण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सच्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परवल भींमी तोरी केला मतीरा ककमी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण. तहां घातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें घालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिणतीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे भात दाल रोटो कढी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापड खीचिया लडू सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचडी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी भई हे तोभी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मरकण ३ उर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खडाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीडा सुपारी लोंग इलायची गोटी उर वडी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारणा प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघडी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहीजे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे तो जयणा. ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गामी वहली इक्का वग्घी कोच पालखी घोमा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुमदोम लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी दुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी छालका चममेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ए.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मेरेके दृष्टांत भोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रक्खे, घड़े प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत दुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रक्खे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रक्खे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंड तंडुल मुठ्ठ ३ थालमें रक्खे उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पडिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइअारोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाये पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमांन विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीछे सतरे थुईमें नवकारो एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके वड़ा स्तवन कहे पीछे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः। पीछे खमासमण देइ श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायके आराहणार्थं काउसग्गं करावेइ, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोवनार्थं करेमिकाउसग्गं. ४ लोग स्सका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मनमें धारणा रखे. सूत्रं अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे मिच्छताउ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतिच्छिएवा अन्नतिच्छिदेवयाणिवा अन्नतीच्छिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणुप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ भावउ तछदवउ दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउ जाव उरहमझिमखंभे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावगेणं नठ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नन्नविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवरूइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एते अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थे सत्तावीस उच्छास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके न्नक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिको डुविहार तिविहार चनविहार और बावीस अन्नदे बत्तोस अनंतकाय विदल वगेरे बोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमांण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे नपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंमक लि० ॥ अहन्नंन्नंते तुम्हाणं समीधेवथूलगपाणाइवायं संकप्पिन निरवराहं पच्चरकामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सन्नंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंमक तीन वेर नच्चरावे॥ १ ॥ अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाछेयाइहेनअं कन्नालीयं गवालीयं न्नूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पच्चरकामि दरिकन्नाए अविसए दवन खित्तन कालन न्नावन सवनणं मुसावायं खित्तनणं इन्नवा अणब्रवा कालनणं जावज्जीवाए न्नावनणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवमइ तावअन्निग्गह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चरकामि दवन खित्तन कालन न्नावन दवनणं अदिन्नादाणं खित्तनणं इन्नवा अन्नत्थवा कालनणं जावज्जीवं न्नावनणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि असेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवमई ताव अ

ग्गिगहं डुविहं तिविहेणं अन्नत्थ॰ सहस्सा॰ महत्त॰ सव॰ वोसि
रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंनंतुम्हाणंसमीवे उंदारिय वेक्किय न्नेयं थूलमेहुणं
पच्चक्कामि अहागहियन्नंगएणं दिवंतिरिहं माणसियं एगविहं एग
विहेणं पच्चक्कामि दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं मेहुणं खि
त्तउणं इउवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि अन्न॰ सह॰ मह॰ सव॰ वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
न्नंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं परुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चक्कामि
धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
हियन्नंगएणं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं नवविह
परिग्गहं खित्तउणं इउवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवं न्नावउणं
जावगहेणं नगहिज्जामि अन्न॰ सह॰ मह॰ सव॰ वोसिरइ ॥ ५ ॥
अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चक्कामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं दिसिपरिमाणं खित्तउणं धारणाप
माणं कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
उ॰ तावअन्निग्गहं अन्न॰ सह॰ मह॰ वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहन्नंन्नं
ते तुम्हाणं समीवे न्नोगोवन्नोगयेन्नोयणउ अनंतकायबहुवीया राइ
न्नोयणाइं परिहरामि कम्मउणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
इं बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायान्नियोगंच परिहरामि तंजहा दवउ
खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं न्नोगाव न्नोगवयं खित्तउणं इउवा अन्न
त्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न॰
सह॰ मह॰ सव॰ वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहन्नंन्नंते तुम्हाणंसमीवे
अन्नत्थदंमं पच्चक्कामि अववज्जाण पापोपदेश हिंसोपकरण
दाण पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंमं जहासत्तीए परिहरामि तंज
हा दवउ खित्तउ कालउ न्नावउ दवउणं अन्नत्थदंमं खित्तउणं इउ
वा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए न्नावउणं जावगहेणंनगहि॰

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा स त्तीए पडिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिक्खावयं दुवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सवस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख छ छंडी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ भविश्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पूंडरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि, आचारज भगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवज्झायाणं रे छठ्ठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी भगति करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयकारीणं विनय वमानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो बंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दांन ते पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं नणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअनत्तीणं रे नगणीसमे नविया सुणउं, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पन्नावगाणं कही, संघनगती रे यथासक्ति कीजे सही ॥ नू० ॥ सही कीजे वीस उली एक पठ मासि कीजीये, उपवास करिये वे सहस्स गुणिये पडिकमणे लाहो लीजिए ॥ नणे काले देववंदन नाइण धोअण टालिये, आरंन वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेणे नामकर्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणांगे रे सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ नू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास उदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने दढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थानक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, नेटे सहु नवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रनु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखडिया, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंडल दोय ऊलके, शशि सूरज सम नास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिनुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, द्वारे में खमी पुकारुं नेम तुंही तुंही तुंही ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें न्यारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं नव नवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग नैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखरूली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय नन दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रनु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई नविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रनु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन नयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिनु वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रनु नव नव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग नैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन नयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घमी तमको अब रहियो, ऊठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर नरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भव की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ करुखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूजतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंमार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, उपन्नजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, ज्ञायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरु, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूते एक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुझ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्धारण गो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावरू शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां थून्न जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने कन्न जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे कन्न जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुझनें पांखमी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह ऊगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो में विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमें हिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तु॑ माकं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण दीजें ॥ धूंवाम्हे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥ ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंमण साहिब, वीनतमी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, जवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मझ र ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आम्हो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लामला, कागल धुं किण हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें वश वश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मळ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधे रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रली री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ वाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणींद पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनों व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुउ, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुज निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुण० भ रम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पुग्गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोड़े टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पदधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, भविजन तारण जेहनी वांणी ॥ परमांनंदतणी नीसाणी, तसु भगते मुझ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कुसुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्मदिट्ठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक विहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, भत्तहि भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ ढाल ॥ भव तीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी

भावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणांम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आनुबंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरभव उदार, भरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मझखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्जल सुंदर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांभले सो भागी ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधांन इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्राउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ- णंदियो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भवअटविय पारग सछवाह, केवलना णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अठ पय समुहा आवि तछ, कर अंजलि

प्रणमिय मन्न सत्थ ॥ मुख नापे ए कण आज सार, तिय लोय पहू दीवो नदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुमवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समन्न, प्रगट्यो तसु प्रणमो हुउ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कव करेवि, तत्र देव देवो हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तव रंन्ना गीत गांन, सुरलोक हुउ मंग लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस गांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे नच्छव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरप संग, संयम अरथी जनने नमंग ॥ ८ ॥ शुन्न वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्या त्रिन्नुवन सर्व जीव, वधाइश थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खमा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख कार, नरखित्त मंमण दुह विहंमण न्नविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख नच्छव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु मरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ णंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सुचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां न्नूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज ननि मज्जणकार ॥ वर राखमी जिन पांण बांधी दिये इम आसी स, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल नला लानी ॥ जिन रयणीजी दस दिसि नज्जवला धरे, सुन्न लगनेजी ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे, तिण अवसरजी इंद्रासण पिण थरहरे ॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उछवकाल जांणी अतहि आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण भगते ऊमह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुओ अछे, तसु भगतेजी सुरपति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउछव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांभलजी सुरवर कोडि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कृतपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुन्ये भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले व्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोडिजी जिन दरशणने ऊमहे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोडकोडी नाचती वलि नाथ सचि गुण गावती, अछपरा कोडी हाथ जोडी हाव भाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम द्ये आसीस ए, अम त्रांण सरण आधार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पांडुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि वणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

पति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसो ॥ पद्मदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, छत्त चामर सिंहासण सुन्नतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमे जासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा॥ इंदोदेवा अणाइकालो अदिठपुवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिछत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्वो२ हियकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पत्नणंति वण जवण जोईसरा, देव वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइउछगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्यअच्चुय१ इंद आदेस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदजुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पारग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अन्निषेस ॥ ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हामे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुन्न परिणामे ॥ अच्चुतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अन्निषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तवईसाणसुरिंदो, सक्कंपत्नणेइकरिसुपसाउं ॥ तुम्हअंकेमहत्ताउं, खिणमित्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपत्नणइ, साहम्मीयवछलम्मिबहुला

हे ॥ आणाएवं लेणं गिण्हह होनकयत्थाज्ञो ॥ १ ॥ (कलस ढाले) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि, वर आभरण अभंग ॥ १ ॥ तब सुरवर बहु जयश रव कर, नचे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, भांज सु हिव भवफंद ॥ २ ॥ कोम बत्तीस सोवन जवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति भगते सहित नंदीसर, करे जिन भक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर, कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन भगते गायो, जनम महोछव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा भगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विभाव निज भावमा, रमता सिव राज ॥ इ० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जन्ममहोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां भव पार ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही सुत्र मझार ॥ इ० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल भासन भास्करं, जगत जंतु महोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि विसुद्धये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चंदन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्त्व विकास कृतेर्च्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरंचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संवर भावसु धूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ भविक निर्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतु भाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधति नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतन भावं विलासकं ॥ सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति भाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना॥ ८॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे। (अर्घ) इति जिनवर वृंदं भक्तितः पूजयंति, सकल गुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व मुद्भावयंति, परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ९॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्च्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ प० वस्त्रं यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावे पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकम तथा केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भलै भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर सिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठे अधिकार ॥१॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि सुछंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद॥१॥ गाहा॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५॥ मालारोहण ६ व न्नयं ७ चुन्न ८, पन्भागय ए आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय वंसुघरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अठमंगलयं १३॥ धूव उखेवो १४ गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपद्रि परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोज० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसमांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंद जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

जी पूजा साचवै, श्रावक शुन्न परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण वध्योरी सुधारस, तप-त वुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रन्नूकुं विलोक नमि जतन प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनको ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-म निज वृजन पुलावत, पंककु वरष जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि न्नवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, भ्रमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिळ्योरी सुमनि संग, जागी सुदिसा शुन्न मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगन्नर करतां, श्रास फली मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका ममार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहे)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-मद कुंकम न्नेलीये, कर लीये हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-लिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवें सिरे रे देवा, न्नाल कंठ उर उदरंत रे ॥ डुख हरे हांरे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजीये ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरे, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचे जिम सुरगिरे, तिम करे हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजिये ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे न्नवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शांतिरता संग ॥ चित्त खेद सम उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजें

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर खंधै सिर भाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर त विलेपन, तपति वुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि करो सुललित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोडी ॥ कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधे अधिवासिया ए, हांरे अइयो० ॥ कनक मंडित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ हांरे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शक्रो यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें, वस्त्रयुग पूंज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैराडी ॥ देवदुष्ययुग पूजा बन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥ तूंही हे सबहि हितु तूंही है मुगति दाता, तिण नमि२ प्रभुजी कै चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सब राड दुख संसय धुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रभुजाकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोडी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजे जिन अंग उवंगू ए ॥ हा० लाभि ज्ञवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अन्नं गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ मेरे प्रज्ञुजीको पूजा आनंदमेलै, पू० ॥ वासज्ञवन मोह्यो सबलो ए, संपदा ज्ञेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन राज तत्ताथेइ, चतुर गति छुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसे तिम विकसता, पुह्प अनेक प्रकार ॥ प्रज्ञु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहें री माई व रणें, मन मोहें री माइ वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनच रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रज्ञु हम सर णें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विषै हां० पं० छुःख हरणें ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति ज्ञगति ज्ञग वंतकी, ज्ञविक नरां हांरे ज्ञ० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छही पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ उठो पूजाए ठती, मदा सुरज्ञि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी थापे गले, जेम टलें छुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ नला पा० ॥ मरुक दमणक बकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाल पाडल निली ए ॥ नलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मोगरा वेनला मालती, पंचवरणै गूंथी मालती ए ॥ नलां गुं० ॥ दे माल जिनकंठ पीठे ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालनी ए ॥ नलां स०॥२॥इति॥ राग आसाउरी ॥देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोम्रपूजा सब मार धूजे ॥ सब अरियण हांरे स० होइ तिम छंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्या सुख, नविक नगत हांरे न० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोम्र पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रनुकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगे फूल केसरसें अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवमा, सोन्न तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवे, सातमीये सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौमी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हांरे अ० ॥ कुंद गुलावसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग नैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जुई वेनलवाती ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी नांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, नैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरबत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु भावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरभि सिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध भव मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजे जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तव सुमतीजन रीझै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधे, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र तीर्थंकर बांधइ ॥ भलां१ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-ल्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर भाव घन वरपत, सामेरी मति जागै ॥ भलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकें, सूहव गीत समूल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौडी ॥ वस्तु ॥ सहसजोयण२, हेममय दंड ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुघरीय वाजै ॥ मृदु समीर लहके गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल सयल भाजे ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥ आपै दान अभंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवबधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ भांति वसन पंचवरण बन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कडी ध्वजा चढाईजे ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारेमै ॥ दसमो पूजा आन्नरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणे, रयण मुगट ऊलकंत॥ तिलक न्नाल अंगद न्नुजा, श्रवण कुंमल अति न्नंति ॥ २ ॥ राग अथन्नास गुंमल्हार ॥ आसावरी॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुन्नग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणे जड्यो, कांने कुंमल हांरे अति जुगते जुड्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ न्नाल तिलक वाहे अंगदा, आन्नरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रन्नु सिर सोहे मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक न्नालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुसें अलंकस्यो ॥ डुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धर्यो, अलंकृत उचित वस्यो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक ड्व्यान्नरणादि चढावें॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोन्नतो, फूंदे लहके फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदल मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पामलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिन्नुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणुं ए ॥ हांरे अ० ॥ गुच्छ चंडोदयं ऊंबकान्नयं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद फिलै, फू० ॥ असत उसत दांम वघरी मनोहर, देखत तबही सब डुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंडप थंन्न गुह्र चंद्रोदय, कोरणी चारु विनाण सफै ॥ इग्यारमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि न्नजे ॥ ॥२॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाइजे ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पव्रर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलावजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फूल ॥ हरण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग न्नीम मल्हार करखेकी जाति ॥ मेघ वरसै न्नरी पुष्फ वादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो; अधोवृंते नही पीम पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै न्नमर न्नमरी न्निलै, सरस रसरंग तिण डुख निवारी ॥ जिणप आगे करे सुरप जिम सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग न्नीममल्हार ॥ पुष्फ बादलीया वरसै सुसमा, अहो० ॥ योजन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समा ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम पन्नणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण सुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीम नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ बारमी पूज न्नविक तिम करे, कुसम विकरस हस उचरे ॥ तसु न्नीमबंधन अधरा हुवे, जे करादिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुष्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै सुमते सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणै न्निल्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्रमण समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखें सयल मंगल अखे, जिनप आगे सुथानकं

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्प्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पुर्णकुम्भ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रभु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलावल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचपूर ॥ कुंदरुक्क सेल्हारस सार, गंधवटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटो घनसार चंदन, मृगमदारस भेलियै, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंड कनक मंडित धूपधाणो कर धरै, भववृत्ति धूप करंति भोगं रोग साग अशुभ हरै ॥ २ ॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत भविकुं, म ध्यमधे करनाल रे ॥ चवदमी वाम्मांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ भावो अर्थकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्वदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ शुद्ध वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अ नाहत तानं, केवल जिम तिम फल अभूतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापे, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र. बंध धूयो प्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद समान रूप्यो त्रिभुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मान शिवश्रीगीतं, पनरमी पूज हरे दुरितं रे ॥ जि० ॥ ३॥ इति पू.॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करे ॥)

॥ दूहा ॥ करजोडी नाटिक करे, सज सुंदर सिणगार ॥ नवनाटिक ते नहि नमे, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ नावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा सम रूव वेस वयसो मत्तेभ कुंभत्थणा ॥ लावण्ण सगुणा पिकस्स रवई रागाईआ लावणा, कुम्मारी कुमरावी जेन पुरउ नच्चंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठ्ठसयं कुमारिकुमरीउ सूरियाभे णंदेवेणं संदिठ्ठा रंगमंडवेपविठ्ठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥२॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, धागरुदि तत्थेइ ॥अ० ॥ धागरुदिरक थोंगिश्न, मुखेतत्थेईय॥ अ० ॥ ना० ॥ वेणु वीणा मुरज बाजे, सोलही सिणगार साजे ॥ तनन्ननन्नेईय ॥ अईयो० ॥ प्रणण प्रणण प्रणणण घुघरु घमके, रणससससेईय ॥ ॥ अइयो० ॥ २॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी झंकार करणी ॥ सोभंती कुमरीय॥ अइयो० हस्तक हावादि भावे, ददन्तां भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाभे रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप भगते भविक लीणा, आणंद तत्तत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥४॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततघन सुखिरे आनधे, वाजित्र चौविध वाय ॥ भगत भली भगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर मद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरे, भुवणइ तूं नंद जिणनाद ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी॥ तूं०॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिवल वोलै रंग अतहि आन्दी॥ तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवे जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प.रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव भविक मधुमाधव फेरी, भवली फेरी नप्पभणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सव, मंगल मधुर धुनि कर कहंती॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ भवि तूं भण गुण जिनके सव दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, शुय रंगे हम गाजै ॥ भवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आवाजै॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, भणी मैं भगति हित काजै ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुर, पंचमि दिवसें समाजै ॥ भ० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायें सुविध हुय गाजै, कहे साधुकीरत करत जिन संस्तव, सव लीला सुख साजै ॥ भ० ॥ ४ ॥ इति सतर भेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पछि वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेवीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी मैं जाउं वलिहारी॥ जै जै० ॥१॥ विश्वसेन अचिराजीकेनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती भोरहिं कीजै, जन्म२ को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकु मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पकान्न खजली मिश्री पतासा ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज२ शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं दिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ करया कर्म दुम्मर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालैं ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्य ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करचा घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोप ग्रही च्यार छै जे विलग्गा ॥ जगतपंचकल्याणके सुख पांमै, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकांमै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने थोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे भव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकाले नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें उछाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्याये रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाये रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यांने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयका

रगाणं, जम्मंजरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा॥सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्भवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसहंस समवड़, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥२०॥भ०॥सि०॥ जाणे पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ भ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥२१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ऊँ॥ ह्रीँ० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूझै भाव असेष ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽस्त्ससिमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंकछत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा॥षट्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना,पंचाचारनें पालवे सावधाना॥२॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै,सदाअप्रमत्ता यथासूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निक्कामो जी उल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण बीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, दुविधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ भ०॥ २६ ॥ सि०॥ वर छत्तीसगुणैंकरि सोभै, युगप्रधान जगबोहै ॥ जगमोहै न रहे खिण कोहै, सूरि नमूं ते जोहै रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथंभ आचारज, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवझायापद अरचिये, अनुन्नवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्थ विथ्थारणतप्पराणं, नमोऽवायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सवप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंभनूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रनूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंआकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्तगुत्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्याद्वादवादे तत्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ नवभीरुसाधनधीरसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिझाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ भ० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविभागे, आचारज उवझाय ॥ नवत्रिणदे जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणे ॥ ते उवझाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणे रे ॥ भ० ॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणे, अहिततापं सवि टाले ॥ ते उवझाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिझाये रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण स साहियसंजमाणं, नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयट्ठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूवर्णन तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतालदापंचसमतेत्रिगुत्ता, त्रिगुत्तेनहीकाम जोगेषुलित्ता ॥ ४१ ॥ वलीवाह्यअभ्यंतरैग्रंथटाली, हुइमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुभ्नष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निका मो निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्र णमो हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूलै भमरो वेसे, पीड़ा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांचइंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधे, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ ए हवा मुनि नमियै जो प्रगटे, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वाने ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ भ० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखै नवि सोचै रे ॥ साधु सु धा ते आतमा, स्युं मुंडै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुन्न रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततत्तेरुइलरकणस्स, नमोऽ निम्मलदंसणस्स ॥ मिछत्तनासाइसमु ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तेहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि यैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि चित्रंन्नवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमेक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेस दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू पी जी॥जसु निरधार स्वन्नाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता न्नाव प्रग टै अनुन्नव करुणा उछलै॥बहु मान परणित वस्तु तत्वे अहव सुख कारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरब करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे॥ न्न० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उ पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अन्नंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमे दृढ रंग रे ॥ न्न० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश म लहीजे, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ न्न० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलियो रे ॥ न्न० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सम्सठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ न्न० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमांह ॥ आ

राधीजै शुन्न मनें, दिन२ अधिक नज्ञाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइंजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुषट्द्रव्यन्नावा, नहोवेविकल्पानिजेह्नास्वन्नावा ॥ ५ए ॥ होइंपंचमत्यादिसुग्यानन्नेदै, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदइं ॥ वलीज्ञेयहेयानपादेयरूपै, लहैचित्तमांजे मध्यांनेंप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञांननें, स्वपरप्रकाशक न्नावे जी ॥ परयाय धरम्म अनंतता, न्नेदान्नेद स्वन्नावे जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ न्नक्ष अन्नक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञांन ते सकल आधार रे ॥ न्न० ॥ ६२॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञांन नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धातें न्नाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चाख्युं रे ॥ न्न० ॥६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञांन नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ न्न० ॥६४॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह ॥ दीपकपर त्रिन्नुवन नपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ न्न० ॥६५॥ सि० ॥ लोक नरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धी रे ॥ न्न० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय नपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिय खंडिअसक्कियस्स, नमोऽत्थुसंजमवीरिअस्स ॥ सप्पावणासंगविवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निराससताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ नवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्रअप्रातमुल्यं ॥ ६८ ॥ होइजासमहिमाथकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथाये, थईसिद्धतेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टले, सकलसिद्धिअनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ति पिण वरिउ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिउ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउ ज्ञान आनंद रे ॥ भ० ॥७३॥ सि०॥ वार मास पर्याये तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते उपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ ॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नांम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म द्रुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिबतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधण स्स, डुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥७७॥ इयनवपयसिद्धिलद्धि, विज्जास मिद्धं, पयमियसरवग्गंह्रींतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव यारं, तिजयविजयचक्कंसिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले, निकाचितपणें बाधिया तेह बाले ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर डु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत डुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होइ जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संके ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद पावे, नवभव सिव जावे देव नर भवज पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभा वे, सवि डुरित समावे विश्व जयकार पावे ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व ना, पर परणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अ क्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आ त्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न वपद गुणमंमलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, स म्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥ निरधारसेती गुणे गुणनो करइजे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत म हंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भ विक पूजो मन रली ॥ उवज्झाय वर श्रीरजसागर ज्ञानधर्मसु रा

जंता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोजता ॥८४॥ ढाल ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते नवसुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जाये, क्षमासहित जे करता, ते तप नमिये ते ह दीपावे, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज०८६॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रन्नावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटे, नमिये ते तप न्नावे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमांहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिकरण नित नमिये, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासे चोथे खंमे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इछारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण न्नोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, न्नाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमन्नावे थिर हूउ, परन्नावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ॥९३॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे ॥ ए तणें अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइ न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्नाथिया केसरसें तिलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोंकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपद में चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चैत्रीपूनम आसोजीपूनम वगैरोंमें करे नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्टे मुजब पट्टे पर नव साथिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढावै ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उछाला पढ वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥१॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल०॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीँ प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुभिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्ज्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्सुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीँ श्रीँ० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्न्नटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्ररुप्रदीपक धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, भयवारण तूंही सुखकारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्मति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांभोवज्र विदारी, विद्यापोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ए ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ ओर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भेंस, घोमी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ और जितना महिनाको गर्न्न गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. और जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख कें संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापना जीके हाथ लगावे नहिं. और जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भैंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकको न छुवे. २चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे, सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, भैंसके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडा, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, अर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीछें, संमूर्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जाणना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असझायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंआरी वरसे, तांलोंम असझाय जाणवी.

२ सर्वदिसामां रातो डाबा तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर वर्षे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असझाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगें होय, तां सीम असझाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहुंती पडिवा लगें असझाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउह्रावणार्थं काउस्सग करुं ? इच्छं. अचित्त रज्ज उह्रावणत्थं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स उद्योयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथ आरंभीने पडिवा लगें असझाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असझाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असझाय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असज्झाय.

१२ अजवालीये पक्षें समी सांझ, पडवो, बीज, त्रीज, इयारी असज्झाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असज्झाय.

१४ भूमिकंपें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असज्झाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण गयाहूंती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछें पडिवा लगें प्रहर बार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्झाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उडे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ दंडको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र भणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणलक्षे एटले ज्यां पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असझाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पड्वाथी हाथ १०० सो माहे अहोरात्र असझाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पड्वाथी हाथ १०० सो माहे अहोरात्र असझाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विगकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर २०, गठी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवडां प्रहर २४, घोलवडां प्रहर ४, तल्यां वडा प्रहर ४, पूडी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. वाजरा कुण्ण प्रहर १२, जवार कुण्ण प्रहर १२, वाजरीकी खीचडी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चावलकी

अमुक पू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐब्रह्मणेनमः ॥ ऊर्द्ध्वदिशि० ॥ ९ ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ ॐनागाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्ये अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ ऊपर कसूंमल वस्त्र बांधे मौलीसे, पीछे ॥ ॐदशदिग्पालायनमः ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकद्रव्य समेत नागरवेलका पांन आदि सर्व द्रव्य चढावे, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक दीपक आगे धरे ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ ॐनमोआदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिनजंबुद्वीपे दक्षणभरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक चैत्ये अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिपूजांगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२ अत्रपीठेतिष्ठ२स्वाहा ॐसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि अष्टद्रव्यचढावे) ॥१॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐचंद्राय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि ग्र० उदय० अत्रपीठेति० स्वाहा ॐचंद्रायनमः ॥२॥ अथ मंगल पूजा ॥

ॐनमोभौमाय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमु० अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः ॐभौमायनमः॥३॥ अथ बुधपूजा ॥ ॐनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी० स्वाहा ॐबुधायनमः ॥४॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ ॐनमोवृहस्पतये सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० कमुकचै० अमुक पूजाम०आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः ॐ वृहस्पतयेनमः॥५॥ अथ शुक्र पूजा ॥ ॐनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिनजंबूद्वी० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

र्पीठे उदयम० ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥ ॐनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॐ शनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पुजा ॥ ॐन मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० ॐराहवेनमः॥८॥ अथ केतू पूजा ॥ ॐनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२उदय० स्वाहा ए ॐ केतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल वस्त्र मोलीसे वांधे पीछे नागरवेलके पान आदि अष्टद्रव्य रोकड़ द्रव्य समेत सांमने भेट धरे फेर एसा कहे ॥ ॐनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः ॥ वाये तरफ मंडलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे वाजू दसदिग्पाल की थापना करे ॥ जिस महोछवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो च्छवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल सें पवित्रपणे वणायाहुया सधवस्त्रीके या पुरषके हाथसें पांचरंग के धानके वाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा मालपूवा पांचरंगकेलड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें सव द्रव्य एकठो करे ओर घृत खांड अत्तर गुलावजल पंचरंगेफूल यह्नी वाकलोंमें मिलावे पीछे गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन वेर वाकुलो पर वासक्षेप डाले.) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ ॐह्रांह्रींसर्वोप द्रवविंवस्यरक्ष२स्वाहा ॐणमोअरिहंताणं ॐणमोसिद्धाणं ॐणमोआ यरिआणं ॐणमोउवज्झायाणं ॐणमोलोएसव्वसाहूणं ॐणमोआगास गामीणं ॐणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड़ गंधर्व जक्ख रक्खस पिशाअ भूअ डाइणप्पभइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसवेविलेवणा धूवपुप्फफलवश्वसणाहिं वलिपम्मि च्छंता तुठिकराजवंतु पुठिकरा संतिकराजवंतु सवंजणंकुर्वंतु सवजिणाणं संहणप्पन्नावन्न पसन्नत्नावतणे सवत्थरस्कंतुकुर्वंतु सवडुरियाणी नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितुठिपुठिसिवसत्थयणकारिणोजवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासकेपकूं मंत्रके वलवाकुलोमे मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा वलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखछोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके वाल खोलकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अंता, ५ पांचमा धूपधाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंगलवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहे. जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल बाकुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावे) (अग्निकूणके सांमने) ॥ सदावह्निदिशोनेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥ (एसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावे) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥ (बलबाकुल चढावे वाजित्र वजावे) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ यमापरांतरालोको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकविभोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ थोर वलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकमहोत्सवे सर्वोपद्रवाद्द्लिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्द्लिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐनमोयमाय दक्षिणदिगधिष्टायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्णमुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्द्लिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्द्लिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिगधिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द्लिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द्लि० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गन्ह२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द लि० गन्ह२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गन्ह० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि२ गन्ह२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालाद्दिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षमतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतंश्रावय२ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रौं:॥(सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं अर्हते

नमः) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीछै) ॐ ह्रीं अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीकः क्षः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके वांधै और जब मंगलजीके च्यारुं तरफ मौलीमेंढल वांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके वांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोडके वेठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछै तीन वेर नवकारमंत्रसें मं त्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सव स्ना त्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंगलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवश्य कराणी चाहियें. पीछै मं दिरजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावे अष्टद्रव्य चढावै. पीछै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकड्व्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपाला यनमः) एसा बोलता हुवा चढावै. पीछै मंगलजोके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें वांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछै वांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजव पूजा करै.) पीछै सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावै.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पडिकमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे वेठके द हिणागोडा धरतीपर रख के डावागोडा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंह्रिन मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी ४थी गाथा कहे. पीछे बेठके नमोत्थुणं कहके खमा हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै रंजितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालिनीदेयात् द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्री भुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ९ ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितडिंबामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितासिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचच्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवी नंदतानिवताच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअच्छुप्तादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड वाणपाणिस्तडिद्द्युतिः तुरंगगमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्वे श्री पार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोभयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःसदा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रादिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायिका श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सगकर स्तुति कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके वेठे चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरे १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्टा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मोली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करे. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंम रखे (पीछे) सोने चांदी वगेरे के कलसमें अछोटजल जरके सोनवाणी करे, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणे.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु२ स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंमलजीके च्यारों तरफ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करे, धूपखेवे (पीछे) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मंढल मरोमफली चारुं तरफ बांधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके॥ ॐ ओं ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः॥ इस मंत्रसें मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका छींटा देवे (ऊपर) चावलोंका साथियो करे, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साथिया चावलोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरे. (पीछे) केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ जूर्सीजूतधात्रीविश्वा

भ्योनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलनूमि तथा पीठकी पूजा करे, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हत्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे (पीछै) स्नात्रिया मंदरके नीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगमेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐनमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्टिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेतिष्ठ२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्टा करकेपीछै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्नूतोल्लसद्बोधा नात्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून यजेसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानंबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हद्भ्योनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् नक्तिदघेन्नक्तिनिर्नरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेपतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिनद्दलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उपसर्गैकनिवारणार्थं मन्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमः स्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालङ्कु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खड़ा रहै. उपाध्याय पद पूजा पढै (यथा) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पविन्नेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उन्दकालङ्कु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुक्लध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वादशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खड़ा रहै काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, लक्षणंदर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूणमें दर्शनपदकी

के खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरों में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावे, ॐर लब्धिपदका नाम बोलके खारका ४८ चढावै (यथा) ॐ ह्रीं अर्हंणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसव्वोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोकुट्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोदिठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोदसपूव्वीणं॥१७॥ ॐह्रींअर्हंणमोचउद्दसपूव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअठंगनिमित्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउव्वणइड्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐह्रीं अर्हंणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपण्हासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हंणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हंणमोज्भयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअखीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हंण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोतत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोघोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोघोरवंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोआमोसहिपत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोसव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोमणवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँणमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ अष्टचत्वारिंशल्लब्धिपदेभ्योनमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नाम वोल२ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका चढावे ॥ (पीछे) मंडलजीके गलेमें ह्रींकारजी स्थापन किया है (जहांसे) साढातीन नवलाका मंडलजीके चोतरफ देके नीचे (क्रों) एसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दिशायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव (यथा) ॐ ह्रीँ अर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥१॥ अनारचढावे ॥ ॐ ह्रीँ सिद्धपादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ आचार्यपादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अदृष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ अष्टगुरुपादुकाभ्योनमः स्वाहाः ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दाडम चढावे (पीछे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐ ह्रीँ जयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ जंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ थंभायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ जयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ मोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐॅन्हींअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी तरै) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावैं (पीछें) आठमें वलयमें १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपारी चढावै (यथा) ॐॅन्हींरोहएयैनमः ॥ १॥ ॐॅन्हींप्रज्ञत्तैनमः॥२॥ ॐॅन्हींवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐॅन्हींवज्रांकुशायैनमः॥ ४ ॥ ॐॅन्हींचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐॅन्हींपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐॅन्हीं काळ्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐॅन्हींमाहाकाळ्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐॅह्रीं गौर्यैनमः ॥ ए ॥ ॐॅह्रींगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐॅन्हींसर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐॅन्हींमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐॅन्हींवैरोव्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐॅन्हींअच्छुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐॅन्हीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐॅन्हींमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करे पीछे नवमें वलयके वायें तरफ शासनदेवीयां ॥ २४ की थापना कर पूजा करै ॥ २४ पूंगीफल चढावै (यथा) ॐॅचक्रेश्वर्यैनमः॥१॥ ॐॅअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐॅदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐॅकाळ्यैनमः ॥४॥ ॐॅमहाकाळ्यैनमः ॥५॥ ॐॅश्यामायैनमः ॥६॥ ॐॅशांतायैनमः ॥७॥ ॐॅभ्रूकुटियैनमः ॥८॥ ॐॅसुतारकायैनमः ॥ए॥ ॐॅअशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐॅमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐॅचंडायैनमः॥ १२ ॥ ॐॅविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐॅअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐॅकंदप्पायथिनमः ॥ १५ ॥ ॐॅनिर्वाएयैनमः ॥ १६ ॥ ॐॅवलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐॅधारएयैनमः ॥ १८ ॥ ॐॅधरएप्रियायैनमः ॥ १ए ॥ ॐॅनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐॅगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐॅअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐॅसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दहिणे तरफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥ (यथा) ॐॅब्रह्मशांतयैममः ॥ २४ ॥ ॐॅपार्श्वायनमः ॥ २१ ॥ ॐॅगो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ ॐनृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥१६॥ ॐकिन्नरायनमः ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐपण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायैनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंवुरुयैनमः ॥५॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछै चार दिशामें ४ द्वारपालकी थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे (यथा) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनमः ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनायनमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुप्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछै चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावै (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐकपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछै पूर्ण कलस के आकार ऊपरसें कियाभया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पढै. तव सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा घालके स्थापन करै) (यथा) ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीछै कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके वरावर पासमें वंगली का आकार किया दे (जहां) ॐन्हींविमलस्वामिनेनमः १॥ एसा

कहकेचढावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के बांयेनेत्रके पास वंगलीमें (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा बोलके चढावै २ ॥ पीछे तीसरा कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पींढिके दक्षिण तरफ वंगलीमें) ॐचक्रेश्वर्यैनमः (एसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा कोइलाफल हाथमें ले के नीचे पींदेके बांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः) एसा बोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछै दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै. वणसकेतो अपणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे अथवा सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आदि सर्व द्रव्य चढावे १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूणे) ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे (पश्चिमदिश) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ (वायव्यकूण) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐइशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ (अधोदिसि) ॐनागायनमः ॥ ए ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ए ॥ (उर्ध्वदिशि) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करै ॥ (पीछै यंत्रके पींदीके स्थानक नव कोठा किया हुया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) ॐसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

नपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐज्ञोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोज वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐशनेश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ छींटरंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ए ॥ इस तरे नीचे नवग्रहको स्थापनपूजा करे. पीछे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावे चैत्यवंदन कर थुइ कहकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करे पीछे यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे ॥ इति मंमल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करे तब तो उए महीने मंमल पूजा विस्तार विधीसे करता रहे ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण होये बाद उच्छव के साथ मंमलपूजा कराके नव२ उपगरणोसें उद्यापन करे. जलजात्रादि अठाईमहोच्छव कर धर्मशालासिणगारे. (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते चढावे, ऋद्धिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (उर) पंचायती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंमलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहे ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजद्रस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीअमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १ए ॥ रत्नेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्रप्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ ऋषभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २ए ॥ अजितचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांतिसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ डुक्तिनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ मल्लिनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ बलंभूतसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णचंद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥१८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुंभगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेण नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रभानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रभनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा०॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥११ ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥१६॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥१७॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिणनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रभाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्राभसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीविरूपिकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

॥ १

ईंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीअमरभूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रभसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलभद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्रातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीभमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २८ ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ९ ॥ पुष्करार्द्धे द्रितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीभी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुभद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीभद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुढधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मभूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमद्वीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा० १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननांम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननांम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरतेजिननांमः) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जं- द्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननांम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात कीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव जिनना०) आभाहिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीवलिभद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत, सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त- पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाग्वैकासरदातणो, र धरि समरण शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु वे भक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि तेहने, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु दितिदिशा, कथनार्में युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि वावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जा

णिये, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध ज्ञाग जसु ज्ञतमें, गिरि युग जलद समांन ॥ ६ ॥ ज्ञोज्ञवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तर शत तीस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाष्यो श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनराय ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अजित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वांणी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ विचरया महियल बोधता जी, विजय मझार सज्ञंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ पंच२ ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरैं जगजन तारता जी, समरयां संपति थाय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिनवरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल ज्ञाधरू जी, कनकवरण छत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित विमल प्रकाश ॥ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचास ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुज्ञातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥ ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए तपविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अनुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद्र ज्येष्ठ पक्षुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवच्छल्ल कथनधर न्नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-न्न जैनचंद्र सनूर ए, ए तवन कीधो जीमर्गजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधिज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसिद्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावणकर्मकी नव प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्मरहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रचला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)—सातावेदनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानुबंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोभर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्याख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोभर० २७, प्रत्याख्यानीक्रोधर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोभर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमांनर० ३३, संजवलनमायार० ३४, संज्वलनलोभर० ३५, हास्यमोहनीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, भयमोहनीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुगंछामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपूंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृत।

४)–देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरहि० ४७, नरका युरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)–देवगति ४९, नरक गति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगो पांगर० ६५, औदारिकऔदारिकबंधनर० ६६, औदारिकतेजस बंधनर० ६७, औदारिककार्मणबंधनर० ६८, वैक्रिय२बंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणबंधनर० ७०, आ हारक२बंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारकका र्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणबंधनर० ७५, वैक्रि येतजसकार्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कार्मणकार्मणबंधनर० ७९, तेजसकार्म णबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्रऋषभनाराचसंघयणर० ८६, रुषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्त संघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सु रभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुक रसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुरर सर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, खारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुकमालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया० ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभविहायोगति १२२, अशुभविहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, उसासनामकर्मर० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अगुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थंकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनामकर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बादरनामकर्मर० १३३, पर्याप्तिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म १३५, थिरनामकर्म १३६, शुभनामकर्म १३७, सौभाग्यनामकर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०, यशनामकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३, अपर्याप्तिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अथिरनामकर्मर० १४६, अशुभनामकर्मर० १४७, दौर्भाग्यनामकर्मर० १४८, डुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयशनामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृती २) उच्चैर्गोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर० १५४, लाभांतरायकर्मर० १५५, भोगांतरायकर्मर० १५६, उपभोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद विदघन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयमि विस्ता

२ ॥ वरणूं नविजन हितनणी, प्रवचनने अनुसार॥ ३ ॥ (ढाल ॥ ॥ रामचंदके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नांमे निन्न कह्या री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री॥ आनखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो री ॥२॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय, तीस कोमाकोमि नणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस कोमाकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय शुवे री ॥ ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मांन नणयो री ॥ ए नत्कृष्ट थिति जोम, केवली काल गणयो री ॥५॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म, अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री॥ ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म लहे री ॥ बारे महुरत मांन, शास्त्रानुसार मुदे री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच२ नेद जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो नेद नदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नव नेद, आयु च्यार विधे री॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक् नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अम्तावन्न, नत्तर प्रकृति कही री ॥ अष्ट करमना जांण, सबे विकल्प सही री ॥ १०॥ ढाल ॥ नण दल चुमले जोवन फिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण ठे, दर्शनावरण प्रतीहार, नवियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु लिप्त असिधाराना परे, वेदनी कर्म मुदार ॥ नविय० ॥ १ ॥ मंदिराठाक समान ठे, मोह सुनट महराण, नवि० ॥ खोमे बंदीखांन सारखो, आयुकर्म प्रमाण॥ न०क० ॥२॥ चीतारे सम नांम कहीजे, गोत्र कुंनार समांन, न० ॥ श्रीघर नंमारी सम दाख्यो, अंतराय कुध्यांन ॥ नवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए नावना, वीर वदे व्याख्यान, न० ॥ कर्म संसार स्वरुप ठे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ नवि० क० ॥ ४ ॥ मिच्छ सास्वादन मिश्र अविरति, देसविरति प्रमत्त,

ज० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सवीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क० ॥५॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, ज० ॥ सुहुम संपराय दशम ठाणें, विन मोहायु षट खंध ॥ जवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, यो ग युगत च्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद जोय ॥ जवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयडी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार; ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन अथवा, चउत्थभत्त तप सार, जवि० ॥ तप उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण भला, अष्टमंगल वृद्ध थाल, जवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १२॥ इम आराधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी भरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचनें स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवझाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयडी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो, नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्कर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अखरे, संपूरण पांचसें मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध, सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी बेअ, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, बीजे भव राजसिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्द, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥ नवकारने परभाव, सवल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥ ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ ठामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम न मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्टित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्क करे नरने तिहां, घे बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

भद्रा नामे नारि सुहाया ॥ चंडपिंगल चोरथो नृप दारा, गणिका ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहेरयो हार ते जाणी, सूली दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पछतावे, चोर समीपे ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रभावे वंछित लीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥ ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी ठेठ ॥ एकदा चोरी करतां झाल्यो, राजा हुकमें सूली घाल्यो ॥ ४ ॥ हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमें जे कीधुं, सुभद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥ भरतनृप भावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वीजली बांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपासी चलावियो ए, अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाछरूथा एक चारतो ए, नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप अनेक, न० ॥ छुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ तीर्थंकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२ अधिकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयाकुसल वाचक वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ।२०००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा वास ७ ॥ ४ । णमोउवज्झायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सव्वसाहूणं ॥ उपवास ए ॥ ६ । एसोपंचनमोक्कारो ॥ उपवास ० ॥ ७ । सव्वपावप्पणासणो ॥ उपवास ० ॥ ० । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥ उपवास ० ॥ ए । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ए ॥ एसें नवकार मंत्रका ६० उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वमानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उच्छव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रभावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुभभाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण भणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणैं पक्खि पंचमि दिणैं, नाण संभवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरभवणथी बारसैं, पउमपह जम्म वलि दिक्ख तसु तेरसैं ॥ वीर सिवमां वसैं पक्खि हिव ऊजलैं, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार सि मिले ॥ २ ॥ भास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि यो, सोइ छठैं रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे संयम आदर्यो, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यो ॥ सिर वर्यो मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसैं वलि मल्लिजिणने जम्म दिक्ख सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्खा नाण छठै अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संभावियै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण भावियै ॥ ते परि सवि रे गीतारथ सद्गुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सदहै ॥ सद्दहै

सहूये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चनद्दसि जनम संभवनों थुणौ ॥ पूनिमें संभव दिख्क पांमी दया धरि जगजोवनी, छिव पास वदि दसमी इग्यारस जनम दिख्का पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेरसि रे संजम रंग सुहाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो केवली; पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयो नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनिमें धर्म्में वसें ॥ माहाह छठ पउम चवियो बारसें शीतल थयौ, वलि तासु संजम कलिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें छिव अनुकमें ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपुजनों, कल्याणकरे जनम तंग अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मांनों बिहू बीजे विमल धरम सुजानिया, श्रीविमल दिख्का चउथि अठमि अजित व्रतपति पांमिया ॥ नवमियें दिख्का अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥६॥ ढाल ॥ फागुण वदि छठ सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंदप्पहु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्वय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिज्जंस तणो चवदस वसु पुज्ज, जम्म हुतं अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्वय वय उज्जव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पखि चउथि नाण चवणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज छिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने संभवने मुगति, नवमि इग्यारस सुमति नाण वलि पाम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमनाह केवलसिरि पायो ॥१०॥ न्नास ॥ हिव वैसाख वदें पडिवा दिन, कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशीतल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिरका नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, धरमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउ ॥ १२ ॥ सुमतिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आणंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वामी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पक्खि छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुव्रय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥ न्नास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि विमल ॥ मुरक नवमि नमि वय गहण, सेय छठे चवण ॥ वीरनो अठमि नेमि मुरक चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधुकर परवरयो ए ॥ वहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमहणि मुगति रमणी वरयौ ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मुगति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जामिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अह निम्मल बीजे, सुमति चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म न्नणीजे ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर नेमि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्रय पूनिमरयणि, चविउ गुणमणि वास ॥ १७ ॥ न्नाद्रव वदि सत्तमें संति ससि चवण न्नवरकय, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गम्र ॥ इरण अम्मावसो ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पुनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कल्याणक रासि । १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत नत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कल्यांण नीते कोरि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कल्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच नरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कल्याणक हुवे इण दिन सुर करे उछव घणा ॥ जिम हुआ ते तिम वली होस्ये पंच कल्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कल्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुपिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताक्षर संलक्ष० यह रुपिमंमल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणें. रुपिमंमलमें जो मूल मंत्र है सो शुन्न दिन शुन्न घमी हाथमें फल फूल न्नेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. न्नेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद उजमणा करे. उजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीछै शक्ति होय तो विधि संयुक्त रुपिमंमल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष न्नक्ति करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुन्नक्ती करे, साहमीवछल करै. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुपिमंमल सुणणेवाले पूजणेवाले न्नव्यजीवके घरमें कन्नी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल न्नरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खमांर केवल लह्यो, पूजो जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमांन ॥ ३ ॥ मांन गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, भुजाबले भवजल तरया, पूजो खंध म हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना भिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंडनें, हृदयक मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतुल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तीर्थंकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ॥ व सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवडा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे, जल विन कुंभ न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दांन ॥ भावें भावना भाविये, भावें केवलज्ञान ॥ ४ ॥ पांच कोडीनें फूलडे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राली, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविन्याली ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिनाम-तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पुजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन हद तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्मकायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एयां योगथी समयें एक, हीना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, करवा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण सभे देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तीजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत भागी ॥ पुव्व पओयपसंग सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण निरागी ॥ चेतनभूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखै वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै भवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता, म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नगरङ्गसें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अवंधनें, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इकु गुण नव परमाण योजन लकें कही, म्हा० यो० ॥ वर्त्तुल विशदाभास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मक्षी पंकथी हीन भणी सिद्धांतमें, म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपब्भारा नाम सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो मनगेहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव पद ध्यावो केवलज्ञानी भासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहको, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ भवकूपें पापें पतत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल बींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खग्गथी जेणे, हणयो क्रोध सुभट सम देणे हो, गणपति गुणपेखी ॥टेर॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोभन मद्दव वयरे हो ॥ ग० ॥१॥ दंभरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥ मुर्छावेलथी भरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा मल्ल ताड्यो, पुण वैराग सुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जिण णिवेद्या हो ॥ ग० ॥४॥ रस रुति गुणथी लीणो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संजम पाले आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता घन भंजन । जिन वर दिसत दुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंब लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए।आगमसें पद तुर्य । तिनपैं अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने३ दूरी हुयने, चेतन भापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं मुझ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुझनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगै निज पंचेंद्रीनो, रचना चरम भुलाणो ॥ नाणावरणी खयउपसमसें, भावेंद्री मंझाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ द्रव्यै ते परजाते कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क मैं उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक वहु मुझकुं संका, तेरे संगे लागी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में भयो तोसुं रागी॥ दू० ॥ ३ ॥ उप कहिये हणियो भवियानो, अधियां लाभत आय॥ आधीनांमन पीझानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सठताकुं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपैं तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

नये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण भरचो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत दे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकपाया जगजन कहे, धरे चनगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० छठै पूरव कोम हो मु० ॥ शत लोगम आगम करै, सा० लघु काले गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानद्धीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रचलानिद्रामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरे, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तोपिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पाले दोप बयालीस टाले जी, षट् काया गोकुल रखवाले नव विध ब्रह्मव्रत पाले जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जो, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावे दमपद गुण उपजावे जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तब करि लहे, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवसम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लक्षन अभिरांम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध जणयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज सतम नरक भलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंद लहेरी ॥ उपशम क्षायक भेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ भवसायर हे अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद भावे अप्रमाण, नाण चारित्र भलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाभै कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपस्सत्ततत्त सूधा सरधै समकित गुण उजवालै जी, भेद भेद करि आतम निरखो पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो भवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ भाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ भव गुण पजवि उहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल भांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सतम पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, भविजन अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणे जेह विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय भै इंद्री तारू,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उंदी मण केवल हे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्स वलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिजुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुन्न अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसे जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखे जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कहियें लहियें गुण गंन्नीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करे शुन्न जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इसु कृति मान कसायघो ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदान्नास निरसंग ॥ सुग्यानी साज्नलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करे, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्य कारण जाव ॥ सु० ॥ करवा जो गसुधामता, लब्धा संख स्वन्नाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते होते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ प्राता पस्त्र प्रकारता, सप्त प्रनृतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तहो घन रुपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन- मिल पद

धर्ममें, कुशल भवतु अभिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावे आतम ध्यान लगावे जी, बारे भावना सूधी भावै सागर पार उतारै जी ॥ खट खंड राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारै जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव सिव जाण ॥ त्रिहि श्रं तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदैं समता युत खिरें, दृग्घन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण भव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ समता सहितें जिनतें भारी, भली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम है ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल है तमकी रासी, तप भानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति दुकर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै, तपपदही चैतन वहियै रे ॥ म्हा० ॥ पाठक श्रीहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं भासे रे ॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते जाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य जावसें द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्दृषज सर्वज्ञ, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाद्य, नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ स्ववायेन, ज्ञानत्रय युते न यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवंस्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वंशात्, संजवः संजवाजिधः ॥ सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥ ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं साधं, वीतरागं जगत्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांके हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजिनंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रोस, तन्यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जृद्धेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भुतः, पद्म लक्षण धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णे, डुस्तरे पततां नृणां ॥ त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ट नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं नौमि सदा विभूं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिछ विज्ञान, तमोव्यूह वि नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ (अत्राद्यश्वत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोवदत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वांछितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरामा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोववातोयो, मायामकरलांछनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्री मच्छीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांछ्ह कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राकृक्क संवृंजनव्यूहं ॥ डुष्टंशंभोग्रहेविभो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यभः ॥ श्रेयोवृध्धिकरोज स्रं, खड्गलांछनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुब्रसार्वे, श्रेयांसश्रे यसैः सह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरीवार्त्तितरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिछे दितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंहि, वासु पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इ ति वासपूज्य स्तुतिः॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदीयस्मरणंविना॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशाःसिंह सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्राद

योपियस्यांतं, गुणानांलेन्निरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक, न्नानुवंशार्कसन्निन्नः ॥ कनकप्रन्नसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥ तवागोपिपुरश्चारी, न्नूतलेदारयशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधीसं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥ ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्रीयुतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यन्न ॥ सूरिन्नूपतिसंजात, छागलक्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, न्नवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः सुदर्शनन्नृपोन्नूतं, नंदावर्त्तांकसंयुतं ॥ अंन्नोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसुवर्णन्नं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यैंप्रन्नुतयाजिनं ॥ चरीकर्म्मिनमस्तमा, श्ररायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥ कुंन्नप्रन्नावतीपुत्रौ, नीलवर्णोघटांकन्नृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त, नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ छत्रत्रययुतोन्नाति, देवयोविष्टपत्त्रये ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनमुदास्तवे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ सुमित्रन्नृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुम्मलक्षणन्नृद्मर्म्म, दायकस्यामलच्छये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणकर्म्मारिमंकुल ॥ देहित्वंमेव्ययीन्नावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयन्नूपाल, कुलोत्तंसहिरण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकन्नृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये, समुद्रविजयोन्नवे ॥ हरिवंसहरौशंन्नौ, शंखांकेकमलप्रन्ने ॥ ४३

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, ज्ञविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य ज्नंमार ज्नरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपत्ति सहज वरो रे॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न०॥३॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुज्ञाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इव जिन ज्नए आगामी होयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥३॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज ज्नज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर द्वार मत ज्नमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज्न ज्नाव, इव कारज सिद्धिनो लाधो एह ऊपाय ॥ तुऊ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इग तुऊ अनुग्रहथी सुख संपति मुऊ आय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उवज्झाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

ज्ञग विधि चारित्तें वुध विध तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि रुपम शिवसुख थाय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ नुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ द्दिव निद्धि उदय करि चारित्रनंदी मन जाय, जिनचंद सूरीसर खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जेतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू करे, कजी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वधी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि काल पूजा करे. प्रजातसमें राईपमिक्कमणा करके पीठे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करे. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करे, वासक्षेप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करे. गुरु पास आयके अप्रुच्छिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प च्चस्काण करे. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु णोकों विचार कर नमस्कार करे, सो लिखते हें. सव गुणोमे इच्छा मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करे ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
६ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
७ दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछे स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछे मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीछे पडिक्कमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही पडिक्कमके चैत्यवंदन करै, फेर २।३ संथारा गाथा सुणें ॥ निद्रा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रभात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग हे इस वास्ते गेहूंकी रो०

टीसें आंबिल करे॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करे. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके आठ लोगस्सका काउसग्ग करे, एक लोगस्स प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करे. आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करे. आचार्यके ३६ गुण हे. छत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ आकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३५ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह बत्तीस नमस्कार करके अन्ननूससि० कहके बत्तीस ३६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करे. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ श्रीसुयगडांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
८ श्रीअंतगडदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२२ अबिंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपुर्व पठनगुण यु० ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
२५ लोकबिंदुसार पठनगुण यु०॥इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः॥

इस तरे २५ नमस्कार करे. खमा हो के अन्नत्थू० कहके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करे. साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते उमद के बाकलोसें आंबिल करे. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करे॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ एकेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ चोइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करे, २७ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे, पीछे पूर्वोक्त करणी करे. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसें १०८ होता हे, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करें. सम्यक्तके सडसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करे ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद्द० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्तरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधूवर्ग विनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद्द०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद्द० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषण रहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद्द० ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्द० ॥
२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२ए नैमत्तिकप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्याजृत्प्रज्ञावक सद्द० ॥
३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद्द० ॥
३३ कविप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३४ जिनसासने कौसलता जूषण सद्द० ॥
३५ प्रज्ञावनाजूषणरूप सद्द० ॥
३६ तीर्थसेवाजूषणरूप सद्द० ॥
३७ स्थैर्यताजूषणरूप सद्द० ॥
३८ जिनसासने जक्तिजूषणरूप सद्द० ॥
३ए नपशम गुणरूप सद्द० ॥
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ आस्तिका गुणरूप सद्द० ॥
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद्द० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥
॥ इस वजे सरूसठ नमस्कार कर खमा होके अन्नत्थू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछै पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेकरीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनैनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करे, खड़ा होके अन्नत्थू० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करे. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसोंसे तंडुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरुप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

११ संयमधर्म्मरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ बंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ बेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रभक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंमगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुड्यंतरसहित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ ऊणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायश्चित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरे ७० नमस्कार करै. खमा हो के अभ्रबूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पच्चास भेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥

४ अभ्यंतरऊणोदरी तपभेद त० ॥

५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

१९ कायकिलेस तपछेद तप० ॥
२० रसत्याग तपछेद तप० ॥
२१ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
२२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥
२३ आलोयण प्रायछित्त तप० ॥
२४ पडिक्कमण प्रायछित्त तप० ॥
२५ मिश्र प्रायछित्त तपसे० ॥
२६ विवेक प्रायछित्त तप० ॥
२७ उपसर्ग प्रायछित्त त० ॥
२८ तप प्रायछित्त त० ॥
२९ छेद प्रायश्चित्त त० ॥
३० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
३१ अणवस्थित प्रायछित्त त० ॥
३२ पारंचिय प्रायछित्त त० ॥
३३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
३४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
३५ चारित्र विनयरूप त० ॥
३६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
३७ वचन विनयरूप त० ॥
३८ काय विनयरूप त० ॥
३९ उपचारक विनयरुप तप० ॥
४० आचार्य वेयावच्च त० ॥
४१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
४२ साधू वेयावच्च त० ॥
४३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥
३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥
३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥
३७ संघ वेयावच्च तप० ॥
३८ कुल वेयावच्च त० ॥
३९ गण वेयावच्च तप० ॥
४० वायणा तपसेनमः ॥
४१ पृछना तपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥
४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥
४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाशत तपपद भेदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नथूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घमी देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मोली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड्व्य लेके नवकार गुणता नया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीछै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि डलीको लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंम्मल करे. सिद्धचक्रजी कि चौ तरफ तीन गढ चूर्नीके आकार वनावे, पहिले गढमें अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करे. पद२ के रंग मुजव गुण प्रमाणसें रत्न चढावे डर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजव घीनुरेसे नरके चढावे पंचरंगी ए धजा चढावे, दूसरे वलयमें सोलें श्रीफल अथवा सुपारी चढावे. तीसरे वलयमें ४७ बूहारा चढावे, नव निधानोंकी जगे नव वर्न फल चढावे, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्वान्न रंगरंगके चढावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करे. डर जिनमंदिरमें वाहिरले मंम्मपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणे मंम्मल रचना करे. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करे, नवपदजीकी पूजा पढाय कलस ढाले, धवलमंगल गीतग्यान गावे, वाजित्र वजावे, महा महोछव उदार चित्तसें करे, मंगलदीप आरत्ती प्रमुख करे. दूसरे दिन विसर्जन करे. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंम्मल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके डलीके तपकों पारै. तप पारणाकी विधी आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानन्नक्तिके कारण ए पूठा ए थोटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव झिलमिल ए रुमाल ए मेरा ए सिंघासणा ए थापना ए चंद्रुआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज वणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावे. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, इत्यादिक यथायोग्य शुन्नखेत्रमें खरच करे. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोछव आते हें जिसमें चेत्र आसोजकी अठाइ तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याहं २) कहते भये अष्ट द्रव्यसें पूजन करें, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें भक्ति करै, पीछै नवमें दिन अपणे २ जन्मकूं सफल मानते भये अपणे २ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाइ आसाढ चोमासेकी (१४) पीछे (४९) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोछव करै. लेकिन् यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीभी जावें, पहली पीछैभी करलेवै ॥ यह नवपदजीकी ओली शाश्वती अठाइसेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके भव्यजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली भगवान भद्रबाहुस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते भव्यजीवोंको यह तप प्रमाण हे, उर जो अभवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें भमेंगें. सूत्रोंमें भगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें उर उन सूत्रोमेंसें एक हरफकेभी यथार्थ अर्थकूं तोडके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अभिन्नदसपूव्विणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा भयेकूं भगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा हे, एकार्थ वाचक हे इस वास्ते जङ्बाहु उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त छेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अजी जंमारोमे मोजूद हे ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (७) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक जव्यजीव) अष्टापदजीकी उली करते हें (जिसमें) पमिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै. (इतना विशेष हे) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल (वा) एकासणेका पच्चरकाण करै, पीछे पूर्णमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंमल रचै, सो विधि लिख्यते हें ॥

पूर्व
१ । २ ।
उत्तर १५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।
त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
वर्द्धः
दक्षिण ३।४।५।६।
७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।
पश्चिम

(चत्तारि दरिकणाए, पच्छिमए अठ्ठत्तराई ॥ दस पुव्वाए दो अणं, वंदामि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वाइं उसजमजियं ॥ दरिकणउ संजवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंमलमें बणाणा. इहां कांकणमोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंमलवत् जाणना. नवग्रह दश दग्पाल थापना करे. पीछे एकर काव्य पढर के एकेक कोठेमें एकर

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशत्वं, नंद्यायत सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतोनेता, नंद्यायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीरुषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंभक्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्बोधितंज्ञान, कंद धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंभवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभवस्वामी० ॥ ३ ॥ येभिनंदनतेतीर्थ, राजपादसभाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसभाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअभि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीवयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाहः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ सुदष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूषेव, भूरिशोभात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वं तवश्रुतंश्रुत्वा, दर्प्पकोपक्रमानलं ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प्पकोप क्रमानलं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व०॥ ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेडेण, येरभाजिसमुन्नतः ॥ येरभाजिसमुन्नतः॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐ श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रसाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूभाज्ञां, परमोक्तगतिर्भवा न् ॥ अनंतानसत्वविश्रांतं, परमोक्तगतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥११॥ वासुपूज्यनदस्वर्गी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर स्वंविरहंमोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि दुर्जयमुख्येस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि मल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र येोलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं त० ॥ १४ ॥ नाश्रुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि नद्धर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥ ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेद्युतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक, सारंगविदधेद्युतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥ कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाद्दतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि धुतारोवृषाद्दतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७ ॥ येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्जव्या, व नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥ नां हिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेन्नियतेमल्ले, प्रतिपन्न सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥ श्रीसुव्रतजिनाधीश, मकमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मक मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥ देव्योपित्वद्गुणोद्गाना, सदामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्ञक्त्या, सदामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥ ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्त्वयावर्षे, शमितादानवारणा ॥ श्रीने- मेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकुस, महादारतरंगिताः ॥ नात्यंतिचरिन्नंते, महाद्यारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ वि ज्ञन्नमेगुनिस्सीमां, तत्वांनःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीछैं बलवाकुल देके दिग्पालों को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक नया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करे. एसेंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये. इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पूंजसें सेत्रुंजयपर्वतकों स्थापन करै (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै. अक्षत मोतियोंसें पर्वतको वधावे, केसरचंदनसें पर्वतको पूजै. सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहई॥चउछठ्ठअठ्ठम-दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनक अधिकार लिखते हैं. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखवे शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावै, पीछै श्रीसंघ खडा होवे (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाल चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै. यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस९ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० उर फल

फूल यथासंन्नव चढावे. धूप खेवै, कपूरकी आरती करे, पीछे सिद्ध गिरी गुणनर्ग्नित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० खमासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करै. पीछै (श्रीसेत्तुंजय पूंमरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्नव होय वखत कम रहे तव एक लोगस्सका काउसग्ग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछै अनेक प्रकारका वाजित्र वजावे ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अव इसी तरै (वीस । तीस । चालीस । पचास । यह चारों पूजाके न्नेद जाण लेणा (इतनाही विशेष है) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करै. चोथी पूजामे १० की जगे ४० की विधि करै. पांचमी पूजामें सव विधी ५० की करै. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपूंमरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करै. उत्कृष्टसें पांचु पूजामें जुदी२ धजा चढावे. जघन्यसे पांचू पूजा किये पीछै १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करै. गुरूके मुखसें उपदेस सुणै, संपूर्ण तप हुयां पीछै सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ध्यानपुजा करै, गुरुन्नक्ती करै, साहमीवच्छल करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीऋषन्नदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपूंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तन्नये. (इसवास्ते) न्नरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्रीपूनमकों आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस न्नवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पूत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर.

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परन्नवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होणेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसायलै, पुंमरगिर रे गाईस हूं सुन्न नावलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीन्न जो मुख हुवे, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवे ॥ (उल्लालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिराजना गुण है अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण न्नाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःख दूरे राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति न्नरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंमरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै न्नलो ॥ (उल्लालो) गुण न्नलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पूंमरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरे, बहु न्नाव न्नसे त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ न्नावना न्नावे तेण दिवसै पंचकोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरदही ॥ चउथ छठे रे अठम दसम डुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन वसै ॥ (उल्लालो) मन वसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअठे परंपरा, ते मोह माया कपट छंमी सुणो नवि यण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियडे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊना थई नवकार गुणंता, दस२ जेती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु नरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदे, जघन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जेती, राखी करी दृष्टि जिनंद सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये नांजे कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज एह, इसी परै बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गणीजे, एक चित्त सूधे शुन्न पुन्य कीजे ॥ ११॥ धजातणी रोप तिहां करीजे, एकेक पूठे अथवा गिणिजे ॥ मद्दुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्व प्रजु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवच्छल करो नविका नवसमुद्र लीलावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धिवृद्धि बहू लहे, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥१३॥इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वेहु स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुन्न धर्मी शुन्नदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस२ (५२) बावन उपवास

करे. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय. ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब उजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंमल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवछल करै, मंमलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकार:॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महिनेमें मिती वेसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीऋषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया. उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोम्नि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडभी वाजित्र ५, एसे पांच द्व्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावे. पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकक पच्चरकाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, और जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जो श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोछव करावे. शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उछव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीमा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे सो लि० हे.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्य

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंगल हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करै, कोइ भगवानके मंदिरमें नाना प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पाळे, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवे सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिलसें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदै, पीछै गुरुके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांझकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासै फागुण चोमासे कोंभी सेवन करैं ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस देसमें श्रावकण्यां इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हे. जिसमें उत्तमफलको देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ छुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ ओली) इस तरे पांच ओली करै. तपोदिन २५. उजमणें २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

ढली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लडू चढावे ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे ढली ३ करै. तपो दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावे ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञानपूजा करे ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें स्नात्र पूजा करावे ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करे ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकासणं १, एकलठाणो १, दत्ति १, नीवी १, आबिल १, यह एक ढली. इसी तरे ढली आठ करै. तपोदिन ठठ, ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूदनतपः ॥ ७ ॥

नाद्रवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अन्य ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे नरै, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखे, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥इति अक्षयनिधि तपः ठ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगे) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञाननक्ति गुरुनक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करे. अंबिकादेवीकूं वेस चढावै॥इति अंबिकातपः।

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातप: ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दि: १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. ऊजमणे एकसो वीस लड्डू मंदिर चढावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके ढोढी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति ढोढी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवासके दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढावै, सत्तरभेदी पूजा करावै, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतप: ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावै. इस तरै वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल वणाके सा तें राज सात पावमी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावे ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूंजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावमी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावमी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिये. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावे ॥ इति अष्टापदपावमीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा नरके आठ लडु देव आगे चढावे ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंमित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गकी पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावे ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) साकरका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चोथे तेले) लडूसें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पार णा. पारणे प्रथम साधुकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृतते लातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय ऊगडेमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभै, ग्यानपूजा करै ॥ इति दालिद्दहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, वेइंद्रिये छठ १, तेंद्रिये अठम १, चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, छकायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

छठ पांच करै ॥ इति पुत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्त्तारसुखतपः ॥३४॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्रावकणीयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे, ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवछल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोंमें अपणा धन

खरच करे, धर्मका उद्योत करे ॥ इस तपस्याके प्रभावसें इस भवमें संसारसंबंधी दुःखदालिद्र दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परभवमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति वुटकर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भाद्रव महिनेमें मिति भाद्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महिमा कहते हे) जेसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमें अभयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममे संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहि चूडामणी १०, ज्योतषीमें चंद्रमा ११, तेजवंतमांहि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तुरंगमें पंचवल्लभकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें भंभा २६, स्त्रीमांहे रंभा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दातारमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज उत्तम होतो हे. इस तरे सर्व पर्वोमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवछरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूषण पर्वकों भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आणेसें प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें भगवंत की भावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवत्सरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महोत्सव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हैं ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, प्रभातसमय नमस्के सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आभूषण पहरके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते भये, दान देते भये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते भये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करकै आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपमह बजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी भमभूंजा इत्यादिक सबका आरंभ छोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रभावना करै ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार भक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवत्सरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने शक्तिके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवत्सरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसे खमावै १२, पारणेके दिन पोसह एमिकमणेवाले साधर्मीभाइ-

योंकी भक्ति करे १३, गुरुभक्ति करे १४, संवच्छरी दान देवे, साहमी वच्छल करे १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करणेसें आठ भवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे (ओर) केइयक भव्यजीव अत्यंत शुद्ध भाव धरतेभये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे ओर सुणनेवाले प्रमाद निद्रा विकथा छोडके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धभाव रखके इकवीस वेर सुणते हे, सो भव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे भव सिद्धिस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोच्छव जो भव्य जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रभावीक हे, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे ओर नमस्कार करते हे ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे ॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरण कियाभया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन हे. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे भी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीभ करके कहे तोभी महात्मका एक अंस भी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाण जो भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगें सो अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगें. ओर परभवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगें ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की ओली तथा अष्टापदजीकी ओली विधिसंयुक्त करे. सो सब विधि पहली लिखी हे उसी माफक करे॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें भय सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त सा० साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आ यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व वात भव्यजीवोंके सामने निरू पण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शु क्रशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं भेजा. पि छाडी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते भये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि छली दो घडी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये. जिस समय भगवंतका निर्वाणकल्याणक भया उस समय चोसठ इंद्र देवताग णके आणे जाणेसें वडा उद्योत भया, उर जो राजा पोषधमें बैठे भयेथे सो भावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्य- उद्योत किया. एकमके प्रभात समें देवतोका आणा जाणा उर व चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न भया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे भाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमा या, शोक दूर कराया जिससें भाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वडा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणकका अधिकार सुणें । गोतमरास सुणें. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उच्छव करणा चाहियै ॥ दिवा लीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन सर्व ञव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ञी नही हे. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्कर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण ञये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्ट पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साथिया करे, फल फूल प्रमुख चढावे, पांच वत्तीका दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकड्रव्य चढावे तथा पुगा विटांगणादि चढावे. (ज्ञानपूजा लिखते हे) नमंतिसाअंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविहेयपूर्वि॥ ञत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुप्फपसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरासएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाञ्जायञवक्कयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै, (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे ञावपूजा करे सो लिखते हें) खमासमण दे के। इरियावही पडिक्कमें। लोगस्स कहे। बेठके। मुंहपत्ती पडिलेहे। अणूजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवे, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिञास ञानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापित जिन गारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पडिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, भेद पचास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाशै, बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मानो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुभव उपगारी, अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधै, देवचंद आणा सहित नयभंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपंचमोए, पूयातवेगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढके) पीछे ॥ आभिणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवउहनो पांच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञानायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकभास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करै, सो पूर्वं नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ इस माफक करैं ॥ पीछे (ॐ ह्रीं णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचरांग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे भाषियो रे लाल, उववाई जाल उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० व०॥२॥सुयखंध दोय छै जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० व०३॥ हेतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षर पदने छेहडे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०व०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छै इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० व० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए भाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० व० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारु श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु० विधिपूर्वक तुमे सांभलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० व०७॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे भव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ७ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥मोरालाभन॥ त्रिणसे तेसठ पाखंडीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुदखंध दोय छै, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो०॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मीठो० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥मो०॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥मो०मी०५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निवद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिन पणत्ता रे भाव ॥ मो०॥ भाषी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मीठी० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी॥ ए चाल॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो॥ हा रे देखी२ भाव, हां रे जीवाजीव स्वभाव ॥मो०॥ सबल जगत करी गाजतो सेवा [०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो०॥

गुहिर जाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें वलि कुंम ॥ मो० ॥ गह्वर आगर द्रह नदी रे जि०, जेहमेंअछे रे उदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचना रे जि०, संखराता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेढ सिलोक निजुत्तसुं रे जि०, संगहणी पडिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु संख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय खंध इक राजनोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उदेशादिक वीस छे रे जि०, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशासन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद कहे ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥मो०॥७॥ इति श्री० ठा० सं०॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ढाल॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे वीजली॥ एचाल॥

चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा उपांग करी सोन्ना वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी जापा साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित जाव कुसुम परिमल व्यापो घणो, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीये एहथी जाव विरोध कांइ नथी, हो लाल वि० ॥ जांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो०॥२॥ एकथकी छे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोडाकोडि प्रमाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकतणो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छे एहना सही, हो लाल छे० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके जला, हो लाल ज०, संखरायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेव्रत्तरा, हो० स०, पदनैं अग्रज्ञदग्र सं-ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ न्नाष्य चूर्णी निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां न्नेद गंन्नीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाएयो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे न्नृंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर शिर सुरगंग तन्नी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-ग्रंथतणो जुगते वस्यो, हो० त०, साकर सेलरूी झाख थकी पिण मीठस्यो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने न्नाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ढाल पंथीमानी॥ पंचम अंग न्नगवती जाणिये रे, जिहा जिन वरना वचन अथाह रे॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगरूी रे, जेहनी छै न्नद्दाम न्नवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति न्नलो रे, एकसो एक अध्ययन न्नदार रे ॥ दश हजार न्नदेसा जेह ना रे, जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरथे न्नरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परन्नावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र न्नगवती रागसूं रे, तो होय न्नवसागरनो त्याग रे॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे द्रव्य चढाइये रे, सम्यक् ज्ञान न्नदय होय जेम रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, न्नगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण नव सीके वंछित काज रे ॥ परनव विनयचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुगतिपुरीनो राज रे ॥ पंच० ७॥ इति श्रीनगवतीसूत्र सिझाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरे मालिये ॥ ए देशी ॥ बठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना बे अरथ अनेक नई रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातमी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंम हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्ती उपांग बे जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ नुनवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ द्यान चैत्य वनखंम सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ नोग परि त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चक्खाण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुन कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान वलि तंत ते अंतक्र त्या कही जी, धर्मकथाना दोय बे खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज बे जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोमि तिहां सकल कथानक नापिया जी, नाख्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार नला पद एहना जी, एह थकी जाये कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परें जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिले जोया एकके होय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल बिछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्दस विचार रे ॥ दस२ संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पिण सूत्र भएयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड केवली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी तल्पिका जी, कल्पिका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा वे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, तुरत लहै अभिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इतिश्रीअंतगरूदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुझने आई हो ॥ श्रावक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सूणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम२ अंतरगति भीजै हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ ॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै वकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहुको राचो हो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आधा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावे, प्रश्नव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाउं ॥ पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा ॥ ते छै अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणिचूडा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहिये, लबधि भेद सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुयखंध एक छै दसमे अंगै, पणयालीस अज्झयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥ माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोय छै, निश्चय नय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै ते आदरिथै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कडखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम दुकृतफल भोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल भोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु०२॥ दोय श्रुत खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥ सु०॥३॥ सरस चंपकलता सुरभि सहुने रुचे, अन्य उपगारनी बुद्धि माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणिये, जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअछै, दुकृतने सुकृत जोवो विचारी ॥ दुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारिये गुण संभारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंदा निर्गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ वांधे ॥ नारकी प्रकृत तज सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांभली धरमधंधे ॥ सु० ६ ॥ सुरक ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो वीर शासन जिहां सूत्रथो, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागे ॥ सु० ७॥

॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में गुण्या, सहेली ए ॥ आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥ भाख्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंकणी॥ पसरी अंग इग्यारनी, स०॥ मुऊ मन मंरूप वेल कि ॥ सींचू ते हरखे करी, स०॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी जे सांभले, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि॥ तो ते फल लहे फूटरा, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी हिये, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ भास करी ए अंगनी, स० ॥ वरत्या जयरकार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें, स० ॥ वरषाऋतु नजमास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥ पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥ तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥ ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उपगारी सुगुरु वताई, पांचु भेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करसेंधनता करी ॥ सक्रिय संजम करतांमुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, बाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे०३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि ज्ञलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो ॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु ज्ञाष्यो, तडुज्ञयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग ज्ञाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग छै अति रूमा, छ छेद पयन्ना नहि कूमा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूमा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि ज्ञाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियें, संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन ज्ञवमारग कहियै ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै, आराध्यां निज अनुज्ञव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावै ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महानेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्त्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा ब्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पमिकमणा करै, देववंद-

नादि करे, (ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै. कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावे, अठाई महोछव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, (२१) वेर सेत्रुजरास सुणे (ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसें २१ जेती देवै. (कदास) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंमा होय तहां महोछव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, उपवास कर के वा चउत्थभत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, साहमीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावम वारखिल्ल प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता हे उसका निश्चे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. वहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोके दरसण करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठावनकी संख्या मिली, ओर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत भव्यी जीव होंगें सो शुद्धभावसें इस तीर्थकों सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यभक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक वृत्तिसें जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी भव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका भवभ्रमण समझके वर्जना, एसें कुबुद्धियोंकी पूजाव्रतपच्च-

सेत्रुंजो छै कितनी दूर रे पंथीड़ा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूड़ी ललतासरनी पाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां अंबला रे वड़ला घणा, झुक रही चंपलारी डाल रे पंथीड़ा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवड़ा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीड़ा ॥ ऊभा हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीड़ा ॥ वहि० ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, छीणी२ छूटे खेह रे पंथीड़ा ॥ मैला थावे संघना कापड़ा, निरमल थायै देह रे पंथीड़ा ॥ वहि० ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीड़ा ॥ वहि० ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीड़ा ॥ फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीड़ा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीड़ा ॥ मोने भेटणारो जी कोड़ छै, प्रेम घणो जिनचंद रे पंथीड़ा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोड़िसहस भव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे डग भरिये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥ विम० जा० ॥ पूंडरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरियै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पड़िक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापपड़ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम नवदरिये ॥ वि० ला० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहे नव तरिये ॥ वि० ला० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रभाती ॥ भाव धर धन्य दिन आज सफलो गिणयो, आज में सजन आनंदपायो ॥ भा० ॥ हर्ष धर विजर नर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य होय चरण जिहां चलत आयो॥ भा० ॥आज मन होइ जागी सुकृतकी दिशा, आज धन हीह में सुजस गायो ॥ भा० २ ॥ दुर दुरगति टरी जात्र विवसुं करी, पुन्यभंमार पोते भरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, रुषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन मेंढसें कल्याणक भये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीनकल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के भये, श्री अरथनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान भया. एसें इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक भये. इस तरे पांच भरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पचास कल्याणक भये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें मेंढसे कल्याणक भये. इस वास्ते यह दिन बमा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करे, अठ पहरी पोसा करके मौनइग्यारसका गुणना करे. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इछा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै. यह तपस्या करतां इग्यारै अंग न्ना-वसें सुणें, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. (समवसरण बैठा न्नगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवच्छल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥
॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ चिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१ए श्रमल्लिनाथायनमः
१ए श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१० श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रन्नुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥
॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुन्नंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुन्नंकरनाथायनमः
६ श्रीशुन्नंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१ए श्रीगुणनाथनाथायनमः
१ए श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१० श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम ।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिनपंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिनपंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत २४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिभद्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिभद्रनाथायनमः
६ श्रीहरिभद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४पंचकल्यालकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीअक्षोभअर्हतेनमः
१९ श्रीअक्षोभनाथायनमः
१९ श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीविपरीतअर्हतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत २४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४ जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअभिनंदननाथायनमः

६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४ जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञाथनमः

१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जिनपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४ जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतोत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥
२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्हतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः
१० श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४
जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥
४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त०
२४जिनपंचक०ना०२९
२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१० श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना०
२४जिनपं०क० ॥३०॥
४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती है. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे नवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प०

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नाम पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चक्काण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय जहां जात्रा करणेंको जावे, जो कन्नी यात्रा करणेको नही जा सकै तो ज

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करकै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढै वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि रोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगे चढावै, बीचमें १ बडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीछै श्री ऋषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करकै पारणा करै. इस तरे १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जैसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण भया पीछै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान भक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देके श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त भया. जो भव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस भव और पर भवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहीनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करे, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ॥ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वडे पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, २ ओली, १ पर्यूषण. जिसमें ओली २ का और पर्यूषण का एवं ३ अठाईका महोछव तो प्रायें सर्वत्र होता हे. जिसमें भी जेसा वीकानेरमें खरतर गछवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उछव हाथीके होदे वडे आडंबरसें होता हे वा वरघोडा पुस्तकका मुंबइमें भी होता हे. लेकिन् हस्त्यारूढ नही. और कार्त्तिक महोछव अन्यत्र भी वहोत जगे होता हे लेकिन् कलकत्ते जेसा महोछव स्वमतमें तथा परमतमें कहांइ भी भारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षणमें मछेवार तक हम गयें, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काशी पटणा तकमें नही देखा. उगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उछव कलकत्तेमें देखा था, और फागुणमहोछव मकसूदाबादका वहोत अछा होता

है. नगणीससें सुमतालीसमें देखा था. दुसरी जगें नही कहांइ नी देखा, लेकिन् किसीनी धर्ममहोछवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अछा नही. एक तो नगवंतके समवसरणके संग आजकलके नाग्यवानलोक धूपके मरसें रेतीके मरसें आप तो जाते नही फक-त वेसमज अदमीयोंको नेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते नागते समवसरणकों उछालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती है, कितना कर्म बंधताहै, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवे-क विनय संयुक्त शुद्धनावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं नव सफल है. वोही महोछव लायकतारीफके है इस वास्ते आ-त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष है सो शेलका चोमालापर्वमें नाणके सर्व जगें नगवंतके धर्मका उद्योत करतेनये शुनध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-रूपी काष्टको जलाके होली करते हैं, पीछे सुबोधजलसें स्नान क-रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. द्रव्यें उर नावे. सो प्रथम द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हैं॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल नयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त नये थके लक्कम वाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढते है, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा गेमके नांम नरमोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध गेम पेसाब पीते हैं. एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंमसें अनंत नव संसारकी स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्थी नव्यजीवोंकों नावहोली करणा चाहियै. सो इस मुजब—प्रनुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नानातरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतऋतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अवीर गुलालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोमें वहोत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूमसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंम चेष्टा करणी, कुलमर्याद गेमणा, वमेरोकी लज्या गेमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरुषोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ भई हे. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हज्जार वर्ष करीब भया. पीछे स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तवसें धीरे२ अज्ञानी जीव एककी देखादेख वहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता हे उस वखत तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मातापिता भाई वहिन सवोंकी लज्या गेमके वहोत दिलमें खुसवखती मानताभया पागलके माफक भांमोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वैस्याउका नाच होता होय उहां तो हज्जारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हें हमने वमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभगतीके पाये पूरे मजबूत बंध करणेमें आये. एसी लज्जया गेमके जिनमंदिरका महोछव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगे उ

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें फूठी ठहरावेंगें, ऊर मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगे यह वात सच्च हे. किलका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता हे, लेकिन् हम इकेला क्या करें, न्याइवं-धोंकों एसा करते देख हमन्नी करते हें, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा वंध हो जाय तो अछी हे. इस वास्ते हे न्नव्यजी-वो इसमें समुदाणी कर्म वंधता हे. छोमे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत ऊर वात तक नही करते उस मुजव एकका अनर्थ खेल देख ऊसरेकों वचना चाहिये. काम वो करणा जिसमें दोनों न्नवमें लान्न होय. इस ऊ्यहोलीके खेलमें वमी२ लमाइयां होजाती हे. मेमता सहर हालीके ख्या-लसें पुष्करणे ऊर न्नोजकोंकी लमाइमें तमाम उजाम होगया. ऊर परन्नवमें अरगेर वोलणेके फल सव धर्मोंमें वुरा लिखा हे. इस वावत जो जो कठोर लवज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचना-नुसार लिखा हे. हितोपदेस समजके छोमणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु हे. जि-समें न्नी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिछामिऊकमं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर वहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति न्नली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-थाणो अति न्नलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मा-दल न्नाव मफ रे, क्रोध मान होय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

बिम्फाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥ हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, रुषनदेव गुण गाय ॥ श्रीजिनचंद इम खेलतां, वारी नव२ पातिक जाय॥ हो० ४॥ इति पदं॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिनेसरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसरकी ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तनकी, स्यामघटा जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अद्भुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ कुराय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपाये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचंद्र मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान गुलाल अबीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृतरूप धरम जिनवरको, शुध क्षमा कहे करजोरी॥ म० २॥ इति पदं॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥ संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या० २॥ मोह छोड गिरनार सिधाए, नव भव नेह अलग कियो रे ॥ या० ३॥ तुम हो तीन भुवनके साहिब, सुरनर कहे तुमे चिरंजीयो रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वार२ मेरी वंदना होयज्यो, चंद कहै मन हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण ले नाथ अरज मेरी, इ० । इह संसार गहर तरु सिंधु, भमर पडत जिहां भव फेरी ॥ इ० १ । क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ । एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ।

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो डुखकी वेरी। इ० ४ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक, अनुपम कीरत जग तेरी॥इ० ५॥ इति॥

॥पुनःहोरी॥ सांवरो सुखदाई, जाकी छिव वरणी न जाई सा० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन गाई ॥ समेतसिखरगिरि मंमण प्रभुको, देख दरस हरखाई—हृदय मेरो अति हुलसाइ ॥ सां० १॥ आज हमारे सुरतरु प्रगव्यो, आज आनंद वधाई ॥ तीन भुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई—सफल मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, भव२ भटक्यो में भाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, वाल कहे गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निरखी ॥ ने० ॥ भव२ संचित पाप करम सव, देखत दूर पुलाई, सुमति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल हुलसाइ ॥ आ० १ ॥ वामानंदन अति छवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनदयाल दयाकर दीजै, आनंद हरख सवाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त महीने चलोरी, देखो स्याम सखी मोपै गेरी ॥ एसें० ॥ व्रजकी सखी सव वन२ निकसी, खेलत मिल२ होरी॥ मारे गुलाल अबीरसुगोभर, अपने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सभी वन२के, मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम२ गोरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस दरस प्रभु मोरी ॥प्रो ा तजी सुमता ममता मन, वाल कहे कर जोरी ॥ च० ऐ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने०॥ समुद्रविजे शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूंज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी–अरज नहीं लीनी मोरी ॥ ने० १ ॥ ब्याहन आए मेरे मन नाए, लाये बल दल जोरी । तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी जरी–मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल नईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करै करजोरी लगी है मुक्तिकी रूोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे नविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर उमावो फोली नरनरके ॥ हो० १॥ ग्यान ध्यान रूफ ताल बजावो, गुण गावो प्रनु हित धरके ॥ हो० २ ॥ अनुनव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महमहकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूम उमावो, ज्यूं तेरा पाप सबल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रनू नज विलंब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संनारी नर पिचकारी, हांरे तूं तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल नर फोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घरघर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग आनूषण अंगे, हांरे तूं तो नावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४॥ नीरंजन प्रनुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुनव वर रे ॥ हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत मन मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो जगनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलान कहै प्रनु संगै, हांरे तूं तो अनुपम नव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलैंगें होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन व्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुता मिल, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

जर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुजव रंग रंगाई ॥आ० वा०२॥ जाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥ खेलत संजम फाग मिले सब, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥चजरासी जव जमतां२, नरजव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरजावास नव मासे नीकौ, ओकको संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यो कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें लेरो मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रजु गुण गावो, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रजूजीको, वि० ॥ प्रजुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नाजि कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर है टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोर्‍यो, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनधरजूषण कहे जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भरयौ, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकुमार ॥ ग० १॥ फूल्या केवमा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आंबा मोरया बागमैं, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आंब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजूं नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छांटे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जोरें यदुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली मैं पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ, फूल चढाऊं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बीनती, भव२ दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फागणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अंगियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल उड़ाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निम्मि डुरित भर शिखर भि भुरकी, भवसागर तारण तरकी॥ व० १ ॥ तीन भुवन तीरथ तारागण, सोभा लहिय निशाकरकी ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ व० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब तनको, वंछित पूरण सुरतरुकी ॥ व० ॥ वर सोरठ मंगल मंगनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ व० ॥ बलि वलिहारी वारंवारी, श्रीनाभेय जिनेसरकी ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन भुवन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ लंछन सोभाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद भरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, भव२ एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ०॥ त्रिगढमें विराजमान, डुंडुभि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम भाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, भामंडल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया॥ऐ०४॥

॥ रागवसंत ॥ संभवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन भुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं०१॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज लंछन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे दुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जदुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि या ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ भवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाभनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६॥ हीण अभारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे भव हारो रे ॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त न कर हियरा हरख भरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरभव सफल जमारो ॥ भवि जन मन भमरा रंग भरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ भवदुख भंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो॥ ममता तज सम ता संग भेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी इव सरणा ग्रही, भवसा यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोमी, कोन चूक मोपै काही जाममी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत वणी जेसी इंदु यामिमी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै भई मुगति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १॥ पर मंदिर तज अविचल लीजें, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहै अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमे, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, बंछित पावै दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० ३॥ लाख चोरासी रामत छांमी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे वलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर भरावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पाल मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद भरावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही मैं तेरी भाय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी वात पूछूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भरयो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वावो ऋषभ वैठे अलवेसर, मारो गुलाल मुठी भरकै ॥ बावो० ॥ मुठी भरकै पसली भरकै, बावो० ॥ चूआ२ चंदन और अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजडित शिर छत्र बिराजै, अंगी जडाव जडी जरकै ॥ बावो० २ ॥ बांहै वाजूबंध बहिरखा बिराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान है दास तुमारो, तार लीओ अपणो करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःदुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं ऋषभ जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ वीस कोसर्थी दरसन कीनो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके वीस गोमटमी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा–संघयात्रा करणसें पाप कटत है, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन्न जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, नवश्का छुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो है अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी में देखी, सो अब मुजकुं सजदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग दे, वा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ नूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरूपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवारी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आनूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, वार नावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदनूत पंच महाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहे जिनचंद प्रजुकी कृपासें, नी-

खे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी ठिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग वीण रूफ बाजै, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोले जयकार रे॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, गेरू चलै अभिमानी ॥ हां रे लाला गे० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी- दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत वंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी–श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें नेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजे, रंग विजय सुख दानी–आवा नर गमन ठिदानी ॥ सा० ३॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवारी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वाग अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविहरू रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी भाव अभंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहवंधीकी भांत भली हे, बुंटिया नव२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब वन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोभत हे, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस घर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ भावना भावो जिनगुण गावो, अमर घणै उछरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल भविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर२ मुठियां उमावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, भाव शुक्ल भल भावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य भंमार भरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद वधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत खेलुं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारे, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीयै ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाण्यो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इछा, यामें हे हुसियारी ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव युंही गम्यो ॥ द० १ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठेमो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल जनी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, हढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवत्स लंछन जनम जद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुशोजित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजे गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २ ॥ मंगलधन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥जय२ खेमकुसल गुरु जंपें, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम भाव प्रकाश करतां भव्यजन मन गहगही ॥ निधि वाण नंद सुचंद्र विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गच्छ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन भगवंत के कल्याणक हे सो सर्व भव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकुं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंभवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ९ ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंभवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंभवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्टिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१३ श्रीऋषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्टिने०
११ श्रीऋषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्टिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्ह०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्ह०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्टि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्टि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपार०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्टि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०	६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०
ए श्रीकुंथुनाथजीपरमे०	८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥	१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०
७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारंग०	भाद्रपदशुक्लपक्षे १
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०	ए श्रीसुविधनाथजीपारं०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०	आश्विनशुक्लपक्षे १
आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २	१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०
१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०	
३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०	

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पद्मप्पहित ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घमी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करे. उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चरकाण करे, तीन टंक देववंदन करे, पमिक्कमणा करे. जिस दिन जो महाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करे. उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणे या पढे. जहां भगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां घणे महोछवसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावे. उहां विधी संयुक्त सर्व भगवंतोके पंच कल्याणकका उछव करे. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके पट् कल्याणकका उछव करे ॥ अब २३ भगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें पट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहिये. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उछव करे, हीरा चढावे ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उत्त्सव करै, घृत गुम वस्त्रादिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याणककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें भगवंतके विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उत्त्सव करै, वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण कल्याणकके भावगर्भित उत्त्सव करै, लडू चढावै ॥ ५ ॥ और वठ गर्भापहार कल्याणकका उत्त्सव करणा होय तो च्यवनकल्याणकवे उत्त्सव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उत्त्सव करै तपस्या पूर्ण होणेसें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति करै, साहमीवत्त्सल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जे भव्यजीव करेंगे सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगे॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीप सोहामणो दक्षिणभरत उदार ॥ राजग्रही नगरी भली, अलिकापुर अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील गुणें अभिराम ॥ श्री० ३॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश ॥ माताकुक्षि सरोवरे, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४॥ जेठ पदम पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोत्त्सव सुर करै, त्रिभुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंछन काछवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणो नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख भोगवै, पूरे वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आवि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसैं, मनधर निरमल ध्यान ॥ च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९॥ (ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारे परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १० ॥ तपने अधिकारै पखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी उदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजे वांदो देव उल्लास ॥ तप ऊजमणौं रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥११॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनो जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजे तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार, जस कीरत सोभाग वधाई महियल महिमा जाण ॥ परभव सुगति फल लहियै, ए तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघतणो अधिकार, भरुवछ प्रमुख नगरादिक करियां विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्त्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरष आऊखो पाली जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता सुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

भगतगुरु भयभंजण भगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस, वाचक समयसुंदर इम पभणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुभदिन गुरूके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पडिवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पडिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसें अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामीके पांच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढै. गुरूका संयोग होय तो गुरूके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी है उस मुजब विवेकी जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणेसें उत्तम फल मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पच्चख्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर भगवंत ॥ त्रिगडै बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पच्चख्काण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांभल गोयम ताम ॥ दस पच्चख्काण कियां थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी २, साढपोरसी पुरिमड्ढ ४॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवड्ढि॥ श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ९ उपवास १० ही, एहिज दस पच्चख्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रभा १ सर्करप्रभा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रभा

४ तिम धूमप्रजा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ नाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कह्यो ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजे तिणहीज गेर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताड़ना, भूख तृषा वलि त्रास, रोम२ पीड़ा करे, परमाधम्मी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल भर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे भोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री०९॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै भाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूर करे ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ भावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥ करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोड़ि वरसां लगे, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां भावसुं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोड़ि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोड़ी परिमाण ॥ इतरा वरस दुरगति तणा, छेदे चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोड़ी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, नाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करै इक नावसुं, तो पामे मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ बठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही, जीव लहै तिहां डुरक रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे सुरक रे ॥ गो० २४ ॥ बेदन नेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे नला, करता त्रिनुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै नव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनंत नवाना पापथी, बूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तरयो, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चरकाणतणा दस नेद रे ॥ अवर नेद पिण बै घणा, करतां बेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चरकाण दस विध फल परुप्या महावीर जिणदेवए, जे करै नविअण तप अखंमित तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद तप विधि

भणे ॥ ३३ ॥ इति दस पच्चरकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चरकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चरकाणके भेद भर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल भगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, भर किसीके दश पच्चरकाण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरे स्तवन मुजब १० पच्चरकाण दस दिवसे सेवन करे, सदा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावे, शक्ति माफक उद्यापन करे. इस तपस्याके प्रभावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, भाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल भेटिये ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेविये, धर कर शुभ परिणाम लाल रे ॥ तीजे भव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मझार लाल रे ॥ सुणजो भवि तुमे भावसुं, चित्तमें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुभ महुरते, उचरीजे ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवझाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंभ १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत भणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पडै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदै निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी थिवर पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करी वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वधती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नाहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मास मांहिनें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनें उच्छव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हवणा

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा भणी, उहिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसे चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गछ खरतर भणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो महीनेसे लेकर ६ महीने पूरी करे. कदास ६ महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पडती है. एक उलीके वीस पद है (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते है, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधे. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधे. और उससें कम शक्ति होय तो छठसें आराधे. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधे. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधे. उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करके आराधे. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे. हीनशक्ति दिनपोसह करे. वीसों पद पोसहसेंती आराधे. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधे. जो इतनी

ज्ञी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार रोकै, सो शक्ति ज्ञी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधै अपणी हीणता ज्ञावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणै जावै, स्त्रियां ज्ञी रुतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो बहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उज्ञय टंक पम्किक्कमण करै, तीन टंक देववंदन करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, ज्ञूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करै तो पारणेके दिन जिनज्ञक्ति करके पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनज्ञक्ति करै करावै, ज्ञावना ज्ञावै तथा तपके दिन तप पदके गुण ज्ञेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करै, इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै, उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

(णमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ (णमो विणयसंपन्नाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभव्वय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो सुअनाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करे ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्छव महोच्छव प्रनावना उजमणापूर्वक करे. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्छवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करे. जो गुरूका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करे, वीस स्थानकका स्तवन सुणे वा पढे, वीस स्थानकजीकी पूजा करावे, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावे, देवपदका देवखाते लगावे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करे,

साहमी वच्छल करे, इत्यादिक द्रव्यें करि भावें विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सो जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप भली विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥ भवभोजविद्धयणेवारणाणं, णमोबोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणिंदियाणं ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवाणदयागिहस्स, णमो२ संघचउव्विहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणं-सुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-त्तसंयमपतितभविजन अतिदृथिरकरताभला ॥ अवगुणअदूषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ रुचिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सबोहिबीजंकुरुकार-णाणं, णमो२वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणेसराणं ॥ विग्घो-घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ छद्दव्वपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिच्छत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामललाचणस्स ॥ सुध-म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्विनयेनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-म्मोधकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्वयाभूपणभूषणस्स, नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविभूपणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसु पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो कुहडुद्दवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकर स्स, दुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोग णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सवातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-वंदियाणं ॥ रविंदुविंवामलसग्गुणाणं, दयाघणाणंहिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेभ्योनमः ॥ अथ सत्तरमें चारित्तधारीपद ॥ सविंदियापारविकारहारी, अकारयासेसजणोविगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगचारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंडणस्स ॥ मुत्तीनपाद्दा नसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव ल्लीवनवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणालयस्स, नमोदयामंदिरसव्वयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगश्रुतवै नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशंकराय, तुभ्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगलमंडनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंडनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगतीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावै (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ इशाणेंद्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअच्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः॥१९॥ ॐहरिस्सहेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाणवेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषेंद्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः ॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषें द्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीत-यशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानि-केंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐईश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रा-यनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यरतेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्वे-तेंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-देवीपदे १६ सुपारी चढावे ॥ ॥ ॐरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ-प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रश्रृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्रांकुशयैनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐका-ल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यै-नमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-डश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-पारी चढावे ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपा-र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐष-

ॐक्षयनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐष-ण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजाय-नमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखा-यनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितार्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्या-मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐभ्रूकुटयैनमः ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकु-शायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः १७ ॥ ॐधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअं-बिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायकायै-नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्पका-यनमः १ ॥ ॐपांडुकायनमः २ ॥ ॐपिंगलायनमः ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ९ कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्व-र्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्यैनमः ॥६॥ ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥ए॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐसोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंम्ल पूजनकी विधि विशेष लिखी है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंम्ल प्रतिष्ठा बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंम्ल पूजामें लिखआए हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधी कराणी होय तो विद्वान गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंम्ल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुऊ सानिध कीजें, जुलो अंकर जगति जणी समकाई दीजें ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणारा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूक्मी ए लखमी इण नामें, आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठां पुत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी ॥ वाधे चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूक्मी ए घर अंगण वेठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पेठी ॥ तीन जुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंजा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीपे कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्यां आगल साल वधे तिण चयन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेमाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखमी ए तिणसेती लागी ॥ कन्या देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपै जैजैकार रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो न्नलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र न्नणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल—प्रन्नु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंन्नणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा न्नला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी न्नूमी कंतसेती करै क्रीमा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी इष्ट पमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खमी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो डुख हुउ ॥ (उल्लालो) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम न्नणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुफने त मासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचने रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए डुखणी रे पूत्र मुओ तमफम करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकन्नणी ॥ सातमा न्नूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणे शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या न्नरी ॥ पमतो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोम आगे करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ रूपनो न्नूपतने अचंन्नो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारे पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारणिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पुरवन्नव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो न्नव न्नूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो न्नवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै न्नव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे सगते साधुन्नगते तुम्ह न्नवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि न्नाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजान्नणी ॥ (उल्लालो) राजान्नणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजै लान्न लीजै न्नली न्नावना न्नावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारमे जिनतणो, न्नला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसें उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रमके हीनपणेंसें इकसार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोभी छम्मासीके १८० उपवास करणेसें जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही हैं. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेकों जावै, शुद्ध भावना भावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रभाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उलट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुझ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुझ सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल रे ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थंकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं, तूंही है प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हण्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादृशी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरै काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण भवि सुविसाल रे ।

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पडिक्क मणादिक न्नावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स माधि शुन्न न्नावथी, धरे ताहशो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ए ॥ काल अनादि संसारमें, ज न्म मरणतणा डुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवे सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरन्नव पुन्यथी, वलि ल ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ हे मुऊ, हिव मिट्यो म नतणो न्नर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ न्नव२ एक जिनराजनो, सरण हो ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवे परिहार रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे ॥ न्नव२ जे मुऊ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे ॥ धन२ जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना न्निनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन आजनो मुऊ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि नयर श्रीवालूचरे, श्रीजिनसौन्नाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारे माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषन्नदेवस्वामी उत्कृष्ट बारे मासी तप स्या करी. इस वास्ते न्नव्यजीव बारेमाशी तपस्याका न्नाव लायके (३६०) तीनसेसाठ उपवास करे. जिस दिन व्रत होय उस दिन देववंदनादि क्रिया करै, बारे माशी तपका स्तवन सुणे ॥ (श्री ऋषन्नदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका २००० गुणना करै. तपस्या पूर्ण होनेसें सिद्धगिरी यात्रा करणेकों जावै. शक्ति माफक उद्यापन उत्सव करै. इस तपस्याके प्रशाद न्नव्यजीवोंके कन्नी उख

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति बारैमासी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥ लवधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लवधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधां अठावीस ॥ एहिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल संसारनी ॥) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लबधिना नाम परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबधि छै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उषध समा जाणियै, बीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म उषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसही नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका नाम संभिन्नसना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लबधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि तिहां जे वसय विचित्र ॥ तसु मनको चिंतित जाणे मूल प्रकार, ते ऋजू मति नामे अठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश ॥ ते जंघाविद्याचारण लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेरु थाय, ए लबधि

इग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लवधी बारमियै सहू थोक ॥ गणधर पद लहियै तेरम लवधि प्रमाण, चवदम लवधे करी चवदै पूरव जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लवधि, सोलम सुखदाई चक्रवर्त्तिपद रिद्ध॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अट्ठारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत खीरै मेळ्या जेह सवाद, एहवी लहै वाणी उपशम परसाद ॥ जणियो नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार, ते कुष्ट कबुद्धी वीसम लवधि विचार॥१३॥ एके पद भणियां आवै पद लख कोरू, इकवीसमी लवधी पयाणुसारणी जोरू ॥ एके अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सोलह देशतणी लही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लवधि तेवीसमी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लवधि विचार ॥ च० ॥एआंकणी ॥१५॥ चवद पूरवधर मुनिवरू रे, उपजंता संदेह॥ रूप नवो रचि मोकले रे, लवध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतोलेश्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारे रूप ॥ सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप॥ च० १८ ॥ एकरा पात्रे आदमी रे, जीमै केइ लाख ॥ तेह अखीणमहानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लवधी कही रे, अठावीशमी नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार ॥ भगवतीसूत्रमें भाषियो रे, ए बिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार॥ तीन२ इक२ मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी व वधां बीश ॥ सान्नलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥ च० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे व्वीसे मेरुतेरस दिन न्नलै, श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसान्नलै ॥ वाचनाचारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन न्नणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाइस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुन्न दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करे, अनुक्रमसें २८ उपवास करे, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उपवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसें शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदे पूरब नाम, सूत्रे जूजूवा, वीरजिनंदे न्नाषिया ए॥ ते हिव सुगुरु पसाय, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ॥ ३ ॥ व्वो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ए, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रियाविशाल तेरम न्नणो ए १३ ॥ बिंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, सास्त्र थकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ॥ पट भाव प्रगट छे ते जिहां, त्रिपदी भाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी, संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, भाखी तीजे तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाखनी, सप्तभंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोड ॥ मत्यादिक पण भेदसुं, पद संख्या इक कोडि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद छठो कहुं, भाखुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोडनी, भाखी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ॥ छवीस पद कोड जेहना, सूत्रे आण्या भाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवे, प्रगटपणे अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना, कोडी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवे, नामे प्रत्याख्यान ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अतिशय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम सातसे, कोडी वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छवीस कोड प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन्न लख इग कोडि, प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोड ॥ १२ ॥ ख्यातिख्यादिक जे क्रिया, छंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोडनी, तेरमी क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल ॥ पद संख्या इग कोडनी, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस अरु तीनसे, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या ए कही, गुणमालाश्री देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथ्ये गणधरा, अर्थेअरिहंत भाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हितआणी रे, तत्व रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ग्यान भगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै, प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संबरजोग प्रधानो रे ॥ वा० ४॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजे रे॥ नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै, चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊज-मणो हिव कीजे रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लीजे रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नाम प्रमाणो रे ॥ नव-करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति का-रण छेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदै रे ॥ ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोइ रे ॥ भवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं भवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११॥ (कलश) इम सयल सुखकर गछ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए, सौभाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए ॥ संवत अगारै वरस छिनूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां स-यल मनवंछित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम ओर विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरूसें समकर्के करै. यह तपस्याके करणेसें ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित जणी वगसिये, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसे ॥ ए देशी) कमला जिम कुंरूणपुरें, जुजबल नरपति जीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरे माशे रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशे रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंजा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंजा रे ॥ प० ३॥ प्रतिमा पूजे शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवकायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघामै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा यंत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूछिये एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म वलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता डुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ दूहा ॥ मणि तेजें मुनि तहठये, रथ थकी स्त्री जरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहियै श्रीमुनिराय ॥ १० (ढाल—भरत नृप भावसुं ए ॥ ए देशी)॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, वाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकडी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण भव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जाणयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२॥ चोथ प्रमुख नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कंचण जड्या ए॥ १३॥ तिलक२सें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम सफलो गिणे ए ॥ भगवन तप विधि भाषियै ए, नल कहै बोध वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए॥चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधै मन साधियै ए॥ १६॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए ॥१७॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भाषै सुण थया, शुद्ध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुभ दिन गुरूके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीऋषभदेवस्वामीके ७ उपवास करै, जब (श्री ऋषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीकों आद लेके (२२) बाईस भगवंतोका बाईस उपवास करे. जब भन२ भगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, अर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर भाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, भवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ भ० वी० १ ॥ कोध वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास ॥ भ० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ भ० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ भ० ॥ रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आषाढभूति गणिका साथ ॥ भ० वी० ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले भेद ॥ भ० ॥ इम भव२ भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ भ० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ भ० ॥ उपवास करतां भावसुं रे लाल, पामे भवनो पार ॥ भ० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ भ० ॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ भ० ॥ नर सुर रिद्धि पिण भोगवे रे लाल, निश्चे मुगति जाय ॥ भ० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार ४ भेद करणेसें १६ होते हे, इनोंकों दूर करणेकों प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसें १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैंतालीस आगम तप विधि ॥

गुरूके पास शुभ दिन पैंतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसें उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढनेवालोंकों साहाय करै, अपणी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसें तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसें पैंतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढावे. इस तपस्याके करणेसें मुर्खपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारे अंग ॥

१ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः २ श्रीसुयगडांगजीसूत्रायनमः

३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०

५ श्रीभगवतीजीसूत्रायनमः ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०

७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा० ८ श्रीअंतगडदशाजीसूत्रा०

९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० १० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा०

११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥

॥ अथ बारे उपांग नाम ॥

१ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन०

३ श्रीजीवाभिगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
५ श्रीजंबुद्वीपपन्नत्तीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रायनमः
७ श्रीसूरपन्नत्तीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
९ श्रीकप्पवर्डिसियाजीसूत्रा० १० श्रीपुप्फियाजीसूत्रायनमः
११ श्रीपूप्फचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्हिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

१ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

१ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्झियासूत्रायनमः
५ श्रीगणविज्झियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्झियासूत्रायनमः
७ श्रीवीरथुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगछाचारजीसूत्रायनमः
९ श्रीज्योतिष्करंमजीसूत्राय० १० श्रीमहापच्चरकाणजीसूत्रा०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

१ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्रा०
१ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० २ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पेंतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ प्रकाशे गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति रचे, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपे सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥ ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करे गणधार ॥ पंचागी युत विस्तरे, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ डुखम काल डुर्भिक्षसें, भूले आरन अंग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसें अब मिलै, आगम पैंतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥ (ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी)॥ आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगडांग दूजोअछै जी, पाखंडी निरधार ॥ जगतगुरु नाखे वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस छत्तीस नख प्रश्ननो जी, नगवई अंग विख्यात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता नणी जी, दस श्रावक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज० ३ ॥ अंतगड केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥ अंगुष्टादिक प्रश्ननो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल नाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अढार सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी, ठाण दुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक अंबड रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांनल नविजन चूंप ॥ ज० ७ ॥ सूरियान पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ द्रव्य नाव विहुं नेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो अनिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवानिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृत बहु विध नाव ॥ ज० ए ॥ पन्नवणामें जाणज्यो जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुणधार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र वियरह गती जी, पन्नत्ती विहुं जाण ॥ कप्पिया कप्पवर्डिसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिछाणज्यो जी, सांनलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी) ॥ छेदतणा प्रायश्चितनी जी, छेद छए ए जाण ॥ बृहत्कल्प विवहारमें जी, भाष्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे भविक दिलदार, इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे भाषियो जी, जिनपूजा विहुं भेद ॥ श्रावक द्रव्ये भावसूं जी, मुनिवर भाव अभेद ॥ सुज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत छे जी, उर दशाश्रुतस्कंध ॥ दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरण संथार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंडुलवयाली चंदाविजया, गणविद्या अभिधान ॥ देवविजया वीरथुवो जी, गछाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरंम महा प्रचखाण जी, च्यार सूत्र छे मूल ॥ आवश्यक दशमीकालिक जी, उत्तरध्ययन अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥ भेद न्याय निक्षेपथी जी, अनुयोगद्वार प्रधान ॥ सू० ६ ॥ द्रव्यानुजोग छए द्रव्यनी जी, चर्चा विधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सू० ७ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी गिरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलथी जी, जाणो चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पैंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ९॥ (ढाल तीसरी ॥ सांगानेर विराजै ॥ ए देशी) ॥ सुण२ गोतमवाणी, इम वीर वदे गुणखाणी रे, भवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन कल्पित वात म गावो रे ॥ भ० आ०१॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें पंचज्ञानने वंदो रे ॥ भ० आ० ॥ ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अठावीसे आण्या रे ॥ भ० आ० २॥ श्रुत चवदे वीसां भेदे, ए मिथ्यामतने छेदे रे ॥ भ० आ० ॥ अवधिछ असंख्य प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥ भ० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकासे, ए सब विधि नंदी भासे रे ॥ भ० आ० ॥ एतो सहु आगमनी नूंद, स्या-

छाद गंगनी बूंद रे ॥ भ० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरभीका रे ॥ भ० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअभय देव बलिहारी रे ॥ भ० आ० ५ ॥मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि कने सिर नामी रे ॥भ०आ०॥ सामान्य विशेषे भाखी, निश्चय विवहार छै साखी रे ॥ भ० आ० ६॥ उत्सर्ग वचन छे केइ, अपवाद वचनने लेइ रे ॥ भ० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंछित सगला साधो रे ॥ भ० आ० ७ ॥ (ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए ॥ ए देशी) ॥ पैंतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो हित भणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति छते उपवास ए, आंबिल निविथी उल्लास ए ॥ एकासणा अथवा करै ए, इम पैंतालीस दिन आचरे ए ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्रमण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३॥ उजमणो हित चित करेए, गुरु भक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ भक्ति करै साहमीतणी ए, जे पढय पढावै ते भणी ए ॥४॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथा लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुभ नंद सर निधि चंद्र वरषै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर बीकानेर सुंदर बृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि ऋद्धिसार ए, इम करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयश्कार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११ दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर माहाराजका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंद्रभूतिगणधरायनमः २ श्रीअग्निभूतीगणधरायनमः

४ श्रीवायुभूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तभूतिगणधरायनमः
५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंडितस्वामीगणधराय०
७ श्रीमोर्यपूत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः
११ श्रीप्रभवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर भगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करणेवाले भये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी भक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साह्मी वच्छल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साथिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पडिक्कमे, एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, नीचा वैठके मुंहपत्ती पडिलेहै, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (भगवान् अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह) एसा कह चैत्यवंदन करै, णमोत्थुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थु० कह ४ थुई कहै, चोथी गाथा कहके नीचा वैठके णमोत्थुणं कहै, फेर खडा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं अन्नत्थू०) कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के नमोर्हतसिद्धा० कहके (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ यह थुई कहके (शांतिदेवताआराधनार्थंकरेमिकाउसग्गं अन्नत्थु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग्ग करै, थुई पढै. (शांतिःशांतिकरःश्रीमान्, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,

येषांशांतिर्गृहे२ ॥१॥) पीछे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी नुवनदेवताकी स्तुति काउसग्ग एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहै. पीछे शासनदेवताका काउसग्ग एक नवकारका करै (यापातिशासनंजेनं, सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साभिप्रेतसमृध्यर्थं, नूयाच्छासनदेवता ॥१॥) पीछे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिनशासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह थुई कहके नीचा बैठके नमोत्थुणं कहै, जय वियराय पर्यंत चैत्यवंदन करै. फेर खमासमण देके (नगवन् अमुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके (इच्छकार नगवन् अमुक तप ग्रहण दंमक उच्चरावो जी) गुरु कहे (उच्चरावेमो) पीछे (अहसंनंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउपसंपज्जीत्ताणंविहरामि ॥ तंजहा दव्वउ कालउ नावउ दव्वउणं अमुकतवं खित्तउणंइहवा अन्नहवा कालउणं जावपरिमाणं नावउणं जावगहेणंनगहिज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि सन्निवाएणंनन्नविज्जामि जावअन्नेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनपरिवडइ तावमेएसतवो अन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणानोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥) जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ वेर यह पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो थापनाचार्यजी समक्ष तीन वार यह पाठ पढे, पीछे गुरु कहे (हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुनयेणं सम्मंधारणीयं गुरुगुणेहिंवुढाहि नित्थारगपारगाहोहि) एसो गुरु कहै. पीछे खमासमण देके गुरुमुखे पच्चखाण करै अथवा गुरु नहि होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करके इरियावही पमिक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पमिलेहे २ वांदणा देवै (इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तुम्हेअम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो) इच्छामिख- मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निरकमणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, स्तु- तिकी गाथा कहे, पीछे एामोत्थूणं कहै, बेठके जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनार्थे करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिदुक्कमं. और ज्ञानजक्ति, इव्यसें जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होवो. गुरु कहे (नि- च्छारगपारगाहोह) पीछे पच्चरकाण करै, अमुक तप आलोयण नि- मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके ४ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे, पीछे उपगरण पात्र जक्त पानादिकसें साधुज- क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले तथा पढा- णेवाले विद्यागुरुको जक्ति करे, साहमी वछल करै, पहरावणी करै, पीछे याचकोंका दान सन्मान करे ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ- त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो२ रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुझे नवकार जी ॥ उत्त- राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह जण्यो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु- क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गच्छ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुच्छ अलप फल जाण जी, जे

उपधान वह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेवनी आण विराधै, भमस्यै भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघड्या घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरने खांड भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहै तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो तप पहिलो वीसरू जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीसरू आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंडाण, बारे उपवासे गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसरू त्रीजो णमोत्थुणं उपधान, त्रिण वायणा उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चोथो चोकरू एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९॥ पांचमो लोगस्स तप अठावीसरू नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रिण ठाम ॥ पुक्करवरदी तप छठो छक्करू सार, साढात्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान मराल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि गुरुमुख सरस रसाल, गच्छनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन बहु भंग ॥ अति उच्छव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवावै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान, विधिसौं जे वहै, ते सूधो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद, जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय, हरू२ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥ नाणे घरनो मोह, उत्कष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन मांहे जावे एम, धन२ ए दिन, नरजव मांहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे साते जपधान, विध सेती वहे, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-घणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पमे ए ॥ लाजे लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढे ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर जुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, जवधानना फल कहे जत्तम जवि-य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणे वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात जपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्यान्ह समें सु-हागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करके ऊपर चावलोंका करे, पांच सुपारी १ नालेर धरके माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसें सिर पर धरे, पीछे सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवे, सधवस्त्री गुंहली करे, उर स्त्रियां गहुंली गावे, पीछे गुरु उर्ध्व सांससें वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्ठित करे. यथा ॥ ॐह्रींणमोअरिहंताणं । ॐह्रींणमोसिद्धाणं । ॐह्रींणमोआयरियाणं । ॐह्रींणमोउवज्झायाणं । ॐह्रींणमोलोएसव्वसाहूणं । ॐह्रींणमोअरहउ जगवउ वद्धमाणसा-मिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछे वाजित्र वाजते स्वस्थानके आवे, बाजोट पर थाल रखे, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करे, श्रीफला दिककी प्रजावना करे, पीछे मालाग्राहक प्रजात समें प्रति-क्रमण करके पमिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करे. पीछे

मुहुर्त्तकी वखत वाजित्रादि उच्छव संघ समेत गुरु पास आवे, पाच श्रीफल रोक द्रव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी हे. नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वर्नी ठवणी पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साथिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे भेट करे. साथिःयों पर अछे विदामादि फल चढावे. पीछे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूके संग इरियावही पमिक्कमे. पीछे श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पमिलेहे, फेर खमासमण देके इछकारभगवन् तुह्मे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदावणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करे. पीछे फेर खमासमण देई तुह्मे अह्मं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, श्रावक इछं कही गुरुके साथ देववंदन करे ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासमण देके इछा० भगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह, पीछे गुरु चैत्यवंदन बोले. श्रावक णमोत्थुणं कहे अरिहंत चेइयाणंक० कहके एक नवकारका काउसग्ग करे, नमोर्हत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहे. यथा ॥ अर्हतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्येंद्रीसकलाभेहि । रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीछे लोगस्सउज्जो० सवलोए० वंदणव० अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहे. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंह्रीच । आश्रियंतेश्रियांते । भवतोश्जिनापातु ॥ २ ॥ पीछे पुरकरवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहे. नवतत्वयुतात्रिपदी । मिश्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकीर्त्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ पीछे सिद्धाणंबुद्धाणं० ततः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० कहके एक लोगस्सका काउसग्ग करे, नमोर्हत्० स्तुति कहे ॥ श्री

शा तिश्रुतशाति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ॥ सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं० एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो पांगासदास्फुरडुपांगा । जवताद्नुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥ ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु तगमेत्तु । रंगतरंगमितिवर । तरणीस्तुजंवनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नत्थु० १ नवकारका० स्तुति॥ उपसर्गविलयवियन। निरत्तीजिनशासनावनैकरता। हृतमिहसमिही-तस्कृते । स्युशासनेदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीछे समस्त वेयावच्चकरा-णं शंतिकराणं सम्मदिछिसमाहिकराणं अन्नत्थू० १ नवकारका का-उसग्ग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणौघनिधेसुवैया । वत्यादिकृत्यकरणैक निवक्करुका । तैशांतयेसहजवंतुसुरासुरीजिः । सघृष्टयोनिखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोत्थुणं जावंतिचे० नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहै ॥ ॐमितिनमो जगवउ । अरिहंत सिद्धाचारियउवज्झाए । वरसव्वसाहूमुणिसंघ । धम्मतिछ्पवयण स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव संतिदेवयाय । सिपवयणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया । वरुणोवायुकुवेरईसाणा । बंजोनागुत्तिदसम । मवियसुदिसाणपाला ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचएहं । तहलोगपा-लयाणं । सुराई गहाणयनवन्हं ॥४॥ साहंतस्ससमरकं । मह्नमिणंचेव-धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्घंगछउ । जिणाणंनवकारउजणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीछे जगवान आगे परुदा करके मालामाह क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांदे, पीछे खमा होके कहे इच्छकार ज० तुम्हे मम्हं संघपति मालामारोहावणी उद्देसावणी नंदीसूत्र

संभलावणी काउसग्ग करावो. गुरु कहे करेह. इछं. संघपतिमाल आरो० नदे० करेमि काउसग्गं अन्नछु० कहके १ लोगस्सका का० प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्ग करै. पीछे मालाग्राहक खमासमण देइ इछाकार भगवन् नंदीसूत्र संभलावो, तब गुरु खडा होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावे, नित्थारगपारगाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीछे श्रावक खमासमण देके इछा० संघपति माला उद्देसउ, गुरु कहे उद्देसउं. फेर श्रावक इछामि० इछाका० किंभणामी, गुरु कहे वंदित्तापवेह. खमासमण देके इछं तुझे अह्मं संघपति मालाउद्दिठ इछामो अणुसट्ठिं उदिठिर खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं जोगकरीजाहि गुरु गुणवुढीजाहि नित्थारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुह्माणं पवेइए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह. पीछे खमासमण देके तीन नवकार गुणता भया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप चढावै. गुरु १ प्रदक्षिणा देवे. पीछे मालाग्राहक मूहपत्ती पडिलेहै, खमासमण देकै इछाका० तुह्माणंपवेइयं संदिसहभगवन् काउसग्गं करेमी इछामी० इछाका० भगवन् तुह्मे अह्मं संघपति माला उद्देसामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्गं अन्नछु० कहके १ लोगस्सको काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहै पीछे खमासमण देकै वेसणो संदिसाउं, दूजे खमासणे वेसणो ठाउं, पीछे खमासमण देके जो विधि करतां अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायायें करी मि० इति नांदकी क्रिया ॥ पीछे मालाग्राहक भगवानके नव अंग नव रुपया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्त्तकी वखत मंडपजीके बाहिर जमीन खुली होय तो भगवानके सनमुख सर्व संघ आयके खडा रहे, पीछे मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव रुपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्त भेट धरे, पीछे गुरु उर्ध्वश्वासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणे, पीछे जो माला पहिरावे जिसकों माला पहिरणेवाला यथाशक्ति पहरामणी करे. माला पहिराणेवाला ऊर्ध्व- श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावे, दोनुं जणें ८ दिन तक सचित्त कुशीलादिकका गुरु पासे पच्चखाण करे, पीछे मंदरजी पर चढाणे- की धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र- दक्षणा देकर गुरु पास वासक्षेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावे, पीछे सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवे, साधर्मी वात्स- ल्य करे ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोके लिखतसें कुछएक दे- देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हें ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसें एक घीहीज लेता हे ऊर विकृती नहीं लेता १, उप- धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का- रणयोगसें खांड वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट द्रव्यादिक नहीं लेणा ३, घी तेलका वघारया साग भी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहिं लेणा ५, तलाहुवा पापड सीरा वडे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरसणेवाली रात्री प्रायश्चित करणेसें स्त्री शुद्ध होती हे अन्यथा नही ७, अन्न पुरसणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, भोजन करणेकी जगा झाडू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित करे अखंडित वस्त्र रखे तो शुद्ध ए; जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथमं दिन पासमें रखे हें वो सब भोगाभोगकी दोनों वखत पडिलेहणा करणी १०, जीमणेके ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब भोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पडिलेहणाकी वखतही पडिलेहणा दुसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंडलादिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपणे घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें रातका दिनका नहीं वह उपधानवाहीकूं देवै उर वोही स्त्री प्रभात समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवे १२, उपधानमें सर्व वस्त्र आप अथवा मालकणके हाथसें पडिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध होय १४, क्रिया अनुष्टानकी कराणेवाली मालकण भी दोनुं वखत पडिक्कमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात वेर देव वांदे तब शुद्ध होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७, प्रतिक्रमणमें प्रभात समें नवकारसीकाही पच्चखाण करै पीछे क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल २ नीवी ३ अथवा एकासणेका ४ करै १८, पच्चख्काण पारती वखत पहली नवकारसी पारै पीछे उपवासादिक पारै १९, पहले को उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आडंबरसें देरी हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस वास्ते तीसरे पहरकी पडिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पडि-लेहके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रभातसमें उपधानवाही गुरु-के पास आयके इरियावही पडिलेहके पोषध वपुन सामायक लेके वस्त्र पडिलेहणा उर अंग पडिलेहणा करै, पीछे मुहपत्ती पडिले-हके (उहीपडिलेहणसंदिस्साउं उहीपडिलेहणकरूं) एसे खमासण दोय देवे पीछे छव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका क्रम एसे है बहुवेलसंदिस्साउं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणो-ठाउं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपडिगहुं

कठासणोसं० कठासणोपडिग्गहूं) एवं१० ॥ २१, पीछे वंदन दिया बाद सुख तप पूछा २२, सांझकूं भी यही क्रिया करणी लेकिन इतना विशेष है पट पडिलेहणा और अंग पडिलेहणा तो करे परंतु उपधि पडिलेहणा नही करे, पीछे गुरुवंदन छव दिये बाद खमासमण दस देवै (उहीपडिलेहणसंदिस्सा० उहीपडिलेहणकरूं सिझायसं० सिझायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोगाउं) बाकी पहलीकी तरे २२, न्यारा पडिक्कमणा होणेसें पाक्षीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया सब करदेना २३, माला पहरणेमें सांझकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करके प्रभातसमें आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही लिया हुआ भी है तो भी तिविहार एकासणा करताभया निरारंभी होकर रहै २४, सभी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके अभावमें श्रावक एकांतर उपवास और साधुओंने उपवास आमल निवी एकासणा करके उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन दिन संख्याका नियम नहीं है ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरोपाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत भाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवास अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अरुतालीस एकासणा करके १२ उपवासको पैठ पूर कर पीछे पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसव्वसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमोकारो १, सव्वपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसव्वेसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करे, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो छवतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंबिल करै, फेर तेला करै, फेर आंबिल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेला मिलाणेसे उपवास १२ भये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसु वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसम्रुतप २०॥ अब दूसरा इरियावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें भी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीछे इच्छाकारेणसंदिस्सहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें लेकर गमिकाउसग्गं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेला करके लेवै ॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसम्रु नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥अब तीसरा भावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पैठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेला करै पीछे नमोत्थुणंसे लेकर गंधहत्थीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणंसें लेकर धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीछे सोले आंबिल करके अप्पडिहयवरणाणसें लेकर सव्वेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह तीसरा उपधान नमोत्थुणका पेंत्रीसम्रु नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा
उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन. जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसें लेकर वंदणवत्तियाए अन्नत्थऊससीएणं अप्पाणंवोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह थापनारिहंतका

चोथा उपधान चउक्कम्‌ नामका जिसमें पोसा ४ उपवास २॥ अढाई ॥ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थेका पहले तेला करैं, पीछे लोगस्सउज्जोयगरें इहांसे लेके चउवीसंपिकेवली तक पहली वाचना देवै, फेर बारे आंबिल करके उसभमजियंचवंदे इहांसे लेकर पासं- तहवद्धमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तेरे आंबिल करके एवम- एअभित्थुआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना देवै. ए नामारिहंत चउवीसत्थेका अठावीसफनाम तप विधिसुं व- हतां दिन २८ पोसा २८ उपवास साढापनरे एकांतर करैं, अवि- धि करता दिन अठाईस पोसा २८ उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥ सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीछे ५ आंबिल पीछे पुक्खर- वरदीवड्ढेसें लेकर सुयस्सभगवउकरेमिकाउसग्गं तक एक वाचना देणी. यह छठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम छक्कम्‌ पोसा ६ उपवास साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीछे सिद्धाणंबुद्धाणंसे ले- के तारेइनरंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अथ उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब बहोत श्रावक अथवा बहोत श्रावकएयां उपधान वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंभरास हे, अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहे तो अपरो नामसें चंद्रबल देवै तथा उपधानवाही सांझकूं वाचनाचार्य के पास आयके इरियावही पडिक्कमके खमासमण देकेकहे (अमुक उपधान तपे पवेसह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग पडिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तहत्ति) इहां काम अमण दियें बाद चोवीहार करे, चाहेपाणी पीवे वा अथवा नोज

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी न्नी कारण करके साऊकूं खमासण नही दिया होय तो तव पमिकमणेके वखतसे पहली पिछली रातकूं न्नी खमासण देणा काल वखत पमिक्कमणा करणा नवकारसीका पच्चरकाण मालकण पास करणा पीछे सूर्य उदय न्नये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंन्नमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप न्नी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नही है. तिसके वाद प्रन्नातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके वाद पोसा सामायक लेणा, पीछे दो वांदणा देके पच्चरकाण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पूछा वांदणा दोय देवे ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पमिक्कमके मूहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयखंध तवं उक्खिवह) गुरु कहे (उक्खिवामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उक्खेवावणियं नंदिपवेसावणियं करेमिकाउसग्गं अन्नछउससिएणं इत्यादि काउसग्गमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीछे खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उखेवावणियं चेइयाइंवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो, वासक्षेपंकरावेह, गुरु कहे करेमो. पीछे वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करे. एसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानो का उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही आवे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन् जो जा उपधान वहे उस२ का ना-मोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥ ७ ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांझकूं पहिले चोविहारका पच्चक्खाण कर इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके काउसग्ग सागरवरगंभीरा तक लोगस्स विचारे, पारके प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह प हिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइं वं-दावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीछे गुरु वासक्षेप करै, पीछे चैत्यवंदन करे, पीछे खमासण देके उपधानवा-ही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांकरुर अर्द्धावनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिडुक्कडं एसें सब जगे वाचनाभिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया-निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांझकूं चोविहार करके अथवा प्रभातसमें इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहे—इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं अमुक तवंनिक्खिवह, गुरु कहे निक्खिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खिवणत्थं का उसग्गं करावेह,गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निक्खिवणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करकें खमासण देवै, अमुक तप निक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहे, पीछे संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना-विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रभातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण क्रिया इस

वास्ते मुहपत्ती पडिलेहके वंदन वव देवे (दो वांदणा देवे इस कूं वव वंदन कहते हैं) गुरूके साथ पडिकमणा कीया होय तो वांदणा दोयही देवै. पीछे गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे पच्चुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीछे अपणी इच्छानुसार पच्चक्खाण करे पीछे गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नकि आसातना करी होय तस्स मिच्छामिडुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रभातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पडिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासणपूर्वक पडिलेहणा उर अंगपडिलेहणा करे, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके पहिले खमासणसें उहीपडिलेहणसंदिस्सावेमि, दूसरी खमासण देके उहीपडिलेहणकरूं, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके गुरूकूं वव वंदन देवे पीछे गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहे. इच्छाए अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धंवातवंकरावेह. गुरु कहे उपवासे आंवले निरुद्धेति एकाशणे, एसा कहे. पीछे दश खमासणसें अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, बइसणं संदिसावेमि ३, बइसणं ठाएमि ४, सज्झायंसंदिस्साएमि ५, सज्झायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपडिग्गहूं ८, कडासणो संदिस्साउं ९, कडासणोपडिग्गहूं १०. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रभात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पडिलेहणा हुये बाद स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पडिकमके पहले खमासणसें पडिलेहण करूं १, दूसरी खमासणसें पोसहसाला प्रमार्जुं २. एसा कहके मुहपत्ती पडिलेहे, एसें दो खमासण देणपूर्वक अंग पडिलेहणा उर मुहपत्ती पडिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पडिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पडिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकभी वस्त्र नहीं पडिलेहे. पीछे गुरु पास आयके इरियावही पडिक्कमके पडिलेहणा १, अंगपडिलेहणा २, फेर गुरूके सामने करे. पीछे सिझायसंदिस्साएमि सिझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके दोय वांदणा देवै. पीछे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चखाण करे, इस खमासण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपडिलेहणसंदिस्साउं १, उहीपडिलेहणकरुं २, सिझायसंदिस्साउं ३, सिझायकरुं ४, बइसणोसंदिस्साउं ५, बैसणोठाउं ६, कठासणोसंदिस्साउं ७, कठासणोपडिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ए, पांगरणोपडिग्गहुं १०. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछे, पछै सर्वोपगरण पडिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पडिलेहे, तथा जिस दिन भोजन करे उस दिन पूण पहरकी पडिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पडिलेहै, उपवासके दिन नहीं पडिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहरे क्रिया-विधिः॥ तथा पाखीपडिक्कमणामें असिझाइका काउसग्ग नही करे तो आवती पखी तक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ भी गुणणा नही सूझे. इस वास्ते असिझाईमें भी असिझाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिकूं पूछा तब एसाही जबाब दिया योगारंभकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंभमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडुधुवचरक्षिपेः। वारेभोमं शनिविना ॥ आद्यादनंतपोनंद्या । लोचनादिशुभं२ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपडिलेहा ॥ दंडे पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु कंबलतइयचेवसंथारे ॥ कठासणेअठारस। जपेदंडेअपंचेव ॥ २॥ इति॥ प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठयंकुणइअठमंअंते ॥ नवकारनवदहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कत्थयंमितहएगं । अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयत्थए । चउत्थमायामतियगं च ॥ २ ॥ चउवीसत्थएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण थ्थयंमिचउत्थं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । एगासीअंबिलाणसव्वंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥ ४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअद्धाइयाणपन्नरस ॥ अठयउववासा । सव्वंगसठ्ठचउसठी ॥५॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठ्ठअवठ्ठएगउ त्तंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । बिलेहिंअन्नं वलेणंच ॥ ६ ॥ पणया लाचउवीसं । सोलसचउरहिअठहिकमेणं ॥ चउरउहियएगेणय । आयरणाहोइउववासे ॥७॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ ऋषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके वीच मंडलमें २४ कोठेमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रीँनमः १ क्रोंनमः बबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबब २, बबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबब ४, ॐ ह्रीँ अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रीँसिद्धेभ्योनमः ॐह्रीँआचार्येभ्योनमः ॐह्रूँउपाध्यायेभ्योनमः ॐह्रेँसर्वसाधुभ्योनमः ॐह्रैँज्ञानेभ्योनमः ॐह्रौँदर्शनेभ्योनमः ॐह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १॥ दूसरी वलयमें दश दिगपालोके नामकी दस चिठी दश कोठेमें धरे॥ इति द्वितिय वलय २॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां॥इति तृतिय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर ककारादिक तेतीस वर्ण इंद्रभूति आदि इग्यारे गणधरोके नाम ॐह्रीं युक्त लिखे. पीछे अडतालीश लब्धिपद ॐह्रींअर्हं एसा आदिमें देकर लिखे ॥ अडतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंडलपूजामें लिखे हे उस मुजब लिखे. पीछे चोवीस तीर्थंकरोके पिता ॐनाभयेनमः १ इत्यादि लिखे. पीछे ॐमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थंकरोके माताका नाम लिखे ॥ पीछे ॐह्रियैनमः १, ॐश्रियैनमः २, ॐधृत्यै नमः३, ॐलक्ष्म्यैनमः ४, ॐगौर्यैनमः ५, ॐचंड्यैनमः६, ॐसरस्वत्यैनमः ७, ॐजयायैनमः ८, ॐअंबायैनमः ९, ॐविजयायैनमः १०, ॐक्लिन्नायैनमः ११, ॐअजितायैनमः १२, ॐनित्यायैनमः १३, ॐमदद्रवायैनमः १४, ॐकामांगायनमः १५, ॐकामबाणायैनमः १६, ॐसानंदायनमः १७, ॐनंदमालियेनमः १८, ॐमायायैनमः १९, ॐमायाविन्यैनमः २०, ॐरौद्र्यैनमः २१, ॐकालायैनमः २२, ॐकाल्यैनमः २३, ॐकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवीसोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष उर २४ यक्षणीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीछे नव निधानोके नाम लिखे,फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली वीशस्थानक मंडलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके अष्ट सिद्धिका नाम लिखे ॐअणिमसिद्धयेनमः १, ॐगरिमसिद्धये नमः २, ॐलघिमसिद्धियैनमः ३, ॐप्राकाम्यसिद्धयेनमः ४, ॐमहिमसिद्धियैनमः ५, ॐईसित्वसिद्ध्येनमः ६, ॐविसित्वसिद्ध्येनमः ७, ॐप्राप्तसिद्धयेनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ ॐश्रीधरणेंद्ररक्षतुः १, श्रीपद्मावतीरक्षतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवैरोट्यारक्षतु ४. इति श्रीऋषिमंडल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंमल वीस स्थानक मंमलपूजा मुजब चढावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुज्ज दिन शुज्ज मुहुर्त्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट जर वांये पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै. पीछे एक वमा एक गेटा मट्टीआदिकका हंमा ऊपर खमी सपेदमट्टी पोतके चार२ केलर कुंकूका साथिया करै. पीछे जंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंमा धरै, जंची पर गेटा हंमा धरै, गेटे हंमेके तले एक त्रि इ करै, दोनुं मटकाके अंदर साथिया करै, वमे मटकेकी टिवची नीचे चावलका साथिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इकीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको दमो नीचला मोटा हंमामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली गेटा हंमाके ठिद्रमें पोकर ऊपर जो चौखूणी तणी वांधीहे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसें शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै जर एक जणेकी तरफसें होय तो शांति कराणेवालेके घरसेंती सुधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आजूषण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साथिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खमा धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तरफ च्यार साथिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उत्सव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

न्मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करे, पीछे पाच दश जणा इव्ये ठर नावे अपणा अंग शुद्ध करे, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करे. इत्यादि सर्व विधी इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अगरे स्तुतिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्व लिखी है, सो सब करके बलवाकुल सब देके पीछे सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोमें जल नरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर ढुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे, एसें सात धारा दे चूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीछे नक्तामर वमीशांति बोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमे गुणता रहै, ठर नहिं आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले बोटे कलशोंसे धारा देता रहै, छींक कोई नही करे, आपसमे दुसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीछे तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीछे नीचेके ठंमेमेसे जिनप्रतिमाकूं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करे, नगवान्‌की अच्छी तरे अंगी रचना करे, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती ऊतारे, मंगलदीपक करे. पीछे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपणे घरोंमें बांटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखमी बांधे. इससें संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछै आधा बलबाकुल परातमें रक्खा था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसें दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उस मंत्रोंसें विसर्जन करे ॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण ऋषभ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवीनंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करजोमी सेवक इम बोले, नहि कोइ माहरा प्रभुजीने तोले ॥इति॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय२ आरत्ती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गच्छनी शासनदेवी, सकल संघने सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजे, काने कुंमल दोय रवि शशि छाजे ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे, नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूमी खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुम चढ्या बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनमी जमामां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित२ मानी आरती ऊतारे, रोग सोग नय दूर निवारे ॥ ज० ए ॥ तसु घर पूत्र पुत्रादिक छाजे, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १०॥ देवचंद मुनि आरति गावे, जय२ मंगल नित्य वधावै॥ज०११॥इति॥

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपम इण विध खेल रे ॥ अशुन्न करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग रे, वमीय विछायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे॥ अरे० १ ॥ दान शील तप नावना च०, चोपम एह पसार रे ॥ आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं न्नला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, उज्जल लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र न्नला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात दिरदे धरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पमथा अगारे रहण दे च०, पोवारा व्रत बार रे ॥ दश लक्षण दश धरम दे च०, दित

कर हिये विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकमी पमी च०, हिर-दे दया विचार रे ॥ पुन्य ऊदय पंजमी पमी च०, पंच महाव्रत धार रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काया पड्या च०, सातुंइ विसन निवार रे ॥ जे ऊरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, ऊख सह्या ज्जरपूर रे ॥ करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेत्रुंजकी घात, लख दोनं दल अपणे परायेकी जाल ॥ कान्न विध कर मोह बाद-स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आवुं कर्म पियादे आगे ऊकतेही आवे, काम क्रोध गज चलत थंन्न ल नहीं थंन्ने ॥ लोन्न ऊंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावे, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावे ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर वाके ढंग गम्मो, वाके मारवैकों दल अपणो संन्नार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गम्मो, आवों अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलके अगामी, पर दल कर मारो बिनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं ऊर, जब वाकै चल-नेकी काइ रहे नही गेर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर वंधेगो मोम, गमे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगे चवर, तेरो न्नजन न्नजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-
ष्ट भवनकी प्रीत हमारी, नवमे भव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२ ॥
रूपचंद भगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥
इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-
का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिल्ला, फिटक
रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब,
ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी धजा
फरूके, क्या कहूं अजव तमासा हे ॥ नाथ निरंजन
नाम तुमारो, भरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ इंद ख-
मे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं
जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
सखि सघ वनठन, सखी० ठाढे नाभि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥
रिषभकुमरको जनम भयो हे, मंगल मुरूक उच्चारे री ॥ स० १ ॥
ताल मृदंग रवाव मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा
व भाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता
मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगवंधव जगपतिकुं निर
खत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः
हो जिन तेंमे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन भवरमें
भटकंदा, अव मेंनी ठर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंने
लार लगे है, ठनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु
साहे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
म्हारा रिषभ जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंबेली चंपा गु
लाब लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०
१ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध गु
ण पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ भाव भावुं रे ॥

ऋषभदास पूरो आस गुण गाउं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि भवतर णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता, नंद ऋषभ सु खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या न, म्हारे मन रे अ०॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जग तारन टारन अघको रे, वारुं तन धन ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, नि त्ति पुरंदर स्थान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ य अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ मैं नां जाणूं सहियां, य० ॥ मैं तारण तरण सुणयो छै, मैं यातें शरणो हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके व हुयके, मैं भटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित क दाश निहारै, करजोभि पभि हुं पइयां, शिव देति क्युं न स[illegible] ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोभीराय अरज सु णीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिलभर दरशण दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवभी दरसण दीजै, सकल करम दल छीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पभणे, प्रहऊठी प्रण मीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंभा प्रभु इण दिल

वसणावे, तेंमा तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो तत्त्वज्ञानके दाता, नविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जिनचंद एसे प्रनु मेरे, चरणकमल चित्त ध्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ नानिराय मरुदेवीको नंदन, मेरी उर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि जिनेसर अंतरजामी, स्वामी कबु न विचारोगे ॥ हम० २॥ जगजीवन जगतारक तुमहो, एही विरुद संन्नारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरिंदके साहिब, नवजल पार उतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रनु नजले दिन चार ॥ पं० ॥ कूठी काया कूठी माया, कूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो, जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृद्धापण आयो धरम न पायो, पीछै करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पुण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंती, अब तेरोही आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज, जोमे आरे कोण जुमेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विमारण नागकूं तारण, संनलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवै, नव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंनायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, कैसें० ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, सुख डुःखसें जीया रुलत फिरै ॥ म० कैसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी नटकावत, जादोसें मेरो प्राण डरै ॥ म० कैसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रनु सेव्यांसें काज सरै ॥ म० कैसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः राजरी वधाई वाजै छै, महा० ॥ सरणाई सिरै नोवत वाजै, घन ज्यूं अंबर गाजै

है ॥ म्हा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावै, मोतियन चोक पुरावै है ॥ म्हा० २ ॥ सेवग प्रज्जुजीसैं अरज करै है, चरणारी सेवा प्यारी लागे है ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अम्हाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो काला, माणक पर प्रज्जु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारो हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घूंघट पट उघारी, अनुज्जव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ जव परणित परिपाक इते पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकुं, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकमी करमगति जाय न कही, चिंतत और वनत कछु औरे, होनहार सो होय रही॥ हे माय वां० १ ॥ सकल साज सझियो व्याहनकूं, राजुलकों तब चाह जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥ हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिव्रगता, जानत सकल मही ॥ झूठो दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंममें धीज दही ॥ हे माय वां० ३ ॥ कायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाण कही ॥ उलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो लागे है जी थांरो उपदेस, म्हांन० ॥ ग्यान जगावण जगुण

मेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर दुख दूर करणकूं, जगत वढावत देत ॥ चंद फते नित एही चाहै, समकित सुखको खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मेरो पिया पर संग रमत है, मैं केसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावे री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति हुसह पिया विन, कोन बुझावे री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अनुजव आयो, सव परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोउं हिल-मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरपित वचन ऊरी, हो सुगुरु मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतें ऊमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु० १॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति मरी ॥ हो सुगु० ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सु-गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सुं-जरजर्यो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप-इया जविजन, वोलत जक्तिजरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी, सहज सजाव फली ॥ हो सुगु० ५॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या घरीमें रंग, वन्यो है म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध जेटे, हरख जयो अंग अंग ॥ व० या० २॥ एसी विध जव२ मांहे मिलियों, धर्मप्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अव घरर घरर घन गरजे ॥ चि० ॥ नेमप्रजु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञए घन ज़रसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुंढ सकल वन२में, कबहुं पिया ना दर सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी विजुरी ऋरावै, दूजी विरह व्याकुल ज्ञई तनमें ॥ मो० १॥ ऊरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल ज्ञई विरागण छि नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥राग विहाग॥ समऊ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जेसें उरो ॥ स० १॥ या तनको कहा कोन ज्ञरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करै सो अबही करलै, पुनपरहो जिम ऋोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बांध्यो, जानवूऊ ज्ञयो ज्ञोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी ज्ञीत उसको मोती, कोइ घरुी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटरुी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख हैं, मेरे तूंही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठै टलै, मेरे मनका ऊोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला॥ आणंदघन प्रज्ञु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे ज्ञाग, वीरप्रज्ञु आए हें ॥ आ० ॥ चंदना खमी डुवार, चित्तसें करे विचार ॥ देखत दी दार हीया, हरख ज्ञराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रज्ञु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो ॥ सुकृत बहु तेरो, ज्ञगवान दिल ज्ञाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहे जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥आ० ४॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ वावरो रे आज मनवो मारो ॥ वा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ० १ ॥ आप न आवे वारी न लिख ज्ञेजे, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निजघर आवे, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रूपज्ञ विहारी, थांरी तो उवि न्यारी हो ॥ रू०॥ प्रथम तीर्थंकरप्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ रू० १ ॥ धनुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ रू० २ ॥ नाज्ञिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ रू० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रज्ञु ठो पर उपगारी हो॥ रू० ४॥ केवल पाय प्रज्ञु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो ॥ रू० ५ ॥ आनंदघन प्रज्ञु एती वीनती, तुम पर जाउं बलि हारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरे रे, सु० ॥ चित कहु उर विचारत हे नर, उरही उर बने रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचे, चिम्यिा केसें बचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मेरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ ज्ञावी ज्ञश्या, क्यूं जग चाह धरे रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न भजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सखियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक भूप चेलणाराणी, भक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमंग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २॥ भव २में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागे, पेख्या विभाव त्यागै, अध्यातमरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, ऋषभ प्रभू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल मांझ याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं लार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसें विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल, प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थांरे सुखकारी हो वारी राज, प्यारी छवी वरणी न जाय ॥ था० ॥ शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंरुल सोहाय ॥ था० १ ॥ मोहनगारी सूरत थांरी, देख्या म्हारो मनरुो लोभाय ॥ थां० २ ॥ फरकत नेण भए दोउं निरखत, थांसु प्रभु प्रीतकी लगाय ॥ था० ३ ॥ भव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलरेमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानरुो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरभव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक रुरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, भवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगरुो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी मो० ॥ मैं मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि छानो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, बाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म परुयो मुझ केरे, किस विध छूटै पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं भववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संभारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता, संभवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागभैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सर्व।

मेहरवान न्नई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवे वोधा पगावै, तेरी सूरत कुरवान न्नई रे ॥ वी० १ ॥ साशशनायक एही अरज हे, दीजै दरस वको वैर न्नई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विन्नास॥ न्नोर न्नयो अव जाग वावरे, न्नो०॥ कोन पुन्य तें नरन्नव पायो, क्यूं सूतो अव पाय दाव रे॥ न्नो० १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों, मोह मगन ए विकल न्नाव रे ॥ न्नो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुन्नाव रे ॥ न्नो० ३॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें वहु पुन्य प्रन्नाव रे ॥ न्नो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूबें अव पाय नाव रे ॥ न्नो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट॥ जाग रे सव रैन विहाणी, जा०॥ उदयो उदयाचल रविमंमल, पुन्यकाल क्यूं सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंम वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी हग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जम संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पइयें, नींद सुपन ए जम नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संन्नार आपणो, कव तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा० ५ ॥ सुध वुध न्नूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जथानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलाउल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन न्नावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १॥ नव न्नव नेह निन्नाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी, न्नयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २इति

राग ललित ॥ आज रूपन्न घर आवै, देखो माई आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन नावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगताफल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रनु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांसकुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिल्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे वरास मिल्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग टल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख रुपा कर साहिब, ज्युं पारे वो पल्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी रुपासें, हुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगेने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण छे अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवनव एहवो, जुनवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागे, कायाघट छे काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें नरियो हे जिनवर, पूरव पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमज्यो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लानकहै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ नज मन नान्निनंदन देव, न० ॥ ध्यान मुनिजन अहग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ न० १ ॥ चक्री नू-

पति वन्दे सुरपति, वासुदेव वलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ भ० २ ॥ असरण शरण है विरुद जाको, भक्तिवच्छल भेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषभ सिर पर, नाथ है नितमेव ॥ भ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमकों न संतावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सझके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज छांडी वतन, तकसीर वतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी भव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके व्रमन ॥ सब झूठे पछेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेउं दोऊ नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीवाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अंब कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ वीच भुवन हिय हरख धरैं, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली सूरत अधिक विराजे, वासुपूज्यकी महिमा छाजै ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद झरैं, पदकज वलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकूं आवै, निरखश प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जझी मन प्रेम धरैं, जगपति रुहसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान है ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नही देखा समोसरणा किया भवदधिमें कदर भरणा ॥ दोऊ जो लेते प्रभु सरणा, दू

दुख होते जनम मरणा ॥ बैठ नववरमें लगाया नही ध्यान, राज शिवपुरमें हुवा अपमान, फरो अब देख काल खगवान, ना नि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठुं मद तुमसें दूर रेते ॥ यार जो तिनके चरण सेते, शशी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो नूर, वरे वो नव नव सुख नरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखशां जिन नूर हुवे दुखदूर, करो नवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रनु तेरी सूरतिया लागे नली, नेणांहमारी प्रनु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुनव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रनु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंनर अतुल वली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुफकूं आश दीनपति तेरी, डर न चाहूं देव वली ॥ ने० प्र० ४॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद नली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी कुदतार फली, ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलु ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नही कोई, ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रनुजी अब, आन नई तुमसें नट नेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करे वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घमी२ पल२ छिन२ निशदिन, प्रनु कों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रनु समरण सब पाप कटत हे, अशुन करम सब हरले रे ॥ घ० १ ॥ मन वच काय लगी चरणान नित ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रनु गुण गावे, मन

हिर लहिर कर वगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० आ० ३ ॥ धन२ वेला जी आजनी, सैंमुख मिलिया छो आप ॥ व० ॥ हूं स घणी कहिवा तणी, वीतक दुस्क संताप ॥ व० आ० ४ ॥ जो नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ भगतवछल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० आ० ५ ॥ किरिया जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो वलिहारी श्री नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० आ० ६ ॥ गुनही तारथा जी व हु विधे, विवुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो, किम नवि सारो जी काम ॥ व० आ० ७ ॥ अतिशय ज्ञानी जी इण अरे, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुद्रासुं मन रमें, के तुम वचन प्रमाण ॥ व० आ० ८ ॥ मुझ तन मन मंजूसमें, ज तन करूं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुण रतननी मूंधरी, प्रेम जरी निज हाथ ॥ व० आ० ए ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवास ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, भुवन रमण केलास ॥ व० आ० १० ॥ पावापुर जगणीशमें, अरुतालीश उदार ॥ व० ॥ कार्त्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रूद्धिसार ॥ व० आ० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

(नैणा सफल भयें, प्रभु दरसण पायो आज ॥ ए चालमें)

निरख हिया हरख भरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अभिलाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, सम रथ को नहि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, भक्त सुधारण काज ॥ नि० २ ॥ दुखभंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत। अंतर राख्यां नवि बने रे, तार२ भगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष पुन्ये लह्यो रे, वंछित पूरण नाथ ॥ भाग्योदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु जव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज ॥ नि० ५ ॥ जगणिसे अमतालमें रे, कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥ चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥ कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन॥ रूपसार जिन ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो जनम सफल जयो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तोय न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १॥ जव२ जटकत शरणे हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे मैं० २॥ कमठ हरावण नागकूं तारण, संजलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम स्वामी अंतरजामी॥ कि० ॥ ऊंचे२ गढ पर पाश विराजे, चारो तरफ ज्ञानी ध्यानी ॥ कि०॥ नीलवरण तेरा अंग विराजे, वदनोंकी जाउं बलिहारो ॥ कि० २॥ बांहे बाजुबंध बेरखा विराजे, कुंमलकी बवि हे न्यारी ॥ कि० ३॥ ढूंढत२ मैं प्रजु पायो, पूरण पदवो अब पाई॥ कि० ४॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥ मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥ मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ२ भई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥ अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोभोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी हमारो पोढे पालणे, मेंहुं झुलावनहारो ॥ अ० २ ॥ नहि हुं परणी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारो ॥ कालोदाढीको में कोइ नही छोड्यो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खुटली, गगन ओसीकूं तलाई ॥ धरतीको छेडो आभकी पिछोडी, तोय न सोड भराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंडलमे गाय वियाणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो भाई विलोवणा विलोवै, कोइयक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहिं जाउं सासरीये नहि जाउं पीहरियै, पीयुजीकी सेज बिछाई ॥ आनंदघन कहै सुणो भाई साधो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६॥ इति पदं॥ पुनः॥ हंसा तूं मानसरोवर वासी, वामे भूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥ नीर अगाध भरयो थों करदम, पसरो वेल जरासी ॥ आंडी वांको कबहू न सीधो, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चंडाल भूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पछतावै पर आंगणमें, भटके गया ढर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी झूगे फैल मचावै, भागो माहावत जासी, दुनियां चढ२ नीचै गिरती, पडतै ही डालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै इक दासी ॥ ऋद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी२ रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर२ नहीं आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम२ सुख पावै ॥ अ० १ ॥ तन धन जोवन सबही झूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ० २ ॥ तन छूटे धन कोण कामकों, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं झूठ न भावै ॥ अ० ॥ ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो ॥ ये० ॥ आठेंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे॥ तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ भवका फेरा वारी करो जि-नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चितमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो ॥ ओछासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं छल परपंच करो ॥ एती० १ ॥ कूम कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परभव-थी न मरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरणके डुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अवधू निर पक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥अ०॥ समरस भाव भला चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वा तां, जाणेगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें भेद न जाणे, कन क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढते गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त भारंम परे नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४॥ पंकज नाम धराय पं कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रभाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोवणा ॥ च० ॥ भया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत, सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरभीके बंध छुटे, घुघरू भये अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं भी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समझ परी, मोहे समझ परी, जगमाया अब जुगी ॥ मोहे समझ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही भरोसा पल एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल छिनभर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

भलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ राजुल कन्नी अरज करे छे, भलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥ इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, भलांजी वांतो पशुवनकी सुणी छे पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, भलांजी वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवै, भलांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः

रसना सफल भई, मेंतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम आनंद प्रगट भयो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ नाक नमन करतां प्रभुजीकूं, सारया आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपंकज प्रभुके फरसतही, दूर गई दुख दाझ ॥ कहत क्षमाकल्याण सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी ॥ मुझें छोडके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई आशकी निराश, उदाशीनता धरी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीरमें परी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम विना घरी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ निशदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी झरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन किसीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात ज्रुर जात सजनसें, कांइ रहत निचिंत ॥ ज० १ ॥ सबही अपणे स्वारथके है, परमारथ नहि प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० २ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ज० ॥ को नहीं तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक जगवान ज्ञजनको, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहे एह धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदीसर जिनराज, त्रिज्रुवनके महाराज, आज हो आयो रे, में शरणे प्रज्रुजी तुम तणे जो ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥ आज हो जागी रे, मुऊ मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लगी ज्ररपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो ठोडूं रे, नहीं तुम पद सेवा सुखकरु जी ॥ ३ ॥ नाज्रिराय कुलचंद, मरुदेवीके नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रज्रु मुऊकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश क्रमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे, प्रज्रु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोमीगाइयेमन रंग, गो० ॥एक घ्याने एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजे अमृत पीजे, नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासे, आलस नावे अंग ॥ गो० २ ॥ पोढतां प्रज्रु नाम लीजे, आणी मन उठरंग ॥ अज्रय तेहने ठंघ मांहे, कदिय न होवे चित्त ज्रंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हांरे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमानें मटके ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तकुं लीधुं चटके ॥ प्रज्रुजी केरी ज्रक्ति करंता, करमतणो कस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुऊ मन

जोनी ज्रमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि मुं की राचे, कहो कुण काचतणे कटके ॥ हांरे हूं० २ ॥ ए जिन गुण तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुख दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हांरे हूं० ३ ॥ ए जिलने जे दिलमां न आणे, ते तो जूला ज्रटके ॥ ज्राव ज्रक्तिसुं ज्रजन करतां वंछित सुखमें सटके ॥ हांरे हूं० ४ ॥ मूरत संज्रव जिनेश्वर केरी, जोतां हियमुं हटके, निस्यलाज्र कहे प्रज्रु ए मोटो, गुण गाउं हूं लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रज्रुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसें कर छूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें वाको जीयो, अपणा प्रज्रुजीसें रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रज्रुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सुख लहस्ये री ॥ प्र० २॥ सेवाराम प्रज्रु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा दुर करना, छु० ॥ एक ध्यान प्रज्रुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥ खत० २ ॥ संवर ज्राव सदा मन धरना, आतम दुरगति हरना ॥ ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मरणा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रज्रु पाये परना, शिवसुंदरी सुख वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप ज्रावना, जगमें ए तंत सार ॥ रे० १ ॥ बरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इक्षुरस दान वहराविये, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघाम्पिया, चलणी कादयो नीर ॥ शतीय सुज्रद्रा जस थयो, शीले सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजिनंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य भावना भावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल गंह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन निद्रा तूं कहांसें आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मैंतो बाली रे भोली, बमे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मैंतो जगमकी दासी, एक हाथमें मूंकी डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ वनिया, आप डूबे सारी डूब गई डुनिया ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रभुजीसें ध्यान रे, मोरी लागी लगनवा॥ चं० ॥ लागी लगनवा गोरी नहि छूटे, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोमके अरज करत है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ते शिवपुर गये रहे रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि० ॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमातम शिवधाम रे ॥ समाधान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम, अमृत पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे भले रे कगो छैयाम्हो आजनो रे, मैंतो सुखम्हो दीगे जिनराजनो रे ॥ म्हारे भ० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ महाराजनो रे ॥ जिन लंछन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥ म्हाने पागी मिल्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिल्यो शुभ काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फल्यो काजनो रे, म्हारो

मढीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो भवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी रे, मांहे बूटी दीसे भांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगटमा जड्या बहु रे, काने कुंडलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुझ सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो उग्यो सोहामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आजथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरबे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्यूं रे ॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी उपेर करुणा करी रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः॥ म्हारे आज आनंद वधामणा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आथडता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेवमें रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरू रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा मनमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी, स० ॥ ए संसार जेसा सांभला, घडपण आया घोडे चढी ॥ मांगी तूंगीनें वत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कडी ॥ स० १ ॥ साधो भाई

जिनने संजारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लींबो जज तूं जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवोश्नी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम जगत वछल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रजु केहवी अइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रुगो ढवी सो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सर्पी आंबातणी जे रुदाख, आंबलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुऊ दीदार नहीं तुऊ जोमे रे, इण जग में जोतां कंत कहूं तूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मित ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६॥ इम करतां बांधीप्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे छेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम ऋद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रजु नेम राजुल सी प्रीत मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ कान्हो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमोहन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा बागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल छिन घमी रे, मत मन प्रजुकूं जूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोजता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अजंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निग्गुण दास पर साहिबा रे ॥ दित कर दीजै हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंद शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश॥ निधि ईंदु शित सप्तमी रे, ऋद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन भाव नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहुं, लागी लगन गुण गावणकी॥ छ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक पर, वरसे घटा जेसें सावणकी॥ छ० २॥ बालपणे प्रभु हम संग खेले, अब तो भइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जिन पूरव प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे भरोसो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ सहजानंदी एक लहरमें, दीजे सुख दुख जावनकी ॥ छ० ६॥ पारस भेट रहे जो लोहा, होवें लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास आश प्रभुजसें, ऋद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसें आंखम्लली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत भइ रे ॥सा० ॥ जिन मुख चंद चंद्रिका निरमल, चंचल नेण चकोरमई रे ॥ सा० १ दुर न कीजे निज चरणनसें, सुरतरुकी छांह गही रे ॥ सा० ॥ दिलभर प्रभुसें अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २॥ विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३ ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, ऋद्धसार लय लाग रही रे ॥ सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सांवरिया पास जी सुख दीजें, प्रभु अरजो दिलभर लीजे ॥ सां० ॥ मनमोहन मूरति थांरी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी॥ सां० १॥ करुणारस अमृत कूंपी, लयलीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जव पारस नाम उचारयो, रघुपति को कारज सारयो, प्रभु धरणीधर निसतारयो ॥ सां० ३ ॥ शिव-

शंकर रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता धारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववामी सुंदर ठाजै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवे, शुभ पूजन युगति रचावे, प्रभुजीसें प्रेम लय लावे ॥ सां० ७ ॥ अभिनवं श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसें उगणपचासे, सुदि पांचम यतन विलासे, प्रभु माधव मास हुलासे ॥ सां० ए ॥ हितवछ्भ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुमतेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे ठोम चला विणजरा ॥ ए चाल ॥ तुमे जो ऋषभ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकभर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिवारी, कंदर्पदर्प विपयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पीयूप सहज सुखभीने ॥ माया छाया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूपा त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरे अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रमधर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजे आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुंर वाजै चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठननंर अवाज होता, महेल बनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नितर वाजै चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार बमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोन्ने, जैसा सरद पूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओठव करणेकु आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावैं, जिनका गुण हे सबसें बमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमेर झोके खाता, बारे बरसकी उमर प्रन्नुकी, ठोटेपनमें बहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोबती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे लकमेमें, बमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसु कहता, तोबी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, बमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंन्नीर प्रन्नूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नन्नमंमल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कम्रू२ कर हुआ कर्षाका, चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षा ऊर्मीमें, प्रभु खमा हे मतवाला ॥ नाक बरोवर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वर्षा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण मोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाठ२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोम ऊपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नहीं चलता ॥ तरणेवाला साहिब उनकूं, छलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोम खमा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी करता खमा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वर्म देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वर्षी जुगतसें सिंहासण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ नामंमलके आगे शोभता, मूल गुंभारा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोभित, सिरे काम सिंघासणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहसफणा प्रभु पारसका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥ अढारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास भला ॥ सुदी तीजकूं तखते वेठे, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वर्षी

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोमता सवाईने, वमा साहमी वात्सल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वमा शिखर निशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥ पारसनाथकूं तखत वैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिविजय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वमा ॥ गुलाबचंद सादेव के आगे, जिनसासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग मैं, ग्यान ध्यानसें खमाश, हाथ जोमके अरजी करता, पारसनाथ जी तूंही वमा ॥ वमा काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, नविजनकुं सुखके दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

ऋषन तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा॥ वंश इक्ष्वाकू नन्नचंदा, नूमिपति नान्नीके नंदा ॥ मात मरुदेवा सुखकंदा, प्रगट नये जगजन आनंदा ॥ (डुहा–साखी) रेणु पूंज पर थापकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप नयो सचिपतिको, आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ नये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥ मौलि पर कनक मुगट राजै, माल गल मोतियनकी गजै ॥ श्रवण युग कुंमल अति साजै, निरख नवि कोटि नान लाजै ॥ (डुहा–साखी) हीर वीर सोन्नावणी, आप ताप ऊलकंत ॥ युगल अलंकृत देख प्रनूकूं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥ सुनंदा सुमंगला राणी, नोगसें योग प्रीत गनी ॥ नये शत पूत्र सुगुण खाणी, प्रनूने दिया राजधानी ॥ (डुहा–साखी) चौसठ विद्या नारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रनूनें, प्रजापती अन्निधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लान्न अंतराय उदै आया ॥ बरसदिन नोजन नहि पाया, नेट मणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ (उहा–साखी) हस्तिनागपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभुकुं वहिराया, देव करत जयकार ॥ अक्षयतृतिया भई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम हन केवल चिदरासी, नाथ भये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु भासी ॥ (उहा–साखी) ॥ कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जगी घनी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृष्ण घनस्याम मूरति नीकी, सजल घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद भमरकीकी, भक्तिरस कुंमल पुर सीखी ॥ (उहा–साखी) ॥ जगणीशय अरूतालमें, ज्ञानपंचमी रंग ॥ कूम कपट तज भेट भई जिन, सुंदर कमला संग ॥ कुशल शृङ्गार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये, प्रभू चवद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय निज देख पावापुर आये, तव सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण छवि छाये, भामंडल धजवर डुंडुभि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका वीच सिंहासण भारी ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तव हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके भाव प्रगट गत रागे ॥ भापे सिद्धारथनंद सुणत भ्रमभागे ॥ तिहां नरपति सुरपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागे ॥ गौतमकूं भेजा प्रतिवोधन उपगारी ॥ प्रभु पा० २ ॥ अम्मावश पिछली रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोत्सव कीने ॥ गौ

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तब जगत प्रकाशन ग्यान सुधा रस पीने ॥ मेरी धन्य घमी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हियरा हरष न माय फरकता सीने ॥ नई दीवाली जग वीच तन्नीसे जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज कगा लिया नरानरी ॥ तहां न्नया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधनने किया न्नुवन विस्तारी ॥ प्रन्नु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रन्नु दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल नवि न्नविकूं लागत प्यारी ॥ प्रन्नु० ४ ॥ प्रन्नु धरमचंद हो आप आप जस राजा ॥ क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव अंगिया साजा, प्रन्नु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन उगणीसे अमताल कृष्ण पख गाजा, न्नये कार्तिक दिन निर्वाण न्नेट माहाराजा ॥ प्रन्नु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुद्रसारी ॥ प्रन्नु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रन्नु रहम नजर कर दिलन्नर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करूं नाथ तुम दूर वसे वमन्नागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी ॥ नहि इस डुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक ध्यान न्नया अनुरागी ॥ जो पल न्नर पाउं संग अमृतरस पीजै ॥ प्रन्नु रह० १ ॥ मैं न्नररयणीके वीच सुपन पन्नु पाया, पन्नु अरस परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोम२ आनंद हरख न्नर आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख देखूं नाथ चरणकी गया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दिल चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजै ॥ पन्नु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजे, धन२ वो नर हर नार सुण-त धुन साजै ॥ जो पर पाऊं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आऊं जिन तुम पाश देख दुख भाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन मालती फूल भमर मन रीझै ॥ प्रभु र० १ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर मीन खुलियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अभंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन भक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामबाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया-महाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस वाजै, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै, प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद भाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज भोग अचलपद लाजै ॥ पारसके संगत लोह कनक भयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वरणूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअभयदेव सूरी गण खरतर वासी, तुम शांतिक जल सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उच्छव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग विच भुवन बण्यो कैलासी, क्या अद्भुत महिमा चंद्रकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु दुर्जन

फंदा तोम्म मोहकी फासी ॥ जिनचंद्र सूरीश्वर विजयराजके सर सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवल्लज्ञ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री संघ सदा कल्याण ज्नक्ति बुध दीनी ॥ सन् ज्गणी सय अम्रताल माघ सुद लीनी, सुज्ञ वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, ऋद्धसार कहै सुखकार ज्नक्तिरस पीनी॥ ज्नइ कंचन काया प्रज्नु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण आये फेर मत जाउ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन्न कोम्र जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-वरकुं सिधाए, हमकुं ग्रंम्री नव ज्नवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सलूणे, मैं इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी मैं तो-कुं कहतहुं, देखूं शोज्ना गिरवरकी ॥ मातापिता बांधव सब ग्रंमी॥ जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल, बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ग्रोम्र चले निरधारी, अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सुण हो राजुल, विषयारस हे विष सरषी ॥ यह संसार असार निरंतर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासें संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह ज्नव पार उतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पोहता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोज्ना हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल मांहे, फिर फेरा नहि फिरनेकी ॥ ने० ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे भव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की ए हे संसार ॥ करो प्रभु निहाल अभी जिनदास, रखो प्रभु मुज चरणोके पास ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोवत समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत भव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी झाली ॥ अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढै केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे, शीश चरणोंसें नमावें ॥ ३ ॥ बोलत हे हिया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्मोंमें धसकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर, हटाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास लिया वासा ॥४॥ समज मन मेरा मतवाला, तुझे नहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो भगवंत पर भाला ॥ दयासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्भमती ॥ पूठ परखमे जागता जती ॥ मुझे बलवंत भई शोल सती, मटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट दुरगतिका भारी, नीर ज्यां भरती कुमति नारी ॥ वरछी उन नेणोंकी मारी, मुआ कैइ कामी संसारी ॥ इनोकी दो रहिये खुआरी, जीता कोइ सदय

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥ कुमतिकी पडी गले फांसी, सुमतिसुं रखी दे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासो ॥ हियो खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नाहिं मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊतरं गया पानी, गती तेरी दुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजे, सुधारोगे तुमही काजे ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजे, सुधारोगे तुमही काजे ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥ कीसीकी भूंडी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजीका भेटो रे च०, भव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो ॥ सुकृत कीजे—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण भज लीजे, समकित अमृतरस पीजे ॥ लाभ जिनभक्तीका लहिये रे—लाभ० ॥ चल०१॥ करो मत मुखसे बडाई, करो०, तज तामस तन मनका सुमति कर घर रहणा भाई ॥ रीतसें बोलो—मेरी जान री० ॥ आतम समतामें तोलो, मत भरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० २ ॥ जोबन दिन च्यारतणा संगी रे, जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पडी नंगी ॥ प्रीत सब तूटी—मेरी ज्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे—सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी दुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा–मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे–मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे–मु० ॥ अब अचल अखंडित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुल्यो चोरासी मांहि जूल्यो में जरम, जूल्यो०॥ महारे उदय अनंता दुख बांध्या जब कर्म ॥ में कदियक हूउ रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु कदियक राजा जयो गरयको गरम ॥ जब गरब आणकर बोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत परमी शुन्न आई रे, प० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्यांया, जला० ॥ में उलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ में परम्या जोगके फंद जोरूतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब दुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी मालो काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बेन अर जाई रे ॥ बे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन जायो सदा गुण गाउं; सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण चित ध्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए

चौरासी के माहि फेर नहीं आवं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत एगाई रे ॥ की० अव० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हांरे तूं कुमति कलेसण नार, लगी क्यूं केमै, ल० ॥ चल सरक खमी रह दूर तुझै कुण ठेमै ॥ हांरे तुं सुमतीको भरमायो, मुझे क्युं ठोमी, मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत छिन कमें तोमी ॥ तुझ विन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोमी, क० ॥ अब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ युं कुरड़ कुमति आंसु आंखसे रेमै, आं० च० १ ॥ हांरे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति में रुळो, सेति० ॥ पकमयो साचो जिनराज, संग तेरो छूटो ॥ तेरो मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुवो हुं दूर हार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमै, आ० च० २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नाहिं पाली, पल० ॥ सुमती के लागो संग मुझें क्यों टाली ॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुणावे गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरी अर काली ॥ तूं हम कूं ठेले दूर सुमतिकुं तेमै, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल भायो, रती नाहिं झिगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं भगियो, दू० ॥ जिनराज वचनको ध्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं वात खोटी मन खेमै, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस० तेरी अलप ऊमर खूट जाय, नरक अठ जाणा ॥ तें दिना चार जुग बीच लिया हे वासा, जिण ॥ तेरे सिर पर वैठा काल, करे हे हासा ॥ में बोलूं साची वात, झूठ नहीं मासा, झू० ॥ तूं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक में खासा, खल० ॥ तेरे जोबन पतंगका रंग, झूठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब वात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए सुख मीठा संसार भेद नहीं दीजे ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजै, हिये०॥ पण नीच नारका संग मांहे मत भीजै ॥ अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे दुरगति दे पोहचाय तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख दुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं०२ ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कुटंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लिया नहीं तें लाभ, वखत पर करका, व०॥तेरी वीती वात सब जाय जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया, आ० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास सुधारस पाया ॥ मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ में चाहुं चरणकी सेव संफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसणकी, मेरे एहि माया, मे०॥ यूं अरज करे जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४॥इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार, सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस असनाइ ॥ अब अजब अलो जो नेम, मेरे शिर गाजे ॥ ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्यान, जगत सब लाजे ॥ एसो नेम नवल इक वींद, अनोखो वाजे, अ०॥ सुरनर सब गावे गीत, गगन में गाजे ॥ अब दोरू२ सब दुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे० १ ॥ अब चढा नेम तोरणकुं, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज आये सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरख

हिया जरकर, इ० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥ सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्यागी, शिवरमणीके शिर वींद, बण्यो वैरागी ॥ अब महल चढी राजुलकूं, खम्री झिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥ अब कवन जीव डुरगतको, बन्यो मैंदानी, ब० ॥ जिनदास करो जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक वीच मगसी पारसका बाज रह्या डंका, मुगति गढ जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं क्षय कीया रे, क० ॥ मुगतिमहलमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता जीया, माहाराज शा० ॥ कव्याणक कारज कीया, अमरापुर पदवी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रजु पारस जजले जाई रे, प्रजु पा०॥ जाव जमरका मेट जोत तेरी जगमें सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान गरबकूं गालो, गरबसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे शुज जाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रजु मगसी पाया, पापसे डरता, महाराज पाप० ॥ जवि जीव ध्यान दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डुख मिट्या मेरे अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे, म० ॥ नहि क्षयमी मेरी आंख विलोया परब विना पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥क० मु० ४ ॥
॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही रे, पुदगलमें मान्यो सुख कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे जैन निज सार संघाते आवे, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वेगो, विषय गुण गावे ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावे, वि०॥ मुगतीको मारग मेट, उवटमें जावे ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहि, विकल बुध भई रे॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत भंमार भरया हे मोती, भरया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल फुलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवे, अबला तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत छिन मांहि सरब हुय भई रे, स० ॥ पुद० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सुखभर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सझिया शोले सणगार, नारिसें मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक निगोदकी वाट, पकम कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ, मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोले, प० ॥ चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोले, अब अवसर आयो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥पु० ४॥ कायासें कीयो लाम बनाइ चंगी, व० ॥ पलभर परवारयो पुन्यतणो तिहां भंगी ॥ पकमी परभवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंस गयो आकाश काया पमी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो० ॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥ में नमुं नेमके पांय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर पहले लागी, तुम त्याग चले वनखंम भये वैरागी ॥ अब राजुलसो

सतवंती भावसें त्यागी, भा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण भर२ रे, नेण॥ मैं० १ ॥ मैं अरज करूं करजोड़, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिर पर तुम सिरदार, देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित बरसन॥ मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ मैं० २ ॥ मैं नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठे, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे, जो० ॥ मैं चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं डर, जगतमें वर रे, ज० ॥ मैं० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥ पीछै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परभात, नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं डर जगतमें वेली ॥ युं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ मैं० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवै॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रीका परवसमें पड़ियो, ग्यानकला कहो कैसें जगें ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो है, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करे चूंपणी, चरचासें चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नही देखै, दूजाका अवगुण भाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसें नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखै ॥ तीनूंही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फासीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकूं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममे रुंख अंबको, एरंड अंब सरिखो सूझै ॥ पारख नहीं हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझै, गाडर देख कहे मुझ घरमें, कामधेनु इतनी दूझै ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावे ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें आतो, लोभ मांहे लपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीड पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन वचन मुखसें कहतो, अंतर आंठ न खुले हियाकी, पूछ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावे ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुलग ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० १ ॥ गरव गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी हे ॥ कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ छ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काढकर केवल पावै, ज्ञानगरभ गुण भारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रद्धासें सुमती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवे, उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी हे ॥ सरधा शुध्द सदा उपदेशी, भविजनके उपगारी हे ॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सत भंग नय, देश काल आचारी हे ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २॥ नित्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निह्नव अरु पाखंड खंडते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधै, कहे पाठक रूद्दसारी हे॥ करूं२ में० ४॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुंश में उन कुगुरुकुं, कनक कामनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अष्ट करमसें न्यारी हे ॥ तजूं० १ ॥ करी कपाल वभूत लपेटी, शिर पर जटा वधारी हे ॥ कान फाड़कर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजूं० २ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासे, वे मद मांस आहारी हे ॥ कूड़ा पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजूं० ३ ॥ कहूं उगुण कुगुरूका कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप डुबे उरनकूं डूबावे, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजूं० ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीनवै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजूं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास झूठो रे झूठो, येने लेइ लाकड़ी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं भरतो, ग्यान हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही घड़तां, जैसो लकड़को ठुंठो ॥ यो० १ ॥ भणवा गुणवाका गुण नाहिं आया, कोरोही पड़्यो पूठो ॥ गपोड़ा सुणकर लोक पूजता, ए अलग डालको ठूंठो ॥ यो० २ ॥ पंडित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो, साचा नरको संग न करतो, कूड़ कपट नहीं छूटो ॥ यो० ३ ॥ झूठोही बोले झूठोही चाले, कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके, जिनदास सबसु रूठो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आउ घटे तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो कर ले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंडल रवी चंद्रमा, सभी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां झलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागे, डुनिया जाय खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगलकी ॥ हंसा ठांम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥ मनमावत तन चंचलदस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु अंकुश दीया आनके, वातां नई असकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बंधव नाई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सवे कारमी ॥ ए तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ कूड कपट कर माया जोमी, कर वातां बलकी ॥ बोकफकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊपजे नही जिनकूं, वीनती अखेमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन नांत तिरणा॥ हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति को० ह० १ ॥ घोराघोर तरकके नीतर, नानाडुख नरना ॥ मारन तामन बेदन नेदन, डर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक तिरयंच जोनि पायके, गले फास परना ॥ क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर, देख२ फूरना ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरणा ॥ दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके नक्यो, कहुं नांही थिरना ॥ साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून मरुप्पा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप नावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या सुगति मझार ॥ २ ॥ चवदे सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया नवजल पार ॥३॥ (चाल—हीर

रफेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन नायक, मुगती जाणेकी फिगरी दीजियै ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुद्दई बनाहे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका, धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १॥ तप कागद इष्टांम लिया, तलबाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजवून वणाकर, अरजी आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ में जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने आ घेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूंट लिया सब मेरा जी ॥ जि० ३ ॥ बहोत खराब किया करमोंने, चौरासीके मांही ॥ दुख अनंता पाया मेने, अंत पार कबु नांही जी ॥ जि० ४॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वमा चौधरी, उसकूं पूछ मंगावो जी॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥ हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥ जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आये, मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषायरू आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये जी ॥ जि० ८ ॥ (टेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन नायक, झूठा दावा है चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही वहकाया इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब मचाया जी ॥ जि० ए ॥ विषयभोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥ जि० १० ॥ हाजर खडे गवाह हमारे, पूछियै हाल जु सारा ॥ विना लियां करजा चेतनसें, केसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥ (टेर मुद्दीकी) ॥ चेतन कहै सताबी मांही, सुण शासन सिरदार ॥ इमानदार हैं गवाह मारे, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी, करम फरेबी भारी ॥ जीव अनंते राह चलतकूं, लूंट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे० १३ ॥ बरु२ पंमित इन लूंटे, एसा दम वतलाया ॥ धरम कहा अौर पाप कराया, एसा करज चढाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ असल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म एनमें हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ जेद अर्थसें वेद पढाया, हिंसक यज्ञ वताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुफे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म वताया, तपस्या सेती भिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनै, जूग जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभूजी, अपील होण न पावे ॥ इकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनोकों समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी, करमूंका करज वताया जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जव करी जमानत, चेतन डिगरी पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सत् उगणीस अगाई जी, जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम चलाए है ॥ शील है सिरदार और दान है दरोगा जाके, दयारूपी वारण सव श्रावगण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको लग्यो है मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए हे ॥ रोसकी रसूम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इसतयार लटकाये हैं ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जव जीवकी जुवानबंधी, तबके कुछ स्वाल जवाव सतगुरुने वताए हैं ॥ ओंमकार सा-

जी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी भिगरी कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेंने करी हे तुमारे पास, साहब जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयें ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत हे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयें ॥ २ ॥ मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयें ॥ हारुं तो हाजर हजूरीमें रह्या करुं, जीतूं तो लगाय जुगल चरणनमें लीजीयें ॥ अब तो फरियाद नाथ करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीये तो रावरी वडाई हे ॥ मुनसबकी वात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अपील मान अरजी लगाई हे ॥ झूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो मत जैन जाकी ऐन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों भूगावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठेमकार साजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी भिगरी कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति भिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी भारी, देखनकूं आवे नर नारी ॥ अनंता घोडा जर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ ऊंठ पर धजा जो फरराती, धमकसें धरती थरराती (ड्हा–साखी) समुद्रविजयजीका लाडला, नेम जनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन भई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥ कसुंबल वागा अति भारी, काने कुंडल छवि है न्यारी ॥ किलंगी तुररा सुखकारी, माल गलमोतियनकी डारी ॥ (ड्हा–साखी) कानें कुंडल झगमगे, शीश मुगट झलकार ॥ कोडि भानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम० २ ॥ छूट रही जनकी ठरराई, व्याहमें आये वडे भाई ॥ झरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (दुहा–साखी) उग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ वहोत जीव करि एकठा, वाम्यो भ-रयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (दुहा–साखी) याको भोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४॥ पीछेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकर्यो छिन मांही ॥ कहां तूं जावे मेरी जाई, हर वर देरूं सुकताई ॥ (दुहा–साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम ० ५ ॥ सहेल्यां सबही समझावे, हिये राजुलके न-हि आवे ॥ जगत सब झूठो दरसावे, मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ (दुहा–साखी) तोर्या कांकण दोरडा, तोर्या नवसर हार ॥ काजल टींकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्यां सबही बिल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आभूषण रत्न-जडित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, छोडकर चाली निर धारा ॥ (दुहा–साखी) मात पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ झूरति छोडि मा प्यारी॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो छिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन छुडवाई (दुहा–साखि) नेम राजुल गिरनारपें, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

गाई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह दुख भारि

॥ ग० ॥ चौमासा लग्या रस भिना, अलि अषाढ रंग महिना ॥ च्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा किना ॥ दिल होत धमकता सिना, में अबला सखी पति हीना ॥ (झमाना) सररररर चलत समीर, थररररर करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर, बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकुं वि० १ ॥ श्रावणमें श्याम घनघोर, भरजोर बोलते मोर ॥ दादुर मिल करते दोर, पिउ२ पपइया सोर ॥ झर लग्यो वूंद झमझोर, बिच चमके दामनी कोर ॥ (झमावनी) खमममम खघनमाला, तममममम जल परनाला, अममममम नाला खाला, में दुखी हुई बेहाल, हीयेमें साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना, बादलमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर झीणा, ज्युं बाजे मनोहर बीणा ॥ अब एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे दुख दीना ॥ (झमाना) युं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौड जगाई, यूं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोडके प्रीत, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, यादुचंद भये वे पीर॥ उठ चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (झमाना) शिव राजुल नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, भविजन मिल शीश नमाए॥ मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे वंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ झगडा दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोऊं नारीका० ॥ चि० ॥ कहंति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उर कषाय इस्कमें भूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनम२की

तेरा संग लगें खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होता न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत छंदगारीका ॥ ऊगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क भमर हे, इंद्री पांच सवादीका ॥ कर सिणगार कसाय लेलेके राग रंग उनमादीका, मैंहुं मोह रायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नहीं आवेगा वालम वो हे फूल हजारीका ॥ ऊ० २ ॥ सुण रे वैरन बात हमारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो घास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीछे पछतावेगा, आखिर छेह देवेगी वेरण केसें प्रीत निभावेगा ॥ मैं समझावंगी प्रीतम मेरा जो मानें दिलदारीका ॥ ऊ० ३ ॥ कुमता बोली बात सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख दुख दोनुं खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही होणा हे, नही ऊजाला नही अंधेरा शिला सहज बिछोना हे ॥ एसा मेरा भोग भोगके सहे न दुख अणगारीका ॥ ऊ० ४ ॥ कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, टुक इक सोच करो दिल भीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद इसकी बोत कठिन हे समझके बूझके नहिं पड़ना, पहली सुखसें फिर दुख उपजे वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं हे भोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ऊ० ५ ॥ एसे बोल सुणे सुमताके चिदानंद उठके चल्ला, नेणोंमें आंसु भर रोती प्रीतमका पकड्या पल्ला ॥ मत ना छेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके गल्ला, में अबलासें दगा करोगे केसें होय तुमरा भल्ला ॥ मेंहुं दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ऊ० ६ ॥ तजके संग कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिणगार बणाकर

नहि खोले, या दुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहिं बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभणी मुसकल होवे, धन मानव जो प्रीत निभावे तरर अधकी रंगरोले ॥ अरज वीनती करकै राजुल वचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमफोले ॥ (भुमावणी) हेवा चंदकपूर अपूरब ख्याल वणावे, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा भांभ ताल ऋफ ढोल मृदंग वजावे, हेवा आनंद हर्ष वधावे हे जी मन वंछितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वशेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल हद भारी रे, कर श्रीफल भुजबंध भलक छिब प्यारी रे, गल मोतियनको हार बण्यो गुलभारी रे ॥ हारे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वडाई रे, पारस२ नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाण धूलेवा ॥ गढपति भुनका बडा अडंगा, मत छेडो तुम जन देवा ॥ सु० १ ॥ सकतावत चंडावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ हींदुपति वाकूं हाथ जोडे, तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सबही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवे, निर्धनियाकुं धन देवे ॥ बांभ खिलावै सुंदर लडका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवरुका ॥ भूप भुजंग मद र करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धोंसा वाजे, दशो दिशामें है डंका ॥ भाव तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कुमरावकी, मानत नाहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूंछ मरोम चढा अभिमाने, जहर भरा हे निजरूमें ॥ रुषभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद, वरुे सितंवर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर२ घोमां, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ए ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) काश्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्हवरायो ॥ इसो रुषभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खरुगदेशमें नगर धुलेवे, जास दंदामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता हे ॥ ३ ॥ आदो मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, वलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पुजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, श्रा-

पकरम अरु आपकरमकी, भई लमाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-रमके ऊपर नृपनें कुष्टो वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई, करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै मनकंदरपें ॥ ए ॥ (मोतीदाम छंद) तूंहि अरिहंत तूंहि भगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तुंहि भवभंजन भाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन भूप, तुंही अविनासी तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वरूभाग ॥ २ ॥ तूंही गुण-धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरू नाम ॥ तूंही अघ-नाश तंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही गुण केवल रूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय तूंही जग ध्यान, तूंही चिद्रूप तूंही भगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम तात तूंही मम मात, तूंही मम भ्रात तूंही मम गात ॥ तूंही सरणागत राखणहार, तूंही छुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुऊ शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो छुख मोसें सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग निवारण, गुण कीजे जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष प्रसन्न हुय फल बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास भई मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरू, नृप श्रीपाल सोहानत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल,

प्रगट प्रबल है जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देश२में प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागडदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रभु करुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल भूतल ऋद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान भयो तव, पातस्याह लस्वा आयो ॥ वूत भूत पत्थरकी मूरत, जडमुल्लासें जखरायो ॥ ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, थाको यों वाचा बोले ॥ देव हिंदको वडो जागतो, यूं बोलत फिर२ डोले ॥ ए ॥ सुनो वात काजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निजरे, देव सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब भये महाबल, शस्त्र झकोझक विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करणे लगे, घाव चोरासी अंग ॥ करी मलेखा गाडली, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥ (चाल लावणी ॥) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रभु धरती ॥ गाय एक कोडी वनियनकी, आइ वाहां चरती२ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांझ समें फिर नही दूजे ॥ रीस करी तव गोपालन पर, गोपाल थरहर धूजे ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो, लह्यो भेद कह्यों वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित भयो है तन मनपें ॥ २ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषभनाथकी मूरत है ॥ बहिर निकासो करो लापसी, भीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चले ॥ केइ लोककूं डुकर वाधा, कव प्रभुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ२ महाराजकी मूरत, संघ सबे लीनो आडो ॥ ७ ॥ जबरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंतर२ भर व्रण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥ ॥ ७ ॥ फिर सुपनेमें इव्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥ मध्य विराजे ऋषभ तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ए ॥ (दूहा) संवत अढारे तेसठे, भाऊ सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो डुष्टने, भाखूं वरण बताय ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद ॥) सदाशिव राय चिंते मन एह, लूंटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ भिल्लां पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग इव्य भंमार सुणाय ॥ १ ॥ जावां अब लूंटण गाम धुलेव, ग्रहुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २ ॥ कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, ऊंठ भर साथ लिया कोकवाण ॥ तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥ ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव भूप, ग्रहां सब माल अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट करूर, कीयो नज राणह नाथ हजुर ॥ राख्यो नही नाथ तवे नजराण, भयो मन चक्कितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत भंमारी बुलाय, मीठे वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मऊार, कियो तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार२, भंमारी सबे इ पुकार२ ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज गरीब निबाज ॥ चढो अब वाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ (दुहा) भण समें कोउ सेवको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्ठायक नाथजी, भेरु गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी सहेर धुलेव मऊार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संभाल ॥ दो घोमे दोनुं चढे, भेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ भिल्ल कोप आपे कियो, द-

श दिशि फौज हजार ॥ मार२ चो तरफतें, भई लराई ह्यार ॥ ४ ॥ (भुजंग प्रयात छंद) कूकू कुकू कुकू वहे कोकवाणं, सणं सणसे तीर तरकस्स वाणं ॥ धुंवाके धमाके वहे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नयनभोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शस्त्ररा घाव लागे, किते मारतें कंपते दूर भागे ॥ किते दंतपे तिरण लेवे वराका, किते थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुल्लाइ-लल्ला पुकारे, किते दीन होके खुदापे संभारे ॥ किते नाथपे केसरा खून माणे, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणे ॥ ३ ॥ सदाशिवनें घाव लागो अठारो, पुनी भाउ जसवंत दोनुं संहारो ॥ वनो कोप जाणी सबे फोज भाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी॥४॥ सदाशिवने आखमी अटक लीनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो ॥ इसो नाथ धूलेवरो महैगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥५॥ (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, तारचा केई जिनराज ॥ दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंछित वंछित ऋद्ध॥ तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥ तूंही कामकुंभ तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥ तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वरू सेव ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इछित दायक नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम ऋद्ध भंमार अगाह ॥ ४ ॥ तूंहि मम मंत्र तूंहि मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम तंत्र ॥ तूंही गच्छनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्य तूंही जग-पूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश२ नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे दुहाई नाथनकी ॥ दिंड

मूसल वम्म राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे नित समरे, अखय खजाना भ्भर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गम्गम्म दौ गम्गम्म दौ गम्गम्म, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर, भीमसिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषे, फागुण सुदि तेरश दिवसे ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो ज्लसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, भरण पोष पावन करन ॥ जुगलधर्म नीती हरन, सब करम बंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद चंद पदजुगल सेवन, जगत विरुद तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, रुषभनाथ असरनशरन ॥ १ ॥ रुषभनाथ महाराज, सबे डुख दालिद भंजन ॥ ऋषभनाथ महाराज, सबे भूप मनरंजन ॥ ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, समरथो बाहर धाये, ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, घननं घननं वाजे घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरुआ गाज जल मूसलधारा, धरम्म धरम्म काजन शंका ॥ आ० २ ॥ अररर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तब, जमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

जब पद्मावती सब सिणगारे, तायेइ नाचत ले फिरका ॥ धमकर धौं मादल वाजत, घननं घुंघरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत वाजे, धौं धौंकट डुंडुभि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करे जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब, रूफ मौं मौं करते रूंका, फेरण फेरणके रूनकारे, रूागरूदी रूालरके रूंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद्र सब जै जै करते, जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो सुख, को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥ घमा एकसो आठ शेलमी, रस भरिया है नीका ॥ उलटभाव श्रेयांश वहिरावे, मांमू दिवीआहूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंदुभी वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ वारे माससूं कियो पारणो, गई भूप सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ डुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी नानु कहता, रुषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा शरण, वली डुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुरू केमे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, छेक वंछेमे

॥ आ मुजरो मुझ भगवान, करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी ॥ धा० ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या छे पाप, सुणजो आप, करुं करजोडी ॥ क० ॥ मुझ भूंडामां भगवान, भूल नही थोडी ॥ जो वहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ जूठूं बहु बोली, साचने सुं हरवुं ॥ तुझ खोलामां मुझ शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म, धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो अइ मारी आण में ज उत्थापी ॥ में मुरख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हरखायो ॥ क० ॥ परदारा देखी लबाड, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केशव लाल, आणीनें व्हाल, दुःख तुं हरजी ॥ दु० सेवक० ३ इति पदं ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे ॥ समुद्रविजै सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक तीनों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ वहोत हरांसुं ब्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ षट्पंचाश कुल कोटि प्रमाणे, जादव भनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब बरात बणायके रे, उग्रशेन दरबार ॥ आए प्रभुजी हरखसूं रे, चढगये गिरनार ॥ मो० ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ बिन अव गुण बोझो मती रे, कोइ नही छे दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद षष्ठी दिने रे, इंद चंद परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने रे, करम दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदकू रे, चैत्र शुकल शुभ वार ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो० ६ ॥ राजुल पहली नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निभाई जुगतसुं रे, रुद्धसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक पोथी अरु पदमनी, नहि दीजै पर हत्थ, वा

विगमे पंमित विना, वा विगमे पर सत्र ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजो प्रजाते चाली रे ॥ आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुनें, मोतीमे थाल पुरावो ॥ नार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ २॥ धन धूजे धनतेरस दिवसे, काले चव दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजे, कर्म मेलो सब टाली रे ॥ आ० ३ ॥ अमावसकी परव दिवाली, फरती फाकफमाली, घर२ तो दीवलिया फलके, रात दीसे अजुवाली रे ॥ आ० ४ ॥ अम्मा वशकी पिछली राते, आठ करम सब टाली, श्रीमहावीर निरवाणे पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ५ ॥ पमिवाने दिन जुहा रपटोला, एं रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीफ पामी रहियाली रे ॥ आ० ६ ॥ बीजे तो वली जावमबीजरू, वे नरूली अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होया रे पनोता, एवेर ह रखे गाई रे ॥ आ० ७ ॥ हरख विजय पंमित इम बोलें, करो स हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंमित गुण गावै, जय२ बाजे ताली रे ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे थई आज, प्रजुमुख जोवाने, सरयार रे सेवकना काज, जवडुःख खो वाने १ ॥ महावीरस्वामी मुगते पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रजु निरवाण ॥ जिन मु० २ ॥ चारित्र पाल्या निर्मलानें, टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एह वा प्रजुने वांदियेतो, उतारे जव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला वहोरया वीरजीने, तारी चंदनवाल रे ॥ केवल लइ प्रजु मुक्ते पो हता, पाम्या जवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिनें वांदिये जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रजु ता

रया नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाल ॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रजु आलस अंग हुलसाई, पूछे मरूदेवा माई ॥ पो० १॥ प्रजु नंदा सुमंगला राणी, उन रुच२ सेज बिछाणी ॥ पो० २ ॥ प्रजु नवलसु नेह सनेहा, प्रजु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अजर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥ पहिले मंगल प्रजुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मंगल प्रजुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥ प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रुषज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल पगला प्रजु जेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥ चोमुख बिंब मनोहर अदजुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलनायक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत उख सहु वारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥

मात चक्केसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ दुष्ट निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ न० सि० ॥ ४ ॥ खरतर गछ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गुण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । न० सि० ५ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन मन हर्ष धरीने, लात्र करी जयकारा रे ॥ न०सि०६॥धर्मशील पदपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पसाये गिरवरना गुण, पन्नणे मुनि रूपसारा रे ॥ न० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले जारी ॥ प्रथम पद तीर्थपती राजे, दोष अष्टादशकूं त्याजे ॥ आठ प्रातीहारज छाजे, जगत प्रनु गुण बारे साजे ॥ (दोहा—साखी) अष्ट करम-दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनंता नजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रगट नयो निज स्वरूप जारी ॥ ज० १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद सूरज जेशी ॥ उगारयो राजा परदेशी, एक नव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा—साखी) चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद जारी ॥ ज० २ ॥ द्रव्य षट्की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावे ॥ विना यह ग्यान नहीं किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ (दुहा—साखी) ज्ञान पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें, निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर ओमी सब राणी ॥ यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ (दुहा—साखी) करम निकाचित कापवा, तप कुगर कर ध्याय ॥ क्षमा युत नव-

भा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ नजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र नजो नाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, नाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा-साखी) संवत नगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुज आश ॥ बाल कहे नवपद नवि प्यारो ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल ईडरनाकी॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जेसा जगसें तारण, मिलणा नही असान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ट नगंदर राजरोग सब, नूत प्रेत नल नाश ॥ नवपद जैसा निरनय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहे, अर्ह पद अरिहंत॥ सिद्ध सूरि नवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगे, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग बरणूं, मेंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत नजमाल ॥ सुरनर नूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्केसरि मात ॥ नगव विविध करे मन शुद्धसें, त्रिनुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जय२ श्रीरुद्धसार ॥ ९॥ इति पदं ॥ पुनः॥ (रथ चढ जडुनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तन्त्कांति प्रन्न, मदन चंद नवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासें, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर छाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, भ्रांति अरुज सब भाजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकलें, जग दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी वालूचर, अंतरंग अरि दाझत हे ॥ शंकर बुद्धदेव तुम ध्यावे, गोविंद चरण भाजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति उपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम जरी नामकी, लखमी लोल पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजे कुशल निधान भक्तिभर, रुद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वसेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि भक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥ धनर आज दिवशकी महिमा, जोवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसें अरु ताळीश शुभ दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्टा सारो, कुशल निधी कहे रुद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं गांफ चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी भास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, झरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुषनकी, हिलमिल भमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत भरी पिचकारी, षेलूं प्रभूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो छतियनपें, ऋद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा ऋषभ गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें भई उदासा, प्रभु ऋषभ गये वनवासा ॥ (दूहा–साखी) ऋषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ भरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी झिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ भरतादिक जी सौ पूत्रनके झरसें, मेरा नंद निकल गया घरसें ॥ (दूहा–साखी) नगर अयोध्या युं झुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंभा भरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ भादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ भरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ (दूहा–साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै भोगविलाश ॥ सब माया या रुपभकी, छोड गया वनवास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आसू महीने जी सूरतकी छिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके सब लोभी जो पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो बडभागी ॥ (दूहा–साखी) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद्र पद सेवे जी नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो रुपभ घर आवै, मोहे नेणा आण बतावे ॥ नही कागद जी मुझकूं पूत्र पठावे, मेरा जीव बहोत दुख पावे ॥ (दूहा–साखी) झुरती निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती रुपभसें, जो देत विधाता पांख॥मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे॥ मे० ५ ॥ मिंगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे लडाई ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढकर आई ॥ (दूहा–साखी) बारा वरस लडते भये, इंद्र दिये समझाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, भये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा जी रुपभ जगत प्रतिपाला, मैं रटुं रुपभकी माला ॥ (दूहा–साखी) कोइ परवतकी कंदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै बहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें॥ मे० ७॥ माहका महीना जी किसैं कहूं दुख मेरा, सब पूत्र बिना अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुपभका वेरा ॥ (दूहा–साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥ राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भरतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यूं करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा—साखी) भरत विविध तर भांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक ज्यानेक, दीवी वधाइ आय ॥ प्रभू पनधारे जी सेवित है मुनिजनमें ॥ मे० ए॥ चैतका महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ (दोहा—साखी) इंद्रध्वज आगे चले, भामंमल है लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, डुंडुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा मन हरखै, जब रुषभप्रभू मुख निरखै॥ नैणपट उघम्या जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा—साखी) गज ऊपर मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी हुई, एसें रु-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेवका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रुषभ चरण लई छाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं है सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ (दूहा—साखी) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित दुख धंद ॥ है जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूबरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोह व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई सब मंगल गाये ॥ संग है राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी—मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन वीच पीया इंदर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोबन

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकूं छिटकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही लागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, केसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग झीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या न्नासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग न्नोगी सो कामणा, लगी तुमें प्यारी॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि०५॥ पोश पीया उलंन्ना देती हिये नहीं धारो, नहीं छोडूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर मारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी—मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी ठंड वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मुझकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण न्नांजै, नहीं वरुन कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजे ॥ पिया विन करुं में गति काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, में अवला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग में खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥ कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करे, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद परे ॥ प्रीत जिन नव न्नवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोरी ॥ नेम विन हो रही उदासी—मो० ए॥ माश

वैशाख आंख यूं ज्ञलकै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुला-री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद चंद शेवित पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी—मो० १० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजे कंत बुरी, नही रैण सुख चैन शखीरी चल रही प्रेमछुरी ॥ पाप कोइ पूरव ज्ञदे आया, जोरू घलै घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब घरकी फासी—मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम चरण ज्ञेव्या, धर करणी ज्ञव तिरणी होकर धंद सज्जी मेव्या ॥ प्रीत तुम अजर अमर राखी, ऋद्धसार आधार तुमारो प्रेम शिवा शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी—मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलाजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अज्जिन तोत्तम ज्ञक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज सुंदर सद्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकश्वरं ॥ अति सुवर्ण सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय ज्ञक्तिज्ञविनां ज्ञवेज्ञवे, ज्ञवेदज्ञीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदा-त्म समुद्भवो जिनः, समर्च्चनीयः खलु शीतलः प्रज्ञु ॥ ३ ॥ कर्मा ज्ञितप्तान् ज्ञवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो ज्ञवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥ ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्त्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्त्तिः, जयतु गत ज्ञवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित डुरित राशि

विंश्च विश्वाधदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो कुमेती नाम गम्यो, जयं तु जिनपंतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य नृंगीव पद्मा ॥ अवि कृतमति कायोत्सर्ग मुद्रान्वितोसौ, जगति वहुमतोस्मान् पातु वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फणानां सहस्रं, बहुल विमल नास्वद्भूषणोन्नासि गात्रः ॥ गुरुतर वर नक्त्या सक्त चित्ताङ्गनाजां, नवतु शिव समृद्ध्यै चाश्वसे निर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुश्यातंक शंका पहर्त्ता ॥ विकशित्त मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु नुजग लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेंद्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, र्दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्पार्श्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजे, र्यधस्या नघा गुणाः॥ स्मर्यंते येन सस्मार्यो, नवेत् प्राचीन वर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यतामकुयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन, येन कल्पद्रुमा अपि ॥ नवेदभ्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लान्न प्रदायकः ॥ कल्याण कारको नूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥ यक्षेश पार्श्वं शित पाद पार्श्वं॥ नुवामी पार्श्वं नवनेद पार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसी सून सम प्रनावा, सम प्रनावा नवदीय मूर्त्तिः ॥ विनाति वामां प्रनव त्रिलोके, नव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥ तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता नवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष भूवर्षित दान वारि, र्यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारी, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव, सुज्ञान सुज्ञानभिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णभूयः, कल्याण कल्याण करं गभाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोभिरामैः सुमनोभिरामै ॥ कर्माभिधे रुझित भूघनास्ते, विसारि लोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम धामान्वितं, पादाब्जं परभाग भृत् त्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्म विपक्ष पक्ष दलने भव्या भवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्ति माप्तु मखिलंतीर्त्वा भवाम्भोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंदः ॥ गौमीग्रामे स्तंभने चारु तीर्थे, जीरावल्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामादेव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे भूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥ २ ॥ भित्वा भेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्भाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तोत्र ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनयना घननाद विभाजितं ॥ भजत भक्ति भरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विविध वर्ण विभूषित विग्रहाः, विहित दुर्दम दर्पक निग्रहाः ॥

षसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रनवंतु शिवंकरा ॥२॥ रु.चरवर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रजिवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल नव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन- वरानन पद्म गतोन्मुदा, नवंतु वाग्जिनलाज शुजार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिनं स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजोनिधेः, संज्ञा- वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भुत प्रतिबिंब तस्तु- सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसा तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो जव्यावजंतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि दुष्टजंतुनिवहै र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा हृश्यो- नकेपांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणप्रुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा- वितां, धृत्वानिर्मलजावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्वता ॥ लभ्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीऋषजस्ततोजितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थसत् ॥ सुश्रीमानजिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रजः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा र्श्वे, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रजः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री शीतलसौम्यदृक् ॥ १॥ श्रेयांशप्रजुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांतिःकुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हत्तोनमिनेमिशुद्ध मुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रजुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, र्निःशेषो- पमजव्यजंतुहृदयांजोजप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवंद्यविशदश्चो

कन्नजानिर्न्नय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेंदव-प्रवचनांभोधींऽथवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्म्मःसूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्र्यालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिना धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोयेच क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशै लेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा बिनयःप्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनाम रगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता, जंबुशाल्मलिचैत्यशाखिषुतथावक्षाररूप्या दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंडलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भावतरोजयत्यर्हतांजन्माभि-षेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचभवो यःकेवलज्ञानभाक् ॥ यःकै-वल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचौषधिऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि बलिनोयेबुद्धीऋद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका-श्चजनकायक्षाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकव्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्देपिमहोत्सवेपिस-तत श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृण्वंतिपठंतितैश्चमनुजै र्द्धर्मार्थकामा न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति मंगलाष्टकं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥ न अंगं नसंगं नश्चा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नन्नोगं नव्याधि नशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोन्नं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघाणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्रं ननिश, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नचिंता, नक्षुद्र नन्नीतं नकृष्यं नतुंद्रा ॥ नस्वामी नन्नृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि०४॥ त्रिदंने त्रिखंने हरे विश्वव्यापं, रुपीकेश विद्धंस कर्म्मारिजालं ॥ नपुण्यं नपापं नअक्षानमाणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्धि नमूढा, नछेद्यं नन्नेद्यं नमूर्तिर्नमीहा॥नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नड्व्यं नक्षेत्र नदृष्टो नन्नव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआयो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो न्निन्निसं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेन्नूतगतागते सुख फुख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवंश हर्षे हृदयं श्रीमानन्नूदर्च्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्र ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्टति चिरंपापं, छिड़ हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ वोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाय विनाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेन्नक्ति२, जिनेन्नक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु२, सदामेस्तु न्नवे२ ॥ ५ ॥ नहित्राता२, नहित्राता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नन्नूतो नन्नविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रन्नं ॥ नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्म्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ए ॥ लोकोत्तमा इहार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हंतः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्म शरण मर्हतां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगछ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिन्नुवनपति त्रिसलातणो, नंदन गुण गंन्नीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान महावीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥ न्नविक जीवना हित न्नणी, पूछै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मारग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, न्नाखे श्रीन्नगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयैं, व्रत धरीये गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसरावियें, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुन्न करणी अनुमोदियै, न्ना
व न्नलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु
जाण ॥ ७ ॥ शुन्नगति आराधनतणा, ए छै दश अधिकार ॥ चि
त्त आणीने आदरो, जिम पामो न्नव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥
ए छिंन्डी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशण चारित्र तपः
वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह न्नव पर न्नवना, आलोइये
अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी
रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु उलविये नही गुरु विनयें, काले धरी बहु
मान ॥ सूत्र अर्थ तदुन्नय करी सूधा, न्नणिये वही उपधान रे ॥
प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह
तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥
३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव प
र न्नव. वलिय न्नवोन्नव, मिछाडुक्कम तेहरे ॥ प्रा० समकितः
ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत
अन्निलाप ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥
प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा
हमीने धर्मे करि थिरता, न्नगति प्रन्नावना करिये रे ॥ प्रा० स०
६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे
वको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-
त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ न्नव प०,
मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण
गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध
वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ श्रावकने धर्में सामायक, पो
सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली
रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र महोल्युं

जेह ॥ आन्नव०, मिच्छा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे न्नेदे तप नवि कीधो, छते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं न्नगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्या जेह ॥ आन्नव०, मिच्छामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर वचन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रें ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल २) पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करी करसण आरंन्न, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥ घर आरंन्न अनेक, टांका न्नोयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥ लींपण गूंपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, ऊीलण अप्पकाय, छोती धोती कर दूहव्या ए ॥ न्नाठीगर कुंन्नार, लोह सोवनगरा, न्नामन्नूंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इणि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधियाए ॥ ४ ॥ वामी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंहक पापमि शाक, सेक्या सूकव्या, छेद्या ढूंद्या आथिया ए ॥ ५ ॥ अलशीने एरंम, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू मांहि, पीली सेलमी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकेंडी जीव, हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आन्नव परन्नव जेह, वलिय न्नवोन्नव, ते मुऊ मिच्छामिछुक्कमं ए ॥ ७ ॥ क्रमी सरमिया कीमा, गामर गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥ वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उद्देही जूं लीख, मांकम मंकोमा, चांचम कीमी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहिया घीवेल, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिछा० ॥ १० ॥ माखी मछर मास, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण विछु तीम, भमरा भमरीय, कौंता वग खमभांकमी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या; वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीमया पंखी जीव, पामी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे में दू०, ते मुऊ० ॥ १३ ॥ (ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल) क्रोध लोभ भय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥ कूम करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिछामि डुक्कम आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव२ मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी भोजन जे कर्यां जी, कीधा भक्ष अभक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई चीसारीया जी, वलि भांग्या पच्चखाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥) पंच महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया संभारीयें, सा० ॥ हीयमे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमाविये सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राखवो तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥ कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमाविये, सा० ॥ जे उप नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज धर्म नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूडा न दीजै आल तो ॥ रती अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-विध२ वोसराविये, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर-णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वले ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घड्या घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भव२ मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जन-मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

पच्चव जे कर्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसिं रावियें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुःकृत निंदा इम करी ए, पाप कर्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ७मी ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाळ्या डुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थ नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पमिक्कमणा सुपेरे कर्या, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवज्झायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयें, चित्त आ णी ठाम ॥ समता जावे जावियें, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख डुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या, जोगवियें सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणूं, ऊखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव जली परें जावियें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरें ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चखी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी गंमी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आ हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीउ रंक ॥ डुलहो ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिजद्र खंधो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्ये करी एक अवतार, आराधन केरो

॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणी कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जरकाय जरकदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासिं, जस पऽहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिछंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ छविहआवस्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसुपोसहवयं, दाणंशीलं तवोअभावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणिणं, गुरुथुअसाहम्मिआणवछलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईछजीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोचरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणंपभावणा तित्थे ॥ सढाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोम, जिनवर नामे मंगल कोम ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अम लख धार, पांचमें वांदूं लाखज च्यार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्राशाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरभुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पचास ऊंचा बहोत्तर धार ॥ ५॥ एकसो असी बिंब परिमाण, सभा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम बावन कोम संभाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर साठ विसाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहोत्तर लाख, भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि, साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर वंदू तेह ॥ रुषभा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-शेण ॥ १०॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढगिरनार, आबू उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-काणो पाश, जीरावलो ने थंभणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे भव-सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयी-शान, मार्हत्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिज-गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषभस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लान-
केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्या-
तुल्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवान
भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्कीरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥
भगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह,
भासःपुष्णंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
भोगभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
र्मुर्त्तिसितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेस्तुवः॥११॥
सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातुवोजिन ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-
श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत,
तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः॥१४॥
विमलस्वामिनोवाचः, कतककोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मातमःशांत्यै,
शांतिनाथजिनोस्तुवः॥१८॥श्रीकुंथुनाथोभगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-
भिः॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तुभ
गवां, श्चतुर्थारनभोरविः॥श्चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं॥कर्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमभि
ष्टुमः॥२१॥जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुंठतोनमतांमूध्नि, निर्मलीकारकारिणं ॥
वारिप्लवाइवनमेः, पांतुपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः,
कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥
॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्म्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो
वृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा
याद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृता
पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिनने
त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्री
मान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥
वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वक
र्मनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वी
रस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रंदिशः ॥
॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्य
वैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां
भावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्त-
पालग, निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,
संतिसामि पायाणं ॥ झौंस्वाहा मंतेणं, सव्वाशिवदुरिअहरणाणं
। २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धियत्ताणं ॥ सोंह्रींनमो
सव्वोसहि, पत्ताणंचदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-
देवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्खंतुजि-
णभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ व-
ज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-
धारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्छुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउ, बंन्नोमणुउसुरकुमारो ॥७॥ छम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधव्वतहयजरिकंदो ॥ कुबेरवरुणोभिउमी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआउरिआरि कालीमहाकाली ॥ अच्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवच्छा ॥९॥ चंमाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअच्चुआधरणी ॥ वइरुट्टछु- त्तगंधारी, अंबपउमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरखणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरखंसयाअ म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठ्ठिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मझविकरेउरखं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना हसम्मदिठ्ठी, रखंसरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्दवरहिओ, सलहइसुह संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंभणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुरकलवई विज यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, नविथणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रनु जनमिया, वली योवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारना, संजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नांण ॥ वृषन लंछने शोनता, सर्व नावना जाण॥६॥ चौराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण नुवनमां जोअतां, नहि कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रनुजीनो

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ छवंय पेढाल जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ९॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं तादरो, नहीं मेलूं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंमी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुफने घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुफ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोमि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमे अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वरया रंगे, नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंमण, दुःख विहंमण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योतिर्नेपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रण्य भुवन ना नायक छे, जस चोसठ इंदर पायक छे, नाण दरशण जेहना क्षायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छे, जश धोरी लंछन पाया छे, पुंडरीगणी नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि विराजे छे, जश चोत्रीश अतिशय गाजे छे, गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छे, रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसिओ छूं, महा मोहराय कर फसियो छूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे, तव कांइक मुझथी डरियो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखडियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाडो रे, लागे मुनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा हो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो, वाला० देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां, वा० मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहे आज म्हारे पोते, श्री आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंडली, तिहां दीपे उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ करया, जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

देखीने रे, जोम करी जालोर मझार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू ऋषभ जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वरूं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारकगिरि ऊपरे, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजिये ॥ मुझ परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥ ॥ ५ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें, हुआ बहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे ॥ त्रिकरणसुं त्रिहु

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहा, काशकुशम नपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे नगवान॥६॥ पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच माशनी, पंचमी करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, कानसग्ग लोगस्स केरो, ऊजमणूं करो नावशुं ए, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति पंचमी चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण वदि आठमें, संन्नव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या रूषन्नजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करया दूर ॥ अन्निनंदन चोथा प्रन्नू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगन्नाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिने, चविया

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखो ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरियै परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगच्छ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-भदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंता जिनवर, फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य २ वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवभव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी, कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणा, एकशो ने पच्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये भव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मया, हृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रभा धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्धमानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसांपयोधरभर, प्रस्पर्द्धिभिःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥ चित्रंबव्हर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतंव्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढोदिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुभूति र्दिशतुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतितउ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदु गोखीर तुसारवन्ना, सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहाय सा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम चंद वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंश, कुलमांहे जिम ऋषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमावंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्मप्रभ सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयास सेवो वहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांती, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथे बोलै, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुपभ्र कहे सुणो भर तराय, वहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै, भववीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख नें चकेसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुपभ्रदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीसा विराजे रत्नना दीवा दीपे जी ॥ कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना अक्षत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी बोले मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन भरी रे कचोली कस्तूरी वराश जी, पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचेंदिय संवरणो, तह नव विह वंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहिं गुरूमझ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइअ सुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिउकए, समणो इवसावन्नहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधें पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना दश वचनना बारे कायाना एवं बत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवडिंसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइन्नयवं, दढव्वयंतमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधें पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह न्नगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरस्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगन्नाव वियस्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मन्नूमिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरं त लप्नई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंतुंजि उजिंत पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, न्नरुअच्छहि मुणिसुव्वय ॥ महुरिपसा

छइ उरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लरका ठपन्न अठ कोमीउ, वत्तीसय वासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लरक अरुवन्ना ॥ ठत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुन्नय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निवि त्ति गिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥४॥ वारसविहंमिवि तवे, अप्रिंतर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ काय किलेसो संली णया य, वज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सझाउ ॥ ऊाणं उस्सग्गोविय, अप्रिंतर उ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ वल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त मा उत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाषितं, दिनागमे नौमिबुधैर्नमस्कृतं ॥ ३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानी स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं० सुअ देवया नगवई, नाणावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेऊ सययं, जेसिं सुअसायरे नत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहएहिं ॥ साहंति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम ऊंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी जग्या पूंजी कटासण ऊपर बेशी मुंहपत्ती डावा हाथमां मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही इछामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नछउससिएणं कहे, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करे (पारी) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इछाकारेण संदिस्सह नगवन् सामायक मुंहपत्ती पडिलेहुं इछं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचास बोल कही मुंहपत्ती पडिलेहीए पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह नगवन् सामायक संदिस्साउं इछं । वली खमासमण देई इछा० सामायकठाउं इछं । एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी इछाकार नगवन् पसाय करी सामायकदंडक उच्चरावोजी, पछी गुरु प्रमुख वडेल करेमिन्नंते कहे, पछी खमासमण देई इछा० बेसणो संदिसाउं । खमा० इछा० बेसणोठाउं, खमा० इछा० सिज्झाय, संदिस्साउं खमा० इछा० सिज्झाय करूं इछं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पछी बे घडी सज्झाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पमिकम्याथी (यावत्) लो गस्स सूधी कही खमा० इछा० मुंहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंह पत्ती पमिलेही खमासमण देई इछा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इछा० सामायकपारयुं तहत्ती कही पछी ज मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव कार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पछी पाणी वावरयुं होय तो मुहपत्ती पमिलेहवी अने आहार वावरयो होय तो वांदणा बे देवां, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पछी यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं, पछी खमासमण देई इछा० कही वमेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन कहवुं, पछी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही ऊना थईने अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० क हीनें प्रथम थुंई कहवी, पछी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पछी पुक्करवरदी० कही सुअस्सजगवउ करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थू० कही एक नवका रनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पछी बेसीनें नमोत्थुणं कहे, पछी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः प्रते थोजवंदन करीये. पछी इछाकारेण० दैवसिक प्रतिक्रमणठाउं एम कही जमणोहाथ चरवला अथवा कटा-

मणा ऊपर आपीने इछं सव्वस्सवि देवसिय० कहेवुं; पछी ऊन्ना थई करेमिभ्नंते इछामिठामिकाउसग्गं जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कहीने अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो, आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो. ते काउसग्ग पारीनें लोगस्स कहेवुं, पछी बेसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे देवा, पछी ऊन्ना थईने इछाकारेण० देवसियं आलोउं इछं आलोएमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा. पछी अढार पापस्थानकआलोइये, सव्वस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीनें एक नवकार गणी करेमिभ्नंते इछामिठामिपडिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवुं पछी वांदणा बे देवा, पछी अप्नुठिउमिअप्भिंतर देवसिअं खामीनें वांदणा बे देवा, पछी ऊन्ना थई आयरियउवझाए कहीने करेमिभ्नंते० इछामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने पुक्करवरदी० सुअस्सभ्नगवउ करेमिकाउसग्गं० वंदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं० कही सुयदेवयाए करेमिकाउसग्गं अनछु० कही एक नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुष सुयदेवयानी पहली थुई कहवी अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पछी खेत्रदेवतानी बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पछी १ नवकार प्रगट गुणी बेसीने छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीनें बे वांदणा दीजे, पछी सामायक चउवीसछो वंदनक पडिकमणुं काउस्सग्ग अने पच्चरकाण करूंछुंजी एम ए छए आवश्यक संन्नारवा. पछी इछामो अणुसठिं नमोखमासमणाणं० कही नमोर्हत् कही पुरुष



नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण थुई कहे पछी नमोत्थुणं कही स्तवन कहवुं, पछी वरकनक कही भगवान आदे वांदवा, पछे जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अढाइज्जेसु कहेवुं, पछी देवसिअपायच्छित्तनो काउसग्ग च्यार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो करवो, काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसीने खमासमण देई इच्छा० सिझायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई इच्छा० सिझायकरूं एम सिझायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिझाय कहवी, पछी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःक्खक्खयकम्मक्खयनो काउसग्ग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वडेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे, पछी इरियावही० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी चउक्कसाय० नमोत्थुणं० कही जावंति बे कहीने उवसग्गहरं० जयवीयराय कही मुंहपत्ती पडिलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० सामायकपारुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० सामायकपार्युं तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवुं, पछी आपेली थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पछी इच्छामि० इच्छाका० कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहवो, पछी खमासमण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सूधी कहेवुं, पछी

च्यार खमासमणपूर्वक भगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधू प्रत्येके वांदवा, पछी खमासमण बे देई सज्झायनो आदेश मांगी एक नवकार भणीने भरहेसरनी सज्झाय कहीने फरी १ नवकार गणवो, पछी इछकारसुहराईनो पाठ कहवो, पछी इछाका० राईपडिक्कमणेठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर थापीने पछी इछं सवस्सविराईय दुच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिभंते कही इछामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सवलोएअरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, पछी पुस्करवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गाथानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सिद्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा तिहांथी लेनें अब्भुठ्ठिमिखामी वांदणा बे दीजे तिहां सूधी देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे राईयं कहेवुं, पछी आयरियउवझाए० करेमिभंते० इछामिठामि० तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवडे तो च्यार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कही छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा, पछी सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं, पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमण काउसग्ग पच्चरकाण करयुं छेजी, एम छ आवश्यक संभारवा, पछी पच्चरकाण करवुं होयतो करवुं छेजो अने धारवुं होयतो धारवुं छेजी, एम कहवुं, पछी इछामोअणुसहिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्० कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पछी लोगस्स० पुरकरवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही जगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अढाइज्जेसु कहेवुं पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवीराय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमासणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउसग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधियें सामायक पारवुं इति ॥

॥ अथ पक्खी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हत्नुं कहेवुं अने थोयो स्नातस्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह जगवान् देवसियं आलोइयंपडिक्कंता इच्छा० पक्खियमुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेहीये, पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाकारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्भुठ्ठिओहं अभ्भिंतर पक्खियंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पक्खिअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपक्खिउअइयारोकउ कही इच्छा० पक्खी अतीचार आलोऊं. एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितमूलबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ सवस्सविपक्खिअ दुच्चिंतिअ दुप्भासिय दुच्चिठ्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ इछाकारिजगवन् पसाउ करी पक्खी तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पवाश बेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठबेआसणा बेहजार सज्झाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करचो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीयै पछी वांदणा बे दीजै, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अब्भुठिन्तहं अभिंन्तर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पछी वांदणा बे दीजै पछी देवसियआलोइयपडिक्कंता इच्छाका० भगवन् पक्खियंपडिक्कमुं सम्मपडि क्कमामि इच्छं एम कही करेमिभंतेसामाइयं० कही इच्छामिपडिक्क मिउं जोमेपक्खिउ० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० प क्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा बेसी जमणोढींचण ऊभो राखी एक नवकार गणी क रेमिभंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिभंते इ च्छामिठामिकाउसग्ग जोमेपक्खिउ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थू० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल यरा सूधी कहवा अथवा अडतालीस नवकारनो काउसग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाका० समात्तिखामणेणं अब्भुठिन्तहं अभिंतर० पक्खिअंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमा सण देई इच्छाका० कही पक्खीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पछी देवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कह्या पछी बे वां दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्झायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोहटी

शांति कहेवी ॥ इति पक्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, चार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पक्खीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छेठ्ठं वे उपवास च्यार आंविल छनीवी आठ एकाशणा शोल वेआसणा च्यारहजारसझाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पक्खीना चार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंविल नवनीवी बारएकाशण चोवीश वेआसणा अने छहज्जार सिझाय ए रीते कहवुं अने पक्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिकमवी. थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे वैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढी जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण चार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधी ॥

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति जल्लट घरे जी ॥ १४ ॥ जिनपुजा गुरुन्नक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, न्नक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ न्नूपनो रे, सिद्धारथ न्नगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, न्नाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ न्नवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान न्नक्ति करो ॥ एआंकणी ॥ गुण अनंत आतमतणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वमुं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ न्न० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्झाय रे ॥ न्न० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ न्न० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासोरे ॥ न्न० ५ ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निधान रे ॥ न्न० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ न्न० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, न्नणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबमा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ न्न० ८ ॥ न्नणतां गुणतां न आवमे रे, न मले वल्लन्न चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ न्न० ए ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ न्न० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्वीपना भरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें भणवा मूंकियो रे, आठ वरस जब हुंत रे ॥ प्रा० २ ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ डुर्नग पण परणे नही रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्मदेशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ए ॥ ज्ञान विराधन परन्नवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे डुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, नाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां)

धातकीखंमना नरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवरे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावरे ॥ नूप पभणे पूत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवरो ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवरो ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नूपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भीम कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें२ ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित भूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शुभापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी च्यवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, भाषे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

(ढाल छठी ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंडक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ महावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ महा निशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंडकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांभणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषभदत्त वली विप्रेरे, हुं० ॥ ब्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि ओषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरी, हुं० ॥ मुज ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्ये, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इग वीर लायक विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोडर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल भवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साढापच्चवीश देश जो, दीपे रे त्यां देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्या रसज्ञर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतुर्विध आवे कोमाकोम जो, त्रिगमु रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां० सुणतां छुंछुन्नि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम लूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवे जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पमे धोषे न्नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे न्नायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिन्नूवननायक लायक तब न्नगवंत जो, आणी रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां कां पमो, उलखो धर्मनां गण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणिउ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पमिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामशे पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वासित पशु पंखिया, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अभ्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

दशी दिन आठ, पखोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढाल त्रीजी) पछी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठ अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनभक्ते देवी शक्ते, थंभाणा ते थापभ्या जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धरया रांकभा जी ॥ २ ॥ पोसहपारी शेठ जुहारी, दयावंत लेइ छूटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूंकावी, शेठे की धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिनडा विश्वानल लागो, सौरीपुरम आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बेठा ॥ लोक कहे सठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा करे जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो भार भलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउ नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय ठठ सो अठम करे जी ॥ बीजा तप पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरे जी ॥ ७॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८॥ कर्म नभियो पापे जभियो, सुर कहे जाउ औषधभणी जी॥ साधु न जाये रोष भरावे, पाटु प्रहारें हणयो मुनि जी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जिनपदगामी, सुव्रत नेम कहे श्यामनें जी ॥ १०॥ (ढाल चोथी) कान पयंपे नेमने ए, धन्य २ यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुझ मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥ ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण हुं न करी सकुं ए, दुष्ट कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजे सीझे काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांभली ए, बांह्य ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाईस जिनवर बारमो ए, आवी चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य पुरंदर रेवताचल मंमणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे राजनगरे संथुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जमियुं पालणुं, रेसम दोरी घूघरी वागे घुमघुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रभुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, वीता बारे चक्री नहि हुवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुझनें दोहलो उपन्यो जे बेसुं गजअंबाडीयें, सिंहासण पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुझने नंदन तादरा तेजनां, ते दिन संभारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ क्षर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छै, तेहथी निश्चय जाणयो जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें भोजाइयो कहो देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोइने लेशे मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ए ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली सूडा मैंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नवरावित्रा, निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वळी तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला ज्ञणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली ज्ञरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मारा वेउं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, माहरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेहुला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिज्झाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संज्ञालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु ज्ञरया रे, केहना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांडीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अरधुं जयवीराय आभवमखंडा सूधी हाथ जोडी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्थुणं कही यावत् चार थोयो कहीये छीये तिहां सूधी बधू कहेवुं, पछी नमोत्थुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं कहेवुं, पछी नमोत्थुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरधुं जयवीअराय आभवमखंडा सूधी कही पछी चैत्यवंदन कही नमोत्थुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांझें देववांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० कही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीऋषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करे ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर ऋषभदेव, सवठथी चवियां ॥ वदि चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तवियां ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दिवसे प्रभु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुभ ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्थुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये छीये ॥ (॥ अथ थोय जोडो प्रारंभ ॥) ऋषभजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषभ लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु काया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

प्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि कमणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगम सूत्र मझार, सिद्धाचले सीधा बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार जिन भेटे थावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी शा सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करे संभाल ॥ गिरुओं जस महिमा संप्रति कालें जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं, जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जो, जगगुरु अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ० ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत भगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जे हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुलमंडणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ ऋषभदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभजिन स्तवनं ॥ पछी जयवीअराय अर्धा कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें मुनि थया,

हिम मदि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासैं ॥ सुरनर जस दास, संप दानो निवाश ॥ गाय नवि गुणरास, जेहना धरी नुल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रन्न जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रन्न जिन आ गमा, चंद्रप्रन्न शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि बारसैं जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण वदनी सातमें, केवल निराबाध ॥ नाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजे, नय कहै जिनअन्निधान ॥ २ ॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ ॥ शुन्न नरगति पामी, नयमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रन्न नाम स्वामी ॥ मुक अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति अनुगामी, तेहने पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्फदंत ॥ फागुण वदि नवमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शुदि नवमी नाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ सुविधि जिन नदंत, नाम वलि पुष्फदंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म दुरंत, लब्धि लीला वरंत ॥ नव जलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, आणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली पर सिद्ध ॥ वदि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन राजथी, सीके सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारम्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम हैं नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, देतु दुःस्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥
॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी च्व्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठे, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अक्षयअनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ सवि जिन अवतंस, जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतभय विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥ माह शुदि बीजे केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ ३ ॥
॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीजयादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जल गुण अवदात, शीत जाणे निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजें जणया, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोय प्रारभ्यते ॥ विमल२ थावे, वंदतां दुख जावे ॥ नव निधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुयर लंछन कावे, शोभि अरस्वेद थावे ॥ मनु विनति जणावे, स्वामिनु ध्यान ध्यावे ॥ १ इति॥

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥ वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमाए, कीधा दु ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ अनंत जिन नमीजे, कर्मनी कोटि छीजे ॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज मोह दीजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुज मन अति रीजे, स्वामिनुं कार्य सीजे ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाही उजली, लिये संजमभार ॥ पोषिपूनमें केवली, गुणना भंडार ॥ जेठी पांचम उजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांह भीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने, सवठथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जणया, दुःखदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥ केवल उज्जल पोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवडा ए, शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सत्र नय ईति वारी ॥ सहस चनसठि नारी, चन्नद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वालियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, झंझ्यो पण तुम्हें नवि झंझाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं भेद न लावो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समझे, पण गौरु दीधाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति सांची मनमांहे आणयो, सहज स्वभावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजे ॥ सा० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अरकयभाव निधी तुम पाश, आपी दासनें पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

ध्याई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्य-
वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सव्वठ्ठथी चविया ॥ वदि
चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणाया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,
लीये संजमन्नार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प
म्हिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल गण ॥ छठा चक्री जय
करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥
जिन कुंथु दयाला, गग लंछन सुहाला ॥ जश गुण शुन्नमाला,
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति न्नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला
॥ त्रिन्नुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया,
फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमी
जें ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल
बारसें, केवलगुण वरिड ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद
लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीनें नमूं, नय कहे जोम्ही हाथ ॥१८
॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारुं, क
र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संन्नारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ छत्त ज
यजयकारूं, प्रात संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥
चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्या
रसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥
फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर
नीलमा ए, नगरीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणन्नूपपद, न्नव
जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥
जिन मल्ली महिला, वान छे जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री
पणे नाम पीला ॥ डुस्मन सवि पीठ्या, स्वामि जो छे वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १ए ॥ इति मल्लि
स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा
जितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारकी,
थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥
फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण ऊ-
जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरनां-
यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्र
तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुझ अंतरजामी कामदाता अका-
मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी
राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै
त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रा
वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ
नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल
धार ॥ वदि दशमी वैशाखनो ए, अक्षय अनंता सुरक ॥ नय कहे
श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःख ॥१॥ ॥ अथ थोय प्रा
रभ्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्व छानो ॥ सुत वप्रा मानो,
पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंन्न छे जे कृपानो ॥ स
वि त्रुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीने
मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, कार्ती वदि
बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण
शुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी
आठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिष्ठनेमी अणपरणीया ए,
राजमतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥
॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ गया शस्त्रागारे,
निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, त्रिश्व कंप्यो तिवारे ॥

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचा
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरू धातकीखंरू,
सुरनर सारे सेव ॥ अरू पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज्ञ
वजलनिधिने तारे ॥कोहादिक मोटा, मच्छतणा ज्ञय वारे ॥ जिहां
जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ ज्ञवि ज्ञाव धरीनें चित्त करीनें
चाख्यो ॥३॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विरूारे ॥ समकित
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज्ञ
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ अथ स्तवन प्रारंज्ञ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ
रूीयां, दो घरूीयां दो चार घरूीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिरा
ण शिवादेवी जाया, तुमें गे आधार अरूवरूियां ॥ रहो० १ ॥ ना-
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चरूियां ॥ रहो०
२॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गेरू दीए पशु पंखी चिरूियां
॥ रहो० ३ ॥ गोद विगाउं में बली जाउं, करुं वीनती चरणे प
रूियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरू, न गमे
स्वपनमें सेजरूियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन,
वारूी वन घर सेरूियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट ज्ञवांतर नेह निज्ञाव
त, नवमें ज्ञव ते वीगरूीयां ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी
सुणीने, राजुल रेवतगिर चरूियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज
शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलरूियां ॥ रहो० ९ ॥ जादव
वंश विज्ञुषण नेमजी, राजुल मीगी वेलरूियां ॥ रहो० १० ज्ञान
विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखरूीयां ॥ रहो०
११ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥
॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदि दशमी ज-

नम, त्रिभुवन सुख पावा ॥ पोष वदि इग्यारसें, ग्रहे मुनिवर पंथ ॥ कमगासुर-उपसर्गनो, टाल्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथद दिनें ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख जरपूर ॥२३॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विफारे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोम्मि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुजव लय लावे, केवलज्ञान पावै ॥ पट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर जाण, श्रीनिवासादि गण ॥ २ ॥ दशविधि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत प्रकार, पच्चरकाणादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जया जिहा उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदष्टी कृपाला, नयविमल विशाला, ज्ञान लच्छी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंज्न ॥ ॥ थारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छोगलो मारूजी ॥ प्रजु पास जिनेसर जुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेसर, धीरमसंदिर जूधरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तूं अक्रय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ पट् दर्शन जासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद्वाद विशालें सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेद नही त-

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सह्री ए नमो जिणाणं) २ (ए आकणी) त्रिहुंतेर लख सगकोमि नवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, लगल ६ बिंब परिमाणं ॥ सह्री० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वरकारा कंचन, यमक कुंम इह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगणयासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, त्र्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अम शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्ध्वलोकें, जिन प- मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ए ॥ त्रिभुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लख वसें ब्यासी ॥ आठ कोमि अग्र प्रतिमा संख्या, सु णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश कोमी, तेम अगवन्न लखा ॥ छत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सन्ना तिहां साठ वधारो, एकश त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषन्न चंड्रानन नें वर्धमान, वा रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर नावना नावे, समकि तगुण दीपावे ॥ परित्त संसार करी शिव जावे ॥ कुमति ते मन नावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादि क बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रज्जु नाम जपंता, लहिये कोमि कल्या ण ॥ मनह मनोरथ सगला सीऊे, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ ज्ञयहर ज्ञगवंताणं जयज्ञुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही एं नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ १० ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग स्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउस ग्ग पारी पढी चार थोयो कहेवी ते लखिये थिये ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ रुपज्ञदवे नमुं गुण निर्मला, ज्ञुध मांहे जिम ज्ञेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार वे, ज्ञव२ सुऊने चित्ते रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हते विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगें, जिन पमिमा प्रणमुं नित ऊगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ ज्ञविक देह सदा पावन करे, ज्ञुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्जुताये दीपता, ज्ञुरित ज्ञुष्टतणा ज्ञय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा श्वत जिनस्तुति ॥

॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांज्ञले ॥ पढी सर्वे जण काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥ पढी बेसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पढी सर्व जण मुखथकी आवी रीते कहे—श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीका यनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेंद्रायनमः ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३ श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः १६ श्रीसूरनगिरयेनमः १७ श्रीकैलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनमः १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये छिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलडी रायणतरूतले, साहेलडियां ॥ पीलडा प्रनुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइयें, सा० ॥ एहीज मुग ति ऊपाय ॥ गु० १ ॥ शीतल छायाये वैसीये, सा० ॥ रातमो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे नवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अन्नंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ नवर तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाछे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने उछाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु नाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाए कामें० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव०॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख लंछन गुणखाण के अंजन वान छे हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परणया विणुअ छे हो० प० ॥ १ ॥ तूंहीज जीवन प्राण के आतमराम छे हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम छे हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो० नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जोत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरे हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह उदास एली धरे हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्मे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धीर महाव्रत उच्चरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ नवांतर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमनार पहोचाडी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुणया हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥ तुह्मे तो दीधा छेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिजे मुझ शिर हाथ हेवे जम संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नहीं हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोडा होमे सही हो० घो० ॥६॥ सबला साथे प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी जे थोडी किहां जाश्ये वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते भीड न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल मुख पूर मलीनें कीजीये होला० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥

॥ आवो आवोनें राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइये ॥ श्रीजिनवरनी भक्ति करीनें, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसमवर, कंठे टोडर ठवियें ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग वसही, श्रीनेमीसर नमियें ॥ राजीमतीवर नयणे निरखो, दुःख दो हग सवि गमियें ॥ आ० ॥ २॥ सिद्धाचल श्रीऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरियें ॥ ओ दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्तधरियें ॥ आ० ३ ॥ मंडप मंडप विविधि कोरणी, निरखी हियडै ठरियें ॥ श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरभव सफलो करियें ॥ आ० ४ ॥ अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभकरम सब हरियें ॥ पाश शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे चढतां भुजम वाधै, जेम घोडे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी केशर, पापपडल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुनें ध्यातां, मनमांहे नवि डरियें, ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपशायें, सकल संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पुष्पक नामें विमाने बैठी, मंदोदरी सुहाया ॥ १॥ श्रीजिन पूजियें लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजै ॥ हीयडै हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ (आंकणी) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बैठा ॥ चउदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरव दिशि दोय जिण ॥ श्री० २

॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उ त्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैरा सिंदतणे आकारे, जिनहर भरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत थापीनें, जग ज शवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत वजावै ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥ श्री० ५ ॥ भक्तिभावें एम नाटक करतां, तूटी तंत विचाले ॥ सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥ द्रव्य भावथुं भक्ति न खंमी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर- तरु फल पामीनें, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें भ विजन जे जिन आगें, बहुपरे भावनाभावें ॥ ज्ञानविमल गुण ते हना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि भेटीये रे, मटवा भवना पास ॥ आत मसुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ भवियां सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ भवि० से० १ ॥ (आंक णी) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश ती र्थंकर शिव वरया रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ भ० से० २ ॥ सि द्धक्षेत्र मांहे वस्या रे, भाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप- मांहे रे, दोय नय भजुजीना सार रे ॥ भ० से० ३ ॥ आगमवचन वि चारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ भ० से० ४ ॥ जयरआयतणी परें, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदुःखने देइ अंजली रे, आर्वे सिद्धवधूनो संग रे ॥ भ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भवहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ भ० से० ६ ॥ जेह समें समकित थयो रे, तेह समये दोय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु न्नाखियो रे, आवश्यकन्नाष्यनी वाण रे ॥ न्न० से० ॥ ७ ॥ इति चौमासी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरन्नेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोछव कीजै जी ॥ ढोल दमामा न्नेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल न्नावना न्नावी, मानवन्नव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण पूरब पुन्यें, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय करीनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वमाकछपनो अठ करीनें, वीरवखाण सुणीजे जी ॥ पमवानें दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहियें, जो शुन्न न्नावे रहिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कछ्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, ऋषन्न चरित्र सुणीजैजो ॥ ३ ॥ बारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पमिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवामी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन सामीवछल, कीजै अधिक वमाई जी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू न्नली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोरणथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पदमणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नाव्यो पीउ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख देण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पड़े हो लाल, प्रीउ संग पोढ़े नारी ॥ प्रीतम विण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो लाल, पाश नही भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चांदणी रे लाल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनें वालम विना रे लाल, रोवत जावे रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोम लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछे मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, झनमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झरला- ड ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण विहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ काली कालाहण मिली हो लाल, झाड़चढै वर खेत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसू झरे हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछी साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती हठ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ संहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतझी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु झपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद भणो थो करि दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगे, हांरे जिन आगे रे जिन आगे, हांरे ए तो अविचल सुखड़ा मागे, हांरे नाभीनंदन पाश ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके, हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवनना घूघरी घमके, हांरे लेती फूदड़ी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशली डफ वीणा, हांरे रूड़ा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां, हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरव पून्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हूं तुं तारो, हांरे भवोभवना दुखड़ा वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखिउ करजो, हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणीरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुभमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोर पुरहुंतो हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी यादुराय ॥ हसतो तो सिणगार्या हो नेमीसर साहिब थे भला, घोड़लांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाड़ो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ फेरो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

यो, ए पशु वांध्या वै किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे वे महाराज ॥ ५ ॥ थोंमा तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव वंध्याने हो नेमीसर साहिब गोंम्या, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणो राजुल हो नेमीसर साहिब गोंमने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो फूरे हो नेमीसर साहिब एकली, जल विन मछली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहिबें गोंमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो राजुल दुःख मत करो, एतो कालो वै जरतार ॥ पाछो तो राजुल जापे हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ए ॥ राजुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परिवार ॥ गिरनारे चढतां हो सव आगे पाछै नीकल्यां, एकली रही वै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अतिघणा, जोज्या वै सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरनो जणकार ॥ जणका तो सुणिया हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोलो वै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहे सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ वोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानें वोम्यो वे नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांमना, ऊलटी करे नांखे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाछो नहीं जखे, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, हुं वमा जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम माहरे ऊपरां, तो पमस्यो थे नरक मऊार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती छै प्रभु दरबार ॥ १६ ॥ राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो संजमभार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती है मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आगलै, मिलिया है मुगति मझार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रभूजी ॥ अविचल थानक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रभूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया आतम काज प्रभूजी ॥ छूटा संसारना दुख थकी, रहवानो किहां ठाम प्रभूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने ऊपरे, तेहना बार नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाडी विचै, वेरू माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार मोतीतणा, गोदुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली अतिघणी, उलटो छत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दीपती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसुं जाई अड्या, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ॥ वैरी नहीं मित्री नही, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गो-
तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥
शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो
गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥
॥शि० १०॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही उजाड हो गोतम ॥
काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि०
११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम
॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वडाई वास हो गोतम ॥
शि० १२ ॥ अनंता सुखमें झिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो
गोतम ॥ सहु कोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो
गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्द मुगते गया, वली अनंता जाय
हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो
तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित छै, केवलदर्शन खास हो
गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवे उदास हो गोतम ॥
शि० १५ ॥ सिद्दस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥
शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०
१६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल
वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वडेरो॥१॥
नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धे समृद्धे अलकानें जीपे॥ राजा समुद्र
विजे शिवादे राणी ॥ सीले रूपे कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥
तिहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले छै बाथो ॥ आणंद
घणें वसंत आयो, कुली बत्तीसें फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा
साहु चलिया गोपालो ॥ डफ चंग वाजे रंगे गुलालो ॥ रुखमणी

राणी राधा सतभामा, बीजाही गोपी मिलरे रामा ॥ ४ ॥ नेमनाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥ राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई, जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुंगलने भेरी सखरी सफाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरो जी गावे गीत रसाला ॥ रथ वहले वाजै घूघरमाला, मदभरता मेंगल भाकभमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला भी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग भराई ॥ सीस फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भाले टीकोजो सोहै, अणियाली आंख्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवेसर मोती भलके भलेरा ॥९॥ दाभिमकुलियां दांत वत्तीसे, वदनी बोलै सार बत्तीसै ॥ डुलभी तिलभी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूभे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू पेंकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ झांझरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपैं सुंदर हालंती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गर काब कीधी ॥ फाबंते कपभै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां तिण विचालो ॥ इण विधसु पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोभजी ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागे भिलिया छै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही जानी नूपति भलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजाभै, जातां कालनें भाल पछाभै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता सुरपतिसु जोर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ बुभाभा, अण-

परणया नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग२ संसार मायाजंजालो, जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥

प्रह ऊठी रे पंच परमेष्ठि सदा नमूं, मनसूवे रे तेहने चरणे नित नमूं ॥ धुर तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणिये, आचारज रे उपा-ध्याय मन आणिये ॥ (उल्लालो) आणिये निज मन भाव शुद्धे, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कच्छदेसै रे विजय-सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणे रे एहवो निश्चे मन कियो ॥ (उल्लालो) मन कियो एहवो तेण निश्चे पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टालस्युं ॥ इकअठे सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म-जोगे रे मांहोमांहे विहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुओ विवाह सुहाम-णो ॥ तब विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक-पहुती पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संभरी ॥ मुझ शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पालो शुक्ल पक्षे हुं भोग भोगविस्युं पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इ[illegible] शांभल रे वि-

गांव ॥ भृगूपुरोहित धन तज नीसरचो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गाभो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घणोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भृगू जसा तिणें मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोडी ऋद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोडी कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे ऋद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७ ॥ ए ऋद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भृगूप्रोहित ऋद्धि तज नीसरचो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संकलपियोडो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूठो लेतां नावै आंने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निश्चे तो मरणो राजा इक दिने, छोडीनें काम विशेष ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंडारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमें थाय ॥ सांभल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं भाषैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी झोलो लागियो, का काई कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करडा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोइ कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो नृपाल ॥ सांभल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहे, इसमी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवे नही; तूं बैठो छे घर मांय ॥ सांभल हे राणी० १५ ॥ छत्तरवाली तो दीसे नही, इसमी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोडीने नीसरी, थे पिण छोडो हो नृपाल ॥ सांभल हो राजा आग्या देवो तो संजम आदरुं॥१६॥ रतन जडतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पडियो फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिने पामु आणंद ॥ सांभल हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोडनें, आरंभ धनलुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मझै, हिरण ससा वले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमांहे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा भांगा लग रह्या १९ ॥ मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुसमन तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥ सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोभी मूरख थका, मुरछ रह्या भोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेते नही, लागी राग द्वेषरी लाय ॥ सांभल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमें, नर पासे पंखी पडियो आय ॥ आमिष सम भोग छोडनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांभल रे प्राणी संयमथी सुख पामिये २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छे, ते पाम्या छे आपणे हाथ ॥ कामभोगमें रकत होय रह्या, ते तज होय सांनाथ ॥ सांभलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा भोग छोडने, द्रव्य भावे हलक थाय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं ज्ञोग जाणज्यो, ए काम बधारै संसार ॥ साप ज्युं मोर थकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार ॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिण२ खूटै आजखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ ॥ हस्ती ज्युं बंधण तोडनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम लियां, सुणो कहुं हुं महाराय ॥ सांभल हो रा० सं० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोडीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सास्यां काज ॥ सांभल हो राणी सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडके, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमराली परे करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छे, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव ॥ छएजणा थोडा कालमें, मुगति बिराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० स० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बेठी बाँरे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वडो; मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहुको तुमें, कुण छे मुज समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पडुर दातारनो, ले सहु कोइ नाम ॥ दीधांरी देवल चढे, सीधे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरने पारणे, कुण करस्ये मुज होड ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोडि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करुं, मुज मोटी छे वात ॥ कुण२ दानथकी तिरया, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुजनें अभिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो, मुज सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पडिलाभ्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहे, ते तो मुज उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पडिलाभ्यो ऋषिराय ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे, दानतणें सुपसाय ल-लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो, ते पण मुज फल जाण ल-लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उडदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा०॥ ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलडी-रस वहराविये, पाम्यो भवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-नबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रव त्तिपणें, प्रगट्यो पुन्य पडूर ललना ॥ दा० ९ ॥ गजभव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अवतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में उधरया, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दान तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आमंबर आठै पहुर, याचकसुं विवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि तादरै, भोगकरम संसार ॥ जिनवर कर नीचो करै, तुझने पमो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठै सहु कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सहु टले, शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करै, शील वमो वेराग ॥५॥ शीलै सर्प न आभमै, शीलें शीतल आग॥ शीलै अरि करी केसरी, भय जावै सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, मैं ओधव्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै जग हूं वमो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लो कनें, मैं दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद मैं सीझव्या, मुझ जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिरया बैरखा, शंखराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते मैं नवपल्लव कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदे घर आणी रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, मैं पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी० ४ ॥ चंपाबार उघाडिया, वली चालणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, मैं तसु कीधी भीरो रे ॥ शी० ५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

में कियो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, थ्र वतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध में करी, वली धरम काज आरंन्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट किया, में अष्टोत्तरसो वारो रे ॥ पांमवनारी द्रौपदी, में राखो मा-मजारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ९ ॥ इत्यादिक में ऊधरचा, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥ तप बोल्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं किसुं, सांन्नल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा न्नोजन तें तज्या, जगमें मीठा नाद ॥ देहतणी शोन्ना तजी, तुऊमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूम कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरे, वंमी सहु संसार ॥ आप एक तूं न्नांजतो, बीजा न्नांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोमवा, न्नांजु नवनय नीम ॥ अरिहंत मुऊने आदरे, वरस बम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरे, मुऊ लवधे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे उपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजे, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामसो, देशो मुऊ सावास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण नव ऊधरचो, मूक्यो मुगति मकार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप सरखो जग को नही, तप करे कर्मनूं सूम हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूम हो सुंदर ॥ त० २ ॥
सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन
माली में ऊधरयो, ठेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषे
णनें में कियो, स्त्रीवल्लन्न वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अतेजरी,
सुख न्नोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ
णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में
कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, ला
ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति
अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन
चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूऊव्ये, तिण मुऊ अधिव
जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अ
णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिका
हो सुंदर ॥ त० ८॥ कृष्ण नरेसर आगलै, ऊक्करकारक एह हो सु
दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर॥ त०
ए॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर॥वृष्टि करी सोव
नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १०॥ इम बलन्नद्र प्रमुख
बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रन्नु वीरजी,
पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ ॥ दूहा ॥ न्नाव कहे
तप तूं किसुं, ठेरूथुं करे कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कणमां
खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें वाढ्यो सवि देश ॥
अशुन्न नियाणो तूं करै, कमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन
ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियौ
द्वारिका दाह ॥३॥ दान शील तप सांन्नलो, म करो फूठ गुमान॥
लोक सहूको साख दे, धर्मे न्नाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक बो
लिएहे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सरे नहि कोइनुं, न्नाव न्नणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसवंति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विध२कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तार्या बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥ (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रसन्नचंद ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततखिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुझ परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एलापूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुझनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गछनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसभणी रे, दीधी गौतम दिख्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुझ मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी छोड्व्या रे, आपे मुझ आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतां रे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरें रे, देखी पुत्रनी रुद्धि ॥ मुऊनें मनमांहे धस्यो रे, ततखिण पामी सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगे रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामें देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रज्जु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गता नामे नार ॥ कालधर्म विचमां करी रे, पोहती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोज्ञा कारमी रे, रूप किसुं अज्जिमान ॥ ज्जरत आरीलाज्जुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढज्जूति कलानिलो रे, प्र गट्यो ज्जरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल म-साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज्ज ऊाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांज्जल पृथवीचंद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में ऊधस्या रे, मूंक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रज्जु वीरजी रे, मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें सांज्जलो, दान शील तप ज्जाव ॥ निंदा छे अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंम ज्जरा-य ॥ वेढ राऊ वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-रिखो पापीयो, ज्जूंमो कोइय न दिठ ॥ वलि चंमाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो, सहुको ज्जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको ज्जाव छे, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें ज्जला, पण ज्जाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजतां, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज कादतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ ज्ञगवंत इव ज्ञंजण ज्ञणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध धर्म ज्ञणंत ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम ज्ञणे रे, बैठी परखदा वार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो ज्ञव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, ज्ञवियण सांज्ञलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजे रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ डुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखे श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति ज्ञूलो ज्ञवि ज्ञर्म रे ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे है जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे बासठ समे रे, सांगानेर मझार, पद्मप्रज्ञु सुपसाउले रे, एह ज्ञण्यो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गछ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मुणींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ समयसुंदर वाचक ज्ञणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ ज्ञणतां गुणतां ज्ञावसुं रे, रुद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति दान शील तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधनें मनथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ उठाही ॥ ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो ठो, जैनमार्ग ठेमी जुला कां नमो ठो ॥ २ ॥ अलोजी अमानी निरागी तजो ठो, सलोजी समानी सरागी जजो ठो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुं रमो ठो, नदीगंग मुकी गलीमां पमो ठो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंरुमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेठे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांस जक्षी महा विक्राला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे, केइ रुद्रणी ठागनो जोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोजना थोकनो पार नाव्यो, तदा मथनो विंडुत मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीम ते केम जाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता जजो मोक्षदाता, अलोजी प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ रत्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेठे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमेठे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शूरवीरं ॥ ए ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोड़वान किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां ठागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूमवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्टसुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंज रोसो, सजो पुण्य पोसी जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रभु परमरागी, जवफेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी छै एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनशासन सार ॥ निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अरुसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सेंमुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समर्‌यां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु जाषित सार, सोजवियां मन शुद्धसें, नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कुमरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे ज वनो पार ॥ सो जवियां जत्ते चोखे चित्ते नित जपिये नवकार॥५ ॥ बांधी वडसाखा छींके बैसी हेठल कुंरुहुताश, तस्करने वलि मं त्र समर्प्यो श्रावक उड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष धर विष टाले ढाले अमृतधार॥ सो० ६॥ वीजोरा कारण राय महा बल व्यंतर डुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्र तिबोध ॥ नवलाख जपंता थाये जिनवर एहवो छे अधिकार ॥ सो० ७ ॥ पल्लीपति सीखग्गो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध, परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगे श्रीपासकुमारे पन्नग अधबलतो

ते टाले ॥ संन्नलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रन्नुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्युं नंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थावै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णन्नुजंगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रन्नावे हारफूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पाम्री बाण प्रहार, पद पंच सुणंता पांमुपतघर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर न्नवदुख न्नंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम न्नाखै न्नगवंत ॥ पूरबदिसि चारें आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कगेर, पुंमरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रूद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्ठी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित्य जपिये नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य न्नणीजे, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्तै आराधता ऋद्धिसिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स थुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आग निकाल्या नाग, किया वरूनाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न मद्दा रन वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी छुद्दाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अक्खे कुण तो पक्खे, मेरा हुंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घुग्घरमाला जाण हेमाला, दंत्ताला ओपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलालो झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी पक्खर सझी सक्खर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खम्म रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाम्म फुफाम्म दिखाले लक्कम्म, वम्म फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥ हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन सुतन महाराज विषय सुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रभु अप्रतिबंध विहार कियो तब, रनबन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वह्म असुराणा वली हेराणा, पिछाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार विरोध, महा अभिमान धरंदा हे ॥ वाउल मतवाली नीली काली, वायु महा वाजिंदा हे ॥ ए ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट, दिवाकर तेज छिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया थाटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥ हुआ अकाला धुर वरसाला, वीजलिया चोवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी धारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चल्ले जल खाला नदियां नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा हे ॥ ११ ॥ वहे पाहाम्रां झंगी झाम्रां, सझाम्रां ढाहंदा हे ॥ सम ढाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूठा जाण कि रुठा, ऊठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, काउ स्सग्ग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसग्गाहंदी केल करंदी, पाछा नांहि मुरंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान धरंदा हे ॥ प्रभु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुत्तंदा हे ॥ देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमावत्ती देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना, पावां आय लगंदा है ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस्तारा, छत्तर ज्यूं ठावंदा है ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरव प्रीत सुखंदा है ॥ इंद्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिलकंदा है ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सोहंदा है ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा है ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा है ॥ उढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा है ॥ १६ ॥ उर कंचु कसिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा है ॥ पहिरण तन खूबा हरिया दूबा, सोलेही सोहंदा है ॥ कटिमेखल कसियां सोने जड़ियां, हीरा बीच हलकंदा है ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां, पग नेवर रणकंदा है ॥ ले झांझर ताला ताल कंसाला, पखावज वाजंदा है ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा है ॥ वाजे सरणाई लहरी धाई, नगारा रोसंदा है ॥ १८ ॥ पदमा वैरुट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा है ॥ तत्ताथेइ२ तान तरूरा, रस भेद रमंदा है ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पावस जल पसरंदा है ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ध्यान पिछाण्या, कमठासुर कोपंदा है ॥ नागादी पत्ती आंख्या रत्ती, किती रीस आवंदा है ॥ रे मुग्ध धिग चित्त विणट्ठा, क्यूं नांही समझंदा है ॥ साहिब बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा है ॥ २० ॥ ए क्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा है ॥ असमांन खमाई रीस भराई, हिक्काइ वजरंदा है ॥ किती वहु गल्लां पभै दहल्लां, धमहरू देह धुजंदा है ॥ धरणेंद्र डराया तब ते आया, पावां आय लगंदा है ॥ २१ ॥ कर जोड़ि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा है ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा है ॥ तैं रीस न धरियां किणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा है ॥

कमगासुर कित्ती बहु विनत्ती, निज अपराध खमंदा हे ॥ २१ ॥ सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर चढके ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरत्ती जग ऊपत्ती, पार न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखके भेद परखके, गुमानी मो रूंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्ला पीर फकीर मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद अ टल्लां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तैंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मुलकंदा हे ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ वावागोसांई भेद न पाई, भीरू पज्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरायण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा देवंदा हे ॥ तूं एकां अप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध आपंदा हे ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंदा हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, ऊणे सुर गावंदा हे ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेभा धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला हंदा, टोरूर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां भरीया ढाबां, परमल तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फाबंदा हे ॥ आभूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंडल कान झिगंदा हे ॥ २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि जाउं मोजां पाउं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कत्थूं ग ल्लां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा रहासा, तुऊ सेवक विलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणो पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीलाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगें पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥ १ ॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला ॥ सुपसायें गुरु चढती कला, सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थायें सवला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करे मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर निसाण घुरै, नर बे दरबार खडा पुहरे ॥ जय२ करजोडी उचरे, ता निद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, डुख रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल उलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम माद्दल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप इमें, सवला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरे वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुर मंदिर भरे धनें ॥ ७ ॥ ततखण घण खंच्यो आवे, करि स्यामघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजश गावे ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करे, प्रवहण भवसायर मझ फरे ॥ बूडता वाहण जे समरे, ते आपद निश्चेसुं उवरे ॥ ९ ॥ खडखड खडग प्रहार वहे, सो दामनि जिम समसेल सहे ॥ कुशल२ गुरु नाम कहे, ते खेमकुशल रिण मझ लहे ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचा पूरे, श्रीनाग पुरे संकट चूरे ॥ मंगलोर अधिके नूरे, देरावर भय टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खंभायतपुर विक्रमनयरे ॥ जिणचंद सूर पाटे पवरे, जसु कीरति महीमंडल पसरे ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम दक्षण आगे, उत्तर गुरु दीपे शोभागे ॥ दहदिशि जन सेवा मांगे,

श्रीखरतरगछनी महिमा जागै ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद ठामें, गाईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजननें सुखिया राखै ॥ समर्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक भाखै ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी डुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥ शुभ्र मंगल लील विलाश सदा, डुख रोर डुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश बावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न पड़े वीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छलवलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या बेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ वड़नगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंभो दोय खंड़ कियो, पोथी परगट परभाव थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सफियो, वर नयर उजेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंबड़ वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहड़दे कूखें जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ९ ॥ इग्यार बत्तीसै जनम भणूं, इग्यार इगताले दिक्ष सुणुं ॥

युगवर इग्यारे गुणइत्तरे, स्वर्गे वारेसे इग्यारे ॥ १० ॥ जिनचन्द्र सूरी पटोधरणं, परभाव उदेसर भयहरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्रीअजमेरे, गढसंभो वर बीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल मेरे, दीपे गुरु गाजीखान केरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा लागे, भावठ दालिद्र दूरे भागे ॥ केरे असमालखानके सोभागे, गुरु पुर२में कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरनवन पूजा जेह करे ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरे, कवि सूरि उदय जिनकीरति करे ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद कुलांवर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल सवियाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम ॥ जिहां वसै जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जन्म, सेताले सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि माने सोय, में नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण पामें वहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते वंभि नवि मंभै व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागे तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी छांह, निश्चे दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ तिसइर

विसनरै विस नरनाह, भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रभु नामें ते न वैरै पीम, भाजै भावठ भवभय भीम ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंमित थाय, प्रभु पसाय छुख छुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन ज-द्योत, जिहांअछै भवसायर पोत ॥ सो सदगुरु मैं भेट्यो आज, रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, ऊदयो पर-मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्ने गिणियो, जुगपवरागम जो मैं थुणियो, चंद्रगछ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥१४॥ वार२ एक चित्त भणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी बरसै, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर भुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम२ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर ऊवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदै, ऋद्धि समृद्धे सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुऊ हुवो ए ॥ १ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ आश घरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी विरियां आयवणी, केहवी करियै तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा वे तो वेगा आवो, हिव ढील घणीभर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गछ साचो, कोइय न जाणे तुऊने काचो ॥ इण संक टमें आलश म करो, दादा छुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक परी सदगुरु हमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

थे मत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब श्रीसंघ अठा लगै, पाछा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी; हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले उजवालो, परघल निज छोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गम्माथे ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली; जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे सांभलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध करो, पूरो मनहं जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अनेक हो ॥ थां समरथां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥ सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामांहे बीजली, वलीर झबकाय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उछव करतां उच्चमें, मूंठ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, संघ मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वडनगररे ब्राह्मणें, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूर कीया तें सहू दुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबरू हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, उजेणीमांहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छे तादरा, कहतां नावे पार हो ॥ भागसंजोगे दादो भेटियो, अम्हवडियां आधार हो ॥ दो० १०

॥१०॥ हुं हूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो ॥ कनककीरत सुपसावलै, लाभनदय सुख सिद्ध हो ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरयां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु ज्ञाता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो परचा जग सगले पूरै, दादो दुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, दादाजीनी जोरू कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो गेगाणां सेहर गाजै, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरू घोली, हाथे लेइ सोवन कचोली, पूजो दादाजीनें मिलश टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत माहाराजा, दादो राजै खरतर गछ राजा, दादो समरयां सफल करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन गहगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीड़ा दुख हरियै, दादा जिम जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवाने सानिध करज्यो, दादा दुसमणनैं दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंछित फलज्यो ॥ दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥

पुनः गाजै जिनकुशल गभालै, सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै, सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ ग्तरीनितरी नबि गाजै, विचमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवे, दादोजी दीर्ग सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकुजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ए ॥ अलगांथी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित पावे हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावे गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजाले, पीमा हुवे आलेमाले हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजे जग जशना बाजा, राजे खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिल्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासे, अधिके हर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरू ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगट्यो, खरतर गछ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिद्र दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन२ साहिब चढते वाने, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ बाजे जेहना जशना बाजा, गावी गामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमे अमसठे, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमाले चरण नमंता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जो, समरंता दादोजी

शा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी न्नात करो मेरे सदगुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलन्नर पीजै ॥ सुरतरु शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥ परमन्नगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो न्नरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरयां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुन्न हरण न्नये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सद्गुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल न्नेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोन्नता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गरूाले दीपता, ज्यांरी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरयां संकट चूरता, कुशल करण अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गछ अधिकारी हे माय ॥ स० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू, ठम२ पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोन्नावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ बिछड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवै, परघल लखमी ल्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वेला वाटमें, समरयां सानिध आवे हे माय ॥ न्नूखां न्नोजन मेलवै, तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवे नित नवां,

थान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामग्री, गावै गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै, नवि मिल जावना जावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमें, परमानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीसदगुरुजीसें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अरज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सुधकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणकमल वलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट डुख मेटो, सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवे, अतर गुलाब केवमो ध्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी डुस्मन चूरे ॥ धन२ सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठावन वरसे, कातीपूनम दिन जलसे ॥ गच्छपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजे, अपणो दास मुकै समझीजे ॥ जगमें सुरतरु सारखो रे, कीरति वारही थारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें वरणाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशलसूरिंद धणी रे, कहै रामऋद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ ॥ चाल जरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गच्छपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, डुखतमहारण दिनमणी ॥ १ ॥ गंढ सवियाणे जी देश, गाजेम कुल नदयाचले ॥ जिल्लासाह पितेश, जैतसिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गच्छपति चंदमुणिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्रकाशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पत्तन सब देश, झिगमिग ज्योती जी

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुशलसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर, देश देशांतर कांइ भमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अनय महा सुख संपति पामो, सुथिर थानक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, छनि थांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्मारा राज दादेरे दरबार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन रायचंपेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगूलियांनें पांव समापै, आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणांने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थांने ओलगे जी, रंग घणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, में मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरचा, आही थांरी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत दुख वेरी ॥ भक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्याऊं, शरण ग्रही में तेरी, दूरथकी में भेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्षमारत्नकी वीनती सुधारे, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित लाय२; जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर; थांनो वज्र विहार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक; गुरु समरयां सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नामसें अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः॥ होरी खेलो भविक सदगुरुके संग, नित आनंद उछव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया; श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत आनंद पिया संग, गोरी गावत बजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें; गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी; छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत भैन दरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित उमंग ॥ हो० ४ इति पद ॥ पुनः ॥नेमस्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणांरी पूज रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी; भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सदानी ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिके साहिब, नंवन

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये बालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद यालकेसनमुख गावै, पढत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥१॥ केशर घोली भरी रे कचोली, पूजत हे वारीभोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाब भर्यो सदगुरुके, अबीर उडावत भरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धन२ भाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकडी मोरी ॥ स० ॥ भवी मनरं जण डुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि तदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामऋद्धिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रभाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल भरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारी, चिंता दूर निवारी ॥ अबकी विरिया भूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, बडा भरोसा भारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, भीमभंजण अति भारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २ ॥ जगवल्लभ तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन चंद मेरे हो सदगुरु, हम हें सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

चारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलभर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एही भांति करूं विध पूजा, आणके चित्त इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरूकी, वेर२ बलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥ जगतमें या शामो कोई, न देख्या नयण भर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंडले गाजे, फरशतां पाप सब भाजे ॥ पूजतां संपदा पावै, अचिंती लक्ष घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजे हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु, मुझ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु० २ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजे हो ॥ कु० ३ ॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजे हो ॥ कु० ४ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरुगुण गावे, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोडने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजे पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नें कुमकुमा जी, कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थांरे घुमटां रे आगल

चूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम नी जी, काई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थांरी गवी ठोड़ थापना जी, काई उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा नली गुरु मेड़ते जी, कांइ सालूड़ेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ वधती गढ वीकाण॥ स० ॥ आसा पूरण आवजो जी, थेलो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतड़ी नले मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख तिहां राजै रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी वलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखालां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन नरिय कचोलो, मांहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु पाया, पूज्यां सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा, थांरे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजे, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई, दीठो मैं परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूड़ेवाली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल तिहां आवै, जिहां दूलियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंद-न गुण गावै, करजोड़ी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीकी लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गछपति साहिबा ॥ ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो वुद्धि विख्याता ॥ सद गुरु महर करीज्यो मुझपर, ज्यूं झिंननकं माता हो ॥ स० ॥ १॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें तं. कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ जरदरियामे ज्याज उगारी, जिन कु रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पा. पतिमर हट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण शोजागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर रणकाती, लिये अलो बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृडु समीर रुणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबा र ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ६ ॥ रुद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावे ॥ जात्री आवे जात्र करणकूं, केशर रंग मचावे हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चने सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाचनि नाद तूर पुन. ऊ लार, करै सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ स्तेप माश प्रतिपत् दिन नेत्या, शुक्ल पक्ष शुज वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र ... दार हो स० ॥१० ॥ सदगुरु धर्मशील परजावे, कुशल होत निरा साय ॥ रुद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील बताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेलयां ... चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्री... नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगच्छना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ मो० ॥ २ ॥ दुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल दे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनम२ जक्ति धरीनें, आवे संघ अपार ॥ केशर चंदन सुगंधद घोली, पूजे विविध प्रकार दे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु ...

सरे, सऊ शोने सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम गम्भालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोजागी, कीरत्त जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अजिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ ऋद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित्त कामगवी ॥ मनसुध साह अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंम्मल सम सूरी, दीपत वदन ववी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंम्मल मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित जयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरीसरु, गुरु गछपति हो, खरतर गच्छ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोगरी कुल दीपता, गुरु गच्छपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत अठार बासठे, गु० जन्म समय वर बार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें, गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता, गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हत्ता नावे पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समें, गु० पायो दवि मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऋतुपती, गु० माघमाश सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणों हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम ऋद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ पर खद वारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करे आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पान थी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविद धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर वरसतारे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसा यथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पुनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजे ॥ थांरी देशना सुण मन रीझे ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमन्डल ऊपर गयो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाकुल देव-

गंधार, वलि भैरव राग मझार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥ पंच सबद गहिर ध्वनि गाजे, जिनवर घर झालर वाजे ॥ सहु सज्ज थया धर्म काजे, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो, श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥ सुणो विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो जाव लोक कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो जविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत पो ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, जर मोतियां थाल वधावै॥ लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जम्माव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गच्छराय हो ॥ श्रीजिनलाज पा टोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोज सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सो जागी, म्हारा शुज गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १॥ सुगुरु म्हारा देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृतवाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० ए ठो अवसर जाण हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण धूर संचरया, सु० विकस्या कमल कलाप हो ॥ राग विलास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार हो ॥ इम बहु विध जूमंकलै, सु० वरत्या जयश्कार हो ॥ म्हा० ४ ॥ संघ सकल जगले करी, सु० जोवै थांरी वाट हो ॥ नीचे पधारो गणपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणे, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो॥म्हा० ६॥ बहु जवियण प्रति-

वूकवें, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु० टाले जवदुख जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण बत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी क्रमाकल्याण हो ॥ म्हा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, जविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरै उरनकूं तारै, शरण तिहारी गहियै ॥ ज० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशें वहियै ॥ ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशें, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गोजन महियै ॥ ज० ॥ वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥ एक असंजम दोय विधि वंधन, त्रिविध दंम परिहरियै ॥ ज० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ षट् काय रक्षक महाजय जीवक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥ रिदयकमल नितप्रति राखीजे, आनंद शिवपद लहियै ॥ ज० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुह्मे वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिपै रे, शोजत तेज समाज ॥ जविजन वंदो रे जावै गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुधरम गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पूरवधर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें परगडा रे, श्रीयशोजद्र मुणिंद ॥ श्रीसंजूतविजय जद्रबाहुजी रे,

श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरु रे, हुवा वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूनले रे, सुरनर नामत शिस ॥ भ० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमान परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गछ चोराशी प्रगट्या तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शीस जिनेश्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो रे, गछपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गछपती रे, श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गछमें थया रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री जिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गंभीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भाव पदारथ अति विस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंमी वांवल आदरे रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए छखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धारक आचारज छे घणा रे, पंचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लावण्यकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख पामसे रे, पातिकनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियमें मेह वरसीयो, सखि आज हुओ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें सौभाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्रांतिगुणे करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छत्तीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना भंडार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी खाण रे ॥ बहु आगमना जे जाण रे, प्रतपे जिम जलहल भाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथे जेहनें शोभता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोइ थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजे तेह त्रि काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गछ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा भरतार रे ॥ जेहनें प्र णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारता, सखि दे ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप भावना, वारे भावन सुविशेष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥सखि० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षण में कर्म समूहनो, सखि निश्चे होवे नाश रे ॥ थाये निज ज्ञान प्र काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुभास रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणंदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चक्खाण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, और जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह है की यह दोनों तिथि बराबर पर्व है, चौदश पर्वदिन है तैसेंइ अमावस पूनम भी चिरंतन पर्वोका दिन है, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करणेके हैं, कारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती है, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क्षय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हैं, उसमें स आदि चंद्रन संवत्सर मिथ्यात्विओने प्रचलित कर रक्खा है, लेकिन सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापैंसठ दिनका होता है, इस वास्ते जैनागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते जो चौदश कम हो तो उपवास तथा पक्की प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क्षय तिथिके वितल्पेको न करे, और जो बेला करे तोहरीगमेंतो दोनों दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य है ॥ अब कोइ वखत संवच्छरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवच्छरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले भी नहि करे, और जो चोथ दो होय तो पहली चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ भी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय है, दूसरी लौकिकतिथि है. दुसरा यह प्रमाण है, साठ घडीकी तिथि छोडके दुसरी घडी अधघडीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो उदयतिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अधघमी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? इस प्रश्नका उत्तर—हे भव्य, जो पहले दिन तिज मानी हे, और तीजके दिन चोथ बहुत घमी भुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घमी अधघमी चोथ होणेसें चोथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय और अस्त दोनोंमें रहेगी, तवतो एसी संपूर्ण तिथिकों छोमके दुसरी थोमीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही. कार्त्तिक माश वढ तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो बढताही नही, अगर वढतो दुसरे फाल्गुणमें चोमासा करे. असाढ दो होवतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ चोमासेकी चौदससें पचास गुणपचासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भादवा आसोज वढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो होयतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससे पचास दिन लांघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीकल्पसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ हे, और जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे वढ महीनाका शुक्ल पक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूण जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पचस्काण नहि करे, यह तिथियोका प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध हे, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखते हे ॥ तिहिपमणेपुवतिही, कायवा

जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चाउद्दसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपडिक्कमणं ॥१॥ तह्वेवपोसहविही, कायव्वासव्वगेहिसुइहेउ ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज म्हानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरोदयपडियायावी, तेरसीहुंतिनप क्खियंकुज्जा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउसमणा ॥ ३ ॥ ति हिवुड्ढीएपुव्वा, गहियापडिपुन्नभोगसंयुत्ता, इयराविप्पाणिज्जा, परं थोवत्तिलउज्झा ॥ ४ ॥ (तसेइ ज्योतिष्करंड पयन्नेमें भी एसाही लिखा हे) ॥ छविसहियानअठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ प डिवेसहियानकयावि, इहनणियावीयरागेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि पायं, कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीछवीनका यव्वा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायवंपक्खियंतुपाएण ॥ चाउद्दसे विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकइवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे तब पहली सामायकदंडक ३ वीर उच्चरके पीछे इरियावही पडिक्कमें, क्योंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीभद्रबाहूस्वामी, श्रीहरिभद्रसूरजी, तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागच्छी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला गच्छी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये ग्रंथोमें पहले करेमिभंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥ तथा श्रीमहावीरस्वामीके छव कल्याणक मान्य हे, इस वातका कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोमें पाठ हे; खरतरगच्छ, तपगच्छ के आचा र्योंने ग्रंथोमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा णके छठा कल्याणक न मानते हे उनोकों डिगंबरकी तरे मल्लि नाथस्वामीकों भी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो भी आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे, डुसरा अपणे मनकल्पितपणेसें न माणनेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कल्याणकादिक पर्वतिथिको करे, लेकिन् जिनापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन कित

सिद्धांतमें भी नही हे, पर्यूसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-रणी एसा बंधाण नही, अधकी भी करे। तथा आंबिलमें एक अन्नद्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन हे इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहिं चाहिये। तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया हे, कारण इस कालमें प्राय स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा हे, तथा श्रावककूं पच्चरकाणमें पाणस्सलेवाका पाठ कहणा युक्त नही, यह पाठ साधूका हे, तथा दिनप्रति एक उपवाश पचरकावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रक्खे, लेकिन पच्चरकाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे। तथा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब विदलकी गिणतीमे हे, इस द्विदलधान्यकूं गोरस दही छाछके साथ भक्षण नहि करे, तथा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन् संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी हे, अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके हे जिसमे सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सूत्रोंके पाठ संयुक्त हे सो अनेकांती बुद्धिवानोने गुरुगमसें देखके धारणा॥ यह खरतरगछमेंसें चोरासी गछ भया हे, जिस वास्ते खरतरगछमें चोरासी नंदि हे, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४ मे निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० को शालमें अणहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालाकूं झात उर क्रिया